हिन्दी साहित्य का इतिहास 1942 तक

COURSE CODE: B21HD02DC

BACHELOR OF ARTS
HINDI LANGUAGE
AND LITERATURE

SELF LEARNING MATERIAL

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

SGOU

हिन्दी साहित्य का इतिहास 1942 तक

Course Code: B21HD02DC

Semester -II

Bachelor of Arts
Hindi Language and Literature
Self Learning Material

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

B21HD02DC

हिन्दी साहित्य का इतिहास 1942 तक

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

ISBN 978-81-962656-3-2

DOCUMENTATION

Academic Committee

Dr. C. Balasubramanian (Chairman),
Dr. Abdul Jabbar M.
Dr. Anish Cyriac
Dr. Antony Oliver
Dr. N. Shaji
Dr. Rajan T.K.
Dr. Roshni R.
Dr. Sreedevi
Dr. Suma S.
Dr. Sumith P.V.
John Panicker

Development of the content

Dr. Lembodharan Pillai B, Dr. Jesna Rehim, Dr. Karthika M.S., Dr. Mini B.

Review

Content : Dr. Sunny M.
Format : Dr. I.G. Shibi
Linguistics : Dr. N. Shaji

Edit

Dr. N. Shaji

Scrutiny

Dr. Vincent B. Netto, Indu G.Das, Dr. Karthika M.S., Dr. Mini B.

Co-ordination

Dr. N.E. Rajeev, Dr. I.G. Shibi and Team SLM

Design Control

Azeem Babu T.A.

Production

March 2023

Copyright

© Sreenarayanaguru Open University 2022

YouTube

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear

I greet all of you with deep delight and great excitement. I welcome you to the Sreenarayanaguru Open University.

Sreenarayanaguru Open University was established in September 2020 as a state initiative for fostering higher education in open and distance mode. We shaped our dreams through a pathway defined by a dictum 'access and quality define equity'. It provides all reasons to us for the celebration of quality in the process of education. I am overwhelmed to let you know that we have resolved not to become ourselves a reason or cause a reason for the dissemination of inferior education. It sets the pace as well as the destination. The name of the University centres around the aura of Sreenarayanaguru, the great renaissance thinker of modern India. His name is a reminder for us to ensure quality in the delivery of all academic endeavours.

Sreenarayanaguru Open University rests on the practical framework of the popularly known "blended format". Learner on distance mode obviously has limitations in getting exposed to the full potential of classroom learning experience. Our pedagogical basket has three entities viz Self Learning Material, Classroom Counselling and Virtual modes. This combination is expected to provide high voltage in learning as well as teaching experiences. Care has been taken to ensure quality endeavours across all the entities.

The University is committed to provide you stimulating learning experience. The UG programme in Hindi Language and Literature is framed on the format generally deployed by the quality universities in the country. Being a grammar spoken across the country, the pedagogy calls for special attention to the language and comprehension. The University addressed this through an integrated curriculum mapping between the linguistic and literary. The proportion gets endorsed on the basis of the priorities of the learner. The SLM and the virtual modules cater to these requirements. We assure you that the university student support services will closely stay with you for the redressal of your grievances during your studentship.

Feel free to write to us about anything that you feel relevant regarding the academic programme.

Wish you the best.

Regards,
Dr. P.M. Mubarak Pasha 21.11.2022

Contents

BLOCK - 01 आधुनिक कविता – विकास के सोपान 01

इकाई : 1 खडी बोली पद्य का विकास 02

इकाई : 2 भारतेन्दु युगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 06

इकाई : 3 भारतेन्दु युगीन प्रमुख कवि - भारतेन्दु, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह, बालकृष्ण भट्ट 10

इकाई : 4 द्विवेदीयुगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 14

इकाई : 5 द्विवेदीयुगीन प्रमुख कवि :अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, मैथिली शरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधर पाठक 18

इकाई : 6 प्रियप्रवास, साकेत, यशोधरा, मिलन, कशमीर सुषमा 21

BLOCK - 02 छायावाद और प्रगतिवाद 25

इकाई : 1 छायावाद–नामकरण और प्रवृत्तियाँ, उद्भव के कारण और परिस्थितियाँ 26

इकाई : 2 छायावाद के प्रमुख कवि- प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, सियाराम शरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', आरसी प्रसाद सिंह, गोपाल सिंह नेपाली 29

इकाई : 3 कामायनी, आंसू, जूही की कली, राम की शक्ति पूजा, सरोजस्मृति, सांध्यगीत, दीपशिखा, प्रथम रश्मि, गुंजन, नौका विहार (सामान्य परिचय) 34

इकाई : 4 प्रगतिवाद - उदय और परिस्थितियाँ - प्रमुख प्रवृत्तियाँ 39

इकाई : 5 प्रगतिवाद के प्रमुख कवि-पन्त, निराला, दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिव मंगल सिंह सुमन 42

इकाई : 6 तोड़ती पत्थर, युगवाणी, हिल्लोल (सामान्य परिचय) 45

BLOCK - 03 भारतेन्दु और हिन्दी गद्य साहित्य 49

इकाई : 1 खड़ीबोली हिन्दी गद्य–उद्‌भव और विकास, हिन्दी के प्रमुख गद्यकार और उनके योगदान 50

इकाई : 2 भारतेन्दु युग में गद्य का विकास और भारतेन्दु मंडल के गद्यकार 54

इकाई : 3 द्विवेदी युग में गद्य का विकास और प्रमुख गद्यकार 60

इकाई : 4 उत्तर द्विवेदी युग में गद्य और गद्यकार.. 64

BLOCK - 04 हिन्दी कथा साहित्य 68

इकाई : 1 हिन्दी उपन्यास साहित्य का उदय 69

इकाई : 2 प्रेमचंद पूर्व उपन्यास- प्रेमचंद युगीन उपन्यास- प्रेमचंदोत्तर उपन्यास साहित्य का विकास। (1942 तक) 72

इकाई : 3 हिन्दी कहानी साहित्य का उदय 75

इकाई : 4 कहानी साहित्य का क्रमिक विकास (1942 तक)... 79

इकाई : 5 प्रमुख उपन्यासकार, कहानीकार और उनके योगदान...................................... 83

BLOCK - 05 नाटक व एकांकी साहित्य 89

इकाई : 1 हिन्दी नाटक का उद्‌भव और विकास 90

इकाई : 2 भारतेंदु युग, प्रसाद युग और प्रसादोत्तर युग के नाटक साहित्य (1942 तक)......... 93

इकाई : 3 एकांकी साहित्य का उद्‌भव और विकास (1942 तक)..................................... 97

इकाई : 4 हिन्दी रंगमंच का उद्‌भव और विकास 1942 तक 100

BLOCK - 06 हिन्दी निबंध तथा अन्य गद्य विधाएँ 104

इकाई : 1 निबंध साहित्य का उद्‌भव और विकास (1942 के तक)................................ 105

इकाई : 2 हिन्दी के प्रमुख निबंधकार 108

इकाई : 3 अन्य गद्य विधाओं का उद्‌भव और विकास(1942 तक) 116

SGOU

BLOCK - 01

आधुनिक कविता – विकास के सोपान

इकाई : 1
खडी बोली पद्य का विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आधुनिक हिन्दी कविता के विकास के सोपान समझता है।
- आधुनिक काल के प्रमुख कवियों के बारे में समझता है।
- कविता के क्षेत्र में खडीबोली भाषा का व्यवहार समझता है।
- प्रमुख खडीबोली पद्य साहित्य का परिचय प्राप्त होता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आधुनिक काल में हिन्दी कविता को अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण विकास प्राप्त होता है। क्योंकि इस काल में हिन्दी साहित्य का बहुमुखी विकास हुआ। इस काल में भारत में कई सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक आन्दोलन हुए, जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दी काव्य में भी नई चेतना और विचार का जन्म हुआ। आधुनिक काल के प्रथम चरण भारतेंदु युग में हिन्दी खडीबोली में काव्य रचना प्रारंभ हो चुकी थी। सन् 1888ई में खडीबोली आन्दोलन नाम से अयोध्या सिंह उपाध्याय ने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसका मुख्य ध्येय खडीबोली को काव्य भाषा के रूप में प्रोत्साहन करना था।

KeyThemes / मुख्य बिन्दु

आधुनिक काल के प्रथम चरण (भारतेन्दु युग) - पद्य भाषा -ब्रजऔर खडीबोली

आधुनिक काल के दूसरा चरण (द्विवेदी युग) - पद्य भाषा के रूप में खडीबोली को अधिक प्रेश्रय मिला।

Discussion / चर्चा

भारतेन्दु युग को हिन्दी कविता का जागरण काल कहा जाता है। इस युग को हिन्दी साहित्य का प्रवेश द्वार माना जाता है। इस युग यहाँ कई महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुई। तब देशोद्धार, राष्ट्रप्रेम, अतीत के गरिमा आदि विषयों की ओर कवियों ने ध्यान दिया। इस काल के अधिकतर कवियों की वाणी में राष्ट्रीयता का स्वर निनादित होने लगा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, चौधरी, बद्रीनारायण प्रेमघन, लाला सीताराम आदि इस काल के प्रमुख रचनाकार हुए।

खडीबोली काव्यरचना हिन्दी साहित्य का महत्वपूर्ण उपलब्धि है। भारतेंदु युग में खडीबोली काव्य का विस्तृत विकास हुआ है। भारतेंदु युगीन हिन्दी खडीबोली का प्रथम कवि किसे माना जाय, इस विषय में मतैक्य संभव नहीं है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सर्व प्रथम भारतमित्र संपादक को सन् 1881 में सर्व प्रथम अपनी तीन खडीबोली की रचनाएँ लिखकर प्रकाशनार्थ भेजी थीं।

हिन्दी खड़ी बोली का काव्य रचना भारतेन्दु युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस भाषागत उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी कविता की गतिविधि लगभग बीस वर्षो तक अवरुद्ध - सी हो गयी थी ।

भारतेन्दु युग के कुछ कवियों ने खडीबोली में भी काव्य रचना की है।

भारतेन्दु (फूलों का गुच्छा)
प्रेमघन (मयंक महिमा)
प्रताप नारायण मिश्र की खडीबोली-कविताएँ
श्रीधर पाठक (एकांत वासी योगी)

बालमुकुंद गुप्त (स्फुट कविता)
राधाकृष्ण दास की कविताएँ

द्विवेदी - युग में मैथलीशरण गुप्त प्रभूती कवियों ने खडीबोली के जो काव्योचित गरिमा प्रदान की, उसकी पृष्ठभूमि का निर्माण भारतेन्दु युग में ही होने लगा था। कारण स्पष्ट था, हिन्दी खड़ी बोली रचना प्रायोगिक स्तर पर थी। इस समय के नवीन प्रयोग कवि शिव प्रसाद सितारे हिंद, बाबू हरिश्चंद्र, बाबू लक्ष्मी प्रसाद, श्रीधर पाठक, नाथूराम शर्मा शंकर, आदि नवीन शैली की खोज में भटकते हुए दृष्टिगत हो रहे थे।

खड़ी बोली आंदोलन के प्रारंभ के संदर्भ में, भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सर्व प्रथम भारत मित्र संपादक को सन् 1881 में सर्व प्रथम आपने तीन खड़ी बोली की कविताएँ लिखकर प्रकाशनार्थ भेजी थीं। भारतेंदु का देहावसान सन् 1885 में हुआ था। उनके देहावसान के एक वर्ष बाद सन् 1880 में खड़ी बोली रचना की दृष्टि से ऐतिहासिक कृति श्रीधर पाठक कृत एकांतवासी योगी प्रकाश में आयी। दस वर्षों के अंतर्गत महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा प्रताप नारायण मिश्र ने खड़ी बोली काव्य रचना का पक्ष लेते हुए इसमें पद्य रचना आरंभ की।

प्रतापनारायण मिश्र - संगीत शाकुन्तल -

शरणागत पाल कृपाल प्रभो! हमको इक आश तुम्हारी है।
तुम्हारे सम दूसर और कोऊ नहिं दीनन को हितकारी ।

खडीबोली काव्य रचना कि दृष्टि से बाबु बालमुकुंद का स्थान नितांत महत्वपूर्ण है। हिन्दी की खडीबोली की काव्य रचना पूर्ण रूपेण प्रायोगिक स्तर की थी। यह प्रयोग छन्द, शिल्पा विधान, रसात्मक आग्रह, प्रांजलता आदि दृष्टियों से संबंधित था। प्रायोगिकता के संबंध होने के कारण शैलिमोह इस समय की खडीबोली कविता की सबसे बडी विशेषता है।

भारतेंदु, प्रताप नारायण मिश्र, श्रीधर पाठक, बालमुकुंद गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि खडीबोली हिन्दी के सशक्त कवियाँ है।

प्रतापनारायण मिश्र, बाबू बालमुकुंद गुप्त तथा बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री व्यवहारिक खडीबोली में काव्य रचना के पक्षपाती थे, किन्तु श्रीधर पाठक, महावीर प्रसाद द्विवेदी, नाथुराम शर्मा हरिऔध तथा सत्यनारायण कविरत्न आदि संस्कृत निष्ठ काव्य शैली के समर्थक थे।

शैली तथा प्रयोग की दृष्टि से आधुनिक युग के काव्य का अपना विशिष्ट सन्दर्भ है। शैलिगत नविनता आधुनिक युगीन खडीबोली काव्य की अपनी विशिष्टता है। यह नवीनता छन्द प्रयोग, अनुवादात्मकता तथा पाशचात्य साहित्य के वैचारिक तत्वों से परिचित होने की आकांक्षा इस युग के काव्य में विशेष रूप से दिखाई पडती है। खडीबोली आन्दोलन के अन्तर्गत प्राप्त कविताएँ विभिन्न स्टाईलों में लिखी गयी है।

काव्य क्षेत्र में ब्रजभाषा और खडीबोली के प्रयोग को लेकर इस युग में एक प्रकार के आन्दोलन का सूत्रपात हो गया था, जिसका मूल कारण यह था कि अयोध्या प्रसाद खत्री कृत खडीबोली का आन्दोलन में ब्रजभाषा और अवधि की रचनाओं को हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत स्थान देने से ही इनकार कर दिया गया था।

अयोध्या प्रसाद खत्री ने खडीबोली का पद्य शीर्षक एक अन्य रचना में विभिन्न शैलियों में रचित उस समय की खडीबोली -कविताओं का भी संकलन किया था, जिससे इस दिशा में कवियों की बढ़ती हुई अभिरुचि का प्रमाण मिलता है। कारण स्पष्ट है - खडीबोली गद्य के समानान्तर खडीबोली कविता के विकास की संभावनाओं की खोज उनमें से बहुतों को अभीष्ट थी।

उदाहरण स्वरूप भारतेन्दु की निम्नलिखित काव्य - पंक्तियाँः-

श्री राधामाधव युगलचरण रस का अपने को मस्त बना।
पी प्याला भर भरकर कुछ इस मै का भी देख मजा।।

आचार्य शुक्ल ने अपने इतिहास में नयी काव्य धारा के प्रथम उत्थान के अन्तर्गत राजा शिव प्रसाद सितारे, हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायण मिश्र, अम्बिका दत्त व्यास, राधाकृष्ण दास, उपाध्याय बद्रीनारायण चौधरी आदि को रखा है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

आधुनिककाल की प्रमुख काव्य भाषा - ब्रज, खड़ी बोली।
खडी बोली पद्य साहित्य की विशेषताएँ
खडीबोली पद्य साहित्य का विकास युग।

Critical Overview / अवलोकन

खडीबोली हिन्दी साहित्य के गद्य और पद्य की विभाजक रेखा को मिटा दिया। हिन्दी खडी बोली काव्य रचना आधुनिक काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस भाषागत उपलब्धि के सन्दर्भ में हिन्दी पद्य साहित्य की गतिविधि लगभग बीस वर्षो तक अवरुद्ध - सी हो गयी थी। हिन्दी खडी बोली

काव्य रचना प्रायोगिक स्तर पर थी। 1880 ई में अयोध्या सिंह उपाध्याय ने **खडी बोली आन्दोलन** पुस्तक प्रकाशित की, जिसका मुख्य ध्येय खडी बोली के विरोधी मतों को प्रत्याख्यान करना था।

Recap / पुनरावृत्ति

- आधुनिक काल के पद्य साहित्य का विकास
- खडीबोली पद्य साहित्य
- भारतेन्दु युगीन कविताएँ
- प्रमुख काव्य भाषाएँ - ब्रज, खडी बोली
- खडी बोली भाषा के प्रवर्तक - श्रीधर पाठक
- भारतेन्दु मण्डल के कवियों ने खडीबोली में पद्य रचनाएँ आरंभ की
- द्विवेदी युगीन कविताएँ
- द्विवेदी युग में खडीबोली पद्य को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला
- प्रमुख कवियाँ - श्रीधर पाठक अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, मैथिली शरण गुप्त आदि
- खडीबोली काव्य भाषा की विशिष्टता
- नवीन छन्द प्रयोग

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भक्तिकाल के बाद आनेवाले हिन्दी साहित्य का काल का नाम क्या है ?
2. आधुनिक काल का आगमन युग का नाम क्या है ?
3. आधुनिक काल का समय - सीमा लिखिए ?
4. द्विवेदी युग का पूरा नाम लिखिए ?
5. भारतेन्दु युग का पूरा नाम क्या है ?
6. खडीबोली का दुसरा नाम क्या है ?
7. खडीबोली का प्रथम कवि कौन है ?
8. आधुनिक काल की काव्य भाषा क्या है ?

Answers उत्तर

1. आधुनिक काल।
2. भारतेन्दु युग।
3. 1850- अभी तक।
4. महावीर प्रसाद द्विवेदी।
5. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र युग।
6. कौरवी।
7. अमीर खुसरो(आदिकाल)।
8. खडीबोली और ब्रज।

Assignments प्रदत्त कार्य

- खडीबोली पद्य साहित्य के विकास पर टिप्पणी लिखिए।
- आधुनिक काल के पद्य का क्रमिक विकास व्यक्त कीजिए ?
- आधुनिक काल के खडीबोली पद्य साहित्य की विशेषताएँ क्या है ?
- प्रमुख खडी बोली कवि और उनके रचनाओं के नाम लिखिए।

इकाई : 2
भारतेन्दु युगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भारतेंदु युग को आधुनिक काल के काव्य क्षेत्र के प्रवेश द्वार के रूप में समझता है।
- भारतेंदु युग की कविता में देश भक्ति और राज भक्ति एकत्र रूप में चलने की परिचय मिलता है।
- भारतेन्दु युगीन काव्य जन-जीवन की क्रोड में पलने का परिचय प्राप्त होता है।
- भारतेन्दु काल के कविताओं की मुख्य विशेषताओं के बारे में समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग के आरंभिक समय को भारतेन्दु-युग कहा जाता है। आधुनिक काल के इस समय को हिन्दी साहित्य का परिवर्तन काल माना जाता है। काव्य की दृष्टि से नयी काव्य धारा माने जाते है (1868 ई - 1893 ई)। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय सीमा 1850 -1885 ई है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य का सूत्रधार कहा जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आधुनिक काल के आरंभिक युग, नामकरण, समय सीमा 1868 -1893, प्रमुख कवियाँ ।

Discussion / चर्चा

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में पुनरजागरण की पहली सशक्त साहित्य अभिव्यक्ति भारतेन्दू युग में मिलती हैं। भारतेन्दू युग में भक्ति युगीन चेतना, रीति युगीन श्रृंगारिकता एवं सामयिक यथार्थ बोध का अत्भुत समन्वय है।

भारतेन्दु युगीन कविता में ब्रज, खडीबोली और अवधी की सिंहावलोकन है। भारतेन्दु- युग के काव्य को अपनी परंपरागत विशिष्टता होती है। भारतेन्दु ही नहीं अपितु भारतेन्दु के प्रायः सभी सहयोगी काव्य केलिए ब्रजभाषा के प्राचीन परंपरागत मान्यता के पोषक थे और खडीबोली काव्य रचना मात्र प्रयोग के स्तर पर थी। युगीन भावनाओं का वाहक, कविता में नवीन मोड़, खडीबोली के अग्रदूत, जन-भावना का विकास, गद्य की विभिन्न शैलियों का विकास आदि भारतेन्दु युग के साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ है।

1.2.1 भारतेन्दु युग के कविताओं की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :-

देशभक्ति

उस युग की राजनीति के अनुरूप हिन्दी कविता में भी देशभक्ति और राजभक्ती एकत्र चलती रही है। देशभक्ति में किसी प्रकार की चाटुकारिता नहीं है।

प्राचीनता तथा नवीनता का समन्वय

इस युग काव्य में जहाँ देश- प्रेम तथा समाज सुधार आदि नवीन विषयों का समावेश हुआ, वहाँ भाषा, भाव और छन्द की दृष्टि से यह युग सामंजस्य का युग है।

जन जीवन का चित्रण -

भारतेन्दु युग की साहित्य में जन-भावना को साहित्य में विशिष्ट स्थान प्रदान दिया। भारतेन्दु युग सामाजिक चेतना में क्रान्ति लाकर भारतवासियों को स्वदेश प्रेम और स्वाभिमान सिखाया। देश की पराधीनता भारतेन्दु युग में व्याकुल कर रखा था। अंग्रेज़ों द्वारा भारतीय जनता का शाषण भारतेन्दु ने व्यग्र

किए दे रहा था, तभी तो उन्होंने लिखा-

सबके ऊपर लगा टिक्कस कि उड़ा होस मोरा।
रोवे के चाहिए हँसी ठीठी ठ्ठाना कैसी।

भारतेन्दु युग का उद्देश्य यही था कि सर्वसाधारण में एक चेतना जागृत करनी चाहिए जो कि सबको जागृत कर सके।

खडीबोली के अग्रदूत -

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रारंभ में जब राजा लक्ष्मण सिंह तथा शिव प्रसाद भाषा संबन्धी दो भिन्न दृष्टिकोण उपघटित कर रहे थे, उस समय भारतेन्दु हरिश्चद्र ने भाषा का शिष्ट और परिमार्जित रूप जनता के सामने रखा। विदेशी शब्दों के साथ-साथ उन्होंने कहावतों तथा मुहावरों का सुन्दर प्रयोग किया है। भारतेन्दु युग में देश और जाती की समृद्धि का मूल भाषा खडीबोलि बन गया है। साहित्य की उन्नति को माना है-

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के
मिटत न होय को सूल।।

कविता में नवीन मोड़ -

हिन्दी साहित्य के एक नवीन युग के पुनर्जागरण के रूप में भारतेंन्दु युग खडे होकर यह भी प्रदर्शित किया कि नए-नए या बाहरी भावों को पचाकर इस प्रकार मिलाना चाहिए कि वे अपने युग के ही साहित्य के विकसित अंग से लगे। प्राचीन-नवीन के इस सन्धिकाल में जैसी शीतल कला का संचार अपेक्षित था वैसा ही शीतलकाल के साथ भारतेन्दु युग का उदय हुआ। पद्य भाषा के रूप में खडीबोली को स्थान दिया फिर भी खडीबोली पद्य को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला। भारतेन्दु मण्ड़ल में ब्रजभाषा में काव्य रचनाएँ की, प्राचीन और नवीन का काव्य भाषा की यही सुन्दर सामंजस्य भारतेन्दु युग की काव्य का विशेष माधुर्य है।

गद्य की विभिन्न शैलियों का विकास -

भारतेन्दु युग के श्रेय है कि हिन्दी- गद्य की विभिन्न विधाएँ यथा-निबन्ध, नाटक, कहानी, उपन्यास, आलोचना का नए ढंग से श्री गणेश हुआ। हिन्दी निबन्ध साहित्य भारतेन्दु युग की मौलिक देन है।

प्रकृति चित्रण की पद्धति

भारतेन्दु युग में शिल्प के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग किए। ये लोग नए प्रकृति के वर्णन में अधिक रहे है, बाह्य प्रकृति के वर्णन में नहीं।

भाषा -ब्रज और खडीबोली

छन्द वैविध्यता - रोला, लावनी कजली, छप्पय, कवित्त आदि

निःसंदेह भारतेन्दुजी और उनके युग आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक नयी एवं स्वस्थ चेतना का केन्द्र बिन्दु है। हिन्दी साहित्य में खडीबोली को परिष्कृत करने का श्रेय भारतेन्दु युग को है। काव्य क्षेत्र ही नयी चाल में ढली है। सामान्य जन-जीवन और उसकी समस्याओं से भारतेन्दु युगीन साहित्य को सीधा सम्पर्क है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

भारतेन्दु युग के साहित्यकार कवि की अपेक्षा समाज-सुधारक, प्रचारक और पत्रकार थे।

Critical Overview / अवलोकन

ब्रज, अवधि और खडीबोली आदि भारतेन्दु युगीन काव्य भाषा है। इस युग के कवियों ने विभिन्न सामायिक विषयों पर फुटकर पद एवं कविताएँ लिखी। भारतेन्दू युग में देश प्रेम तथा समाज सुधार आदि नवीन विषयों का समावेश हुआ है। आधुनिक काव्य चेतना के साथ, भारतेन्दु-युग के काव्य की अपनी परंपरागत विशिष्टता भी है।

Recap / पुनरावृत्ति

- आधुनिक काल के आगमन युग
- समय सीमा 1868 - 1893 (भारतेन्दु युग)
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का समय सीमा 1850- 1885
- आधुनिक हिन्दी साहित्य का पहला चरण-भारतेन्दु युग
- ब्रज, अवधि और खडीबोली - भाषा के प्रयोग
- प्राचीनता तथा नवीनता का समन्वय
- प्रमुख प्रवृत्तियाँ -युगीन भावनाओं का वाहक, कविता में नवीन मोड़, खडीबोली के अग्रदूत, जन-भावना का विकास

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतेन्दू के पूरा नाम क्या है ?
2. भारतेन्दू युग के प्रमुख भाषा क्या-क्या है ?
3. भारतेन्दु युग के प्रमुख प्रवृत्ति क्या है ?
4. भारतेन्दू युग के काव्य में प्रयुक्त दो प्रमुख छन्दों के नाम लिखिए।
5. आधुनिक काल के प्रवेश युग का नाम लिखिए ।
6. खडीबोली भाषा का दूसरा नाम क्या है ?
7. भारतेन्दु युग का समय सीमा लिखिए ?
8. भारतेन्दू का जन्म कब हुआ ?

Answers उत्तर

1. भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र।
2. ब्रज और खडीबोली।
3. राष्ट्रीय भावना और देश प्रेम।
4. कवित्त, सवैय्या और रोला।
5. भारतेन्दु युग।
6. कौरवी।
7. 1850 - 1900 ई ।
8. 1850 ई माने गये है।

Assignments प्रदत्त कार्य

- भारतेन्दु युगीन साहित्य के प्रमुख प्रवृत्तियाँ।
- भारतेन्दु युग के काव्य की विशेषताएँ क्या है?
- भारतेन्दु युग के माने क्या है?
- भारतेन्दु युगीन काव्य भाषा की विशेषताएँ क्या है?

इकाई : 3

भारतेन्दु युगीन प्रमुख कवि - भारतेन्दु, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह, बालकृष्ण भट्ट

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भारतेन्दु युग के प्रमुख कवियों का परिचय प्राप्त होता है।
- उनके प्रमुख रचनाओं के नाम समझता है।
- भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख कवियों की मुख्य काव्यगत विशेषताएँ समझता है।
- काव्य भाषा के रूप में खडीबोली और ब्रजभाषा का परिचय मिलता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भारतेन्दू कालीन कविता के विकास में प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिकादत्त व्यास, राधाकृष्णदास, और बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन का नाम उल्लेखनीय है। इन सभी कवियों के वाणी में देश भक्ति और राजभक्ति का स्वर ऊँचा है। भारतेन्दु जी और उनके मण्डलीय कवि देश की राजनीतिक दशा, धार्मिक और सामाजिक दशा पर सदा ध्यान बना रहा। इस युग के कवि हिन्दी कविता को नवीन विषयों की ओर अग्रसर किया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भारतेन्दू मण्डल के प्रमुख कवि, प्रमुख रचनाएँ, प्रमुख भाषा, छन्द, साहित्यक मूल्य।

Discussion / चर्चा

भारतेन्दु युग में पाश्चात्य संस्कृति के संपर्क और भारतीय राष्ट्रीयता के उदय की जो मिली - जुली प्रतिक्रिया जनमानस में हुई। उसकी प्रतिध्वनि तत्कालीन काव्य में सुनायी देती है। आधुनिक काव्य चेतना के साथ भारतेन्दु - युग के काव्य की अपनी परंपरागत विशिष्टता भी है। भारतेन्दु कालीन कविता के विकास में भारतेन्दु, प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', बालकृष्ण भट्ट, आदि का नाम उल्लेखनीय है। इस समय के साहित्यकारों की स्वभावगत सामंजस्यता, जो कि तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों की उपज थी, कविता के क्षेत्र में भी प्रतिफलित हुई। इस युग के साहित्यकार कवि की अपेक्षा समाज — सुधारक, प्रचारक और पत्रकार अधिक थे।

भारतेन्दु से प्रभावित तथा उनके संपर्क के कवियों का विवरण इस प्रकार है:-

भारतेन्दु हरिश्चंद्र - सन् **1850 - 1885 ई**

बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन - सन् **1885 - 1922 ई**

प्रतापनारायण मिश्र - सन् **1856 - 1894 ई**

ठाकुर जगमोहन सिंह - सन् **1857 - 1899 ई**

बालकृष्ण भट्ट - सन् **1844 - 1914 ई**

भारतेन्दु बाबु हरिश्चद्र

हिन्दी क्षेत्र में पुनर्जागरण की पहली सशक्त साहित्यक अभिव्यक्ति भारतेन्दू हरिश्चद्र के व्यक्तित्व में मिलती

है। भारतेन्दु के साहित्य में भक्तियुगीन चेतना, रीतियुगीन श्रृंगारिकता एवं सामायिक यथार्थ बोध का अद्भुत समन्वय है। भारतेन्दु जी भक्ति, श्रृंगार, देशप्रेम, धार्मिक पाखंड, स्वाधीनता, नारी शिक्षा, आर्थिक विषमता आदि को अपने काव्य का विषय बनाया है।

रचनाएँ : फूलों का गुच्छा, उर्दू का स्यापा, बकरी विलाप।

ठाकुर जगमोहन सिंह :

जगमोहन सिंह का काव्य- व्यक्तित्व अत्यन्त उदात्त कोटि का है। आचार्य शुक्ल ने अपने इतिहास में इनके उत्कृष्ट काव्यत्व की बार-बार प्रशंसा की है। ठाकुर जगमोहन सिंह के काव्यत्व का मुख्य विषय प्रेम है। प्रकृति, प्रेम एवं तत्कालीन समस्याएँ इनके काव्य में अनेक रूपों में आयी हैं। इनके काव्य-व्यक्तित्व का एक विशिष्ट अंश ब्रजभाषा काव्य परंपरा से संबंध है किन्तु अधुनातन प्रवृत्तियों के प्रति मोह के कारण निःसन्देह इन्हें आधुनिक काव्य के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

रचनाएँ : 'प्रेमसंपत्ति लता', 'श्याम लता', 'श्याम सरोजनी', 'देवयानी'।

प्रतापनारायण मिश्र :

भारतेन्दु की गोष्ठी के ये प्रमुख कवि थे और उनके प्रति इनकी आजीवन निष्ठा बनी रही। प्रतापनारायण मिश्र ने 'मन की लहर' कविता में बाल विधवाओं की करुण दशा का मार्मिक चित्रण किया है। मिश्र ने एक ग़ज़ल के माध्यम से देश की दुर्दशा पर गहरी चिन्ता प्रकट की है, **"अभी देखिए क्या दशा देश की हो, बदलता है रंग आसमा कैसे – कैस"**।

रचनाएँ: 'मन की लहर', 'मानस विनोद', 'प्रेम पुष्पावली'।

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' :-

'प्रेमघन' ब्रजभाषा में रचनाएँ करते थे, किन्तु खडीबोली में भी काव्य रचना केलिए इन्हें प्रिय थी। आनंद अरुणोदय नामक आपकी कविता खडीबोली में निर्मित है। 'प्रेमघन' ने अपने समकालीन कवियों के विषयों के अतिरिक्त विशेष उत्सवों और अवसरों पर अपना आनंद प्रकट करने केलिए प्रशस्तियाँ लिखीं। देश की राजनीतिक दशा, धार्मिक और सामाजिक दशा पर 'प्रेमघन' ने सदा ध्यान बना रहा।

रचनाएँ: 'जीर्ण जनपद', 'आनन्द अरुणोदय', 'हार्दिक हर्षादर्श', 'मयंक महिमा', 'अलौकिक लीला', 'वर्षा बिन्दु'

बालकृष्ण भट्ट :

भारतेन्दु जी से प्रभावित होकर उन्होंने हिन्दी-साहित्य सेवा का व्रत ले लिया। भट्ट जी ने हिन्दी प्रदीप नामक मासिक पत्र निकाला। इस पत्र के वे स्वयं संपादक थे। उन्होंने इस पत्र के द्वारा निरंतर 32 वर्ष तक हिन्दी की सेवा की। काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित हिन्दी शब्दसागर के संपादन में भी उन्होंने बाबू श्याम सुंदर दास तथा शुक्ल जी के साथ कार्य किया है।

रचनाएँ :- 'साहित्य सुमन', 'सौ अजान एक सुजान', 'नूतन ब्रम्हचारी', 'चन्द्र सेन', 'रेल का विकट खेल', 'बाल विवाहचंद्रोदय', 'संसार महानाट्यशाला', 'प्रेम के बाग का सैलानी', 'माता का स्नेह', 'आंसू', 'लक्ष्मी' आदि।

भारतेन्दु मण्डल के सभी कवियाँ प्रतिभाशाली थे। आचार्य शुक्ल ने बालकृष्ण भट्ट की तुलना एडिसन तथा प्रताप नारायण मिश्र की तुलना स्टील नामक अंग्रेजी गद्य लेखकों से की है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

भारतेन्दु युगीन प्रमुख कवियों ने भक्ति, श्रृंगार, देश प्रेम, स्वाधीनता, नारी शिक्षा, आर्थिक विषमता आदि को अपने काव्य का विषय बनाया।

Critical Overview / अवलोकन

ब्रज भाषा या खडीबोली में भारतेन्दु कालीन साहित्यकारों ने सामयिक विषयों पर जो पद्यात्मक रचनाएँ लिखीं, उन्हें कविता की कोटि में नहीं रखा जा सकता है, क्योंकि उनमें राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक विचारों को ज्यों-का-त्यों छन्दोबद्ध करके रखने की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भारतेंदु युग
- भारतेन्दु कालीन प्रमुख साहित्यकार
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र और उनके रचनाएँ
- ठाकुर जगमोहन सिंह और उनके रचनाएँ
- प्रतापनारायण मिश्र और उनके रचनाएँ
- बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन और उनके रचनाएँ
- बालकृष्ण भट्ट और उनके रचनाएँ
- प्रमुख साहित्यकारों का योगदान
- ब्रज और खडीबोली भाषा का प्रयोग

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. फूलों का गुच्छा काव्य रचना की भाषा क्या है?
2. मन की लहर किसकी काव्य कृति है?
3. बालकृष्ण भट्ट किस युग के कवि थे?
4. भारतेन्दु युग का समय सीमा लिखिए?
5. भारतेन्दु युग के दो कवियों के नाम लिखिए?
6. हिन्दी साहित्य में एडिसन नामक विख्यात कवि कौन थे?
7. किसने प्रताप नारायण मिश्र को स्टील नाम दिया?
8. बाल विवाह किसकी रचना है?

Answers उत्तर

1. खडीबोली।
2. प्रताप नारायण मिश्र।
3. भारतेन्दु युग ।
4. 1868 – 1893
5. ठाकुर जगमोहन सिंह, बालकृष्ण भट्ट।
6. बालकृष्ण भट्ट।
7. रामचन्द्र शुक्ल जी।
8. बालकृष्ण भट्ट।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments प्रदत्त कार्य

- भारतेन्दु युगीन साहित्य के प्रमुख कवि और उनके योगदान व्यक्त कीजिए।
- भारतेन्दु युग के प्रमुख कवियों पर टिप्पणी लिखिए।
- भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र और उनके युग पर विचार कीजिए।
- भारतेन्दू मण्डल के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

SGOU

इकाई : 4
द्विवेदीयुगीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- द्विवेदीयुगीन काव्यगत विशेषताएँ समझता है।
- नागरणि प्रचारणी सभा और सरस्वती पत्रिका का परिचय प्राप्त होता है।
- काव्य में ब्रज और खडीबोली का समान्तर प्रयोग समझता है।
- द्विवेदीयुग खडीबोली हिन्दी का प्रस्तावना के युग के रूप में समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आधुनिक हिन्दी साहित्य का दूसरा चरण द्विवेदीयुग कहलाता है। द्विवेदीयुग की समयावधि सन् 1900 से 1920 ई लगभग 20 वर्ष तक मानी जाती है। सन् 1903 में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कर्मठ हाथों में सरस्वती पत्रिका का संपादन का भार आया। सरस्वती के माध्यम से द्विवेदी जी ने हिन्दी साहित्य के गद्य और पद्य की विभाजक रेखा को मिटा दिया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आधुनिक काल का दूसरा चरण, समयावधि 1900 से 1920, सरस्वती पत्रिका, खडीबोली भाषा, सरस्वति पत्रिका के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी।

Discussion / चर्चा

आधुनिक हिन्दी साहित्य का दूसरा चरण द्विवेदी युग कहलाता है। आचार्य द्विवेदी युग की समयावधि सन् 1900 से 1920 ई लग भग 20 वर्ष तक मानी जा सकती है। द्विवेदी जी ने गद्य और पद्य दोनों केलिए खडीबोली को ही प्रतिष्ठापित किया। द्विवेदी जी के समय में भाषा और साहित्य की उन्नति केलिए दो संस्थाएँ स्थापित हुई, नागरणि प्रचारणी सभा(1893) और सरस्वती पत्रिका (1900)।

सन् 1903 में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के कर्मठ हाथों में सरस्वती का संपादन भार आया और पत्रिका अपने साहित्यक चरमोत्कर्ष पर पहूंची। सरस्वती के माध्यम से द्विवेदी जी ने हिन्दी साहित्य के पद्य और गद्य की विभाजक रेखा को मिटा दिया। यद्यपि सरस्वती में ब्रजभाषा की रचनाएँ भी छपती रहीं, फिर भी खडीबोली पद्य को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला। गद्य-पद्य की भाषा खडीबोली हो गयी। इसका श्रेय द्विवेदी को ही है।

1.4.1 द्विवेदी युग की काव्य की प्रवृत्तियाँ :-

राष्ट्रीयता की भावना :

द्विवेदीयुगीन लगभग सभी कवियों ने देशभक्ति एवं राष्ट्रीय भावना से युक्त रचनाएँ कीं, जो स्वाभाविक रूप से उस युग की राजनीतिक चेतना एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भावधारा का परिणाम था ।

मानवतावाद

द्विवेदीयुग में हजारों वर्षों के बाद मनुष्य की सच्ची प्रतिष्ठा

पहली बार इस देश में आंकी गयी मानव ने मानव को समझा। द्विवेदीयुग में प्रथम बार मनुष्य को मनुष्य के रूप में देखा गया।

उपदेशों की प्रधानता

सांस्कृतिक पुनरुत्थान तथा समाज सुधार की भावना के कारण इस युग की कविता में उपदेश की प्रवृत्ति मिलती है। जिसके कारण कविता अधिक आदर्शवादी और नैतिकवादी हो गयी है। मैथिलीशरण गुप्त ने तो स्पष्ट रूप से लिखा है -

केवल मनोरंज न कवि का कर्म होना चाहिए ।

उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए ।

लोकतन्त्र का समर्थन

द्विवेदी युग गांधी वाद था। इस युग के कवि यदि एक और आचार्य द्विवेदी के बनाये रीति, नियमों का साहित्य से पालन करता था।

लोक जीवन के विषयों का प्राधान्य

इस युग के अधिकांश कवियों ने विशेष रूप से अपने काव्य में नवीन एवं सामान्य लोकजीवन के विषयों को स्थान दिया।

नीति एवं आदर्श

द्विवेदीयुगीन कवियों ने अपनी रचनाओं में नये - नये विषयों के समावेश के साथ ही नीति एवं आदर्श की बातों को प्रमुखता के साथ ग्रहण किया।

प्रकृति चित्रण

द्विवेदीयुगीन कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति का स्वतंत्र चित्रण किया है। प्रकृति के आलम्बन, उद्दीपन एवं वातावरण - निर्माण आदि रूपों का मनोहारी वर्णन इनके काव्य में मिलता है।

इतिवृत्तात्मकता

इस युग में आर्य समाज के प्रभाव, राष्ट्रीय आंदोलन के कारण तथा अन्य आदर्शवादी संस्थाओं के प्रभाव के परिणामस्वरूप श्रृंगार रस की अश्लीलता और उच्चश्रृंखलता के रूप को समझकर कविता क्षेत्र से उसका बहिष्कार कर दिया था। द्विवेदीयुग में उससे खूब परिपक्वता आई आगे चलकर इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप छायावाद का उदय हुआ। युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के निर्देशन पर ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों को रचनाओं केलिए चुना गया।

खडीबोली की प्रतिष्ठा

द्विवेदी युग में काव्य के रूप में खडीबोली को प्रतिष्ठा मिल गयी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के द्वारा, खड़ी बोली के व्याकरण सम्मत प्रयोग पर अत्यधिक दिया गया। इस समय खड़ी बोली कविता की शैली उत्तरोत्तर स्वच्छ शक्तिशाली अभिव्यंजना पूर्ण होती गई। वस्तुतः इस युग के कवियों ने आचार्य द्विवेदी की प्रेरणा एवं युग परिस्थितियों के प्रभावस्वरूप परंपरा से पृथक हो काव्य रचना में भाग लिया।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

सरस्वती पत्रिका का योगदान।

द्विवेदीयुग की काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ।

इतिवृत्तात्मक काव्य रचना।

Critical Overview / अवलोकन

ब्रज और खडीबोली दोनों भाषा का प्रयोग। खडी बोली पद्य क अधिक प्रोत्साहन मिला। गद्य-पद्य की भाषा खडी बोली हो गयी। इसका श्रेय महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही है। सरस्वती पत्रिका के माध्यम से द्विवेदी जी गद्य-पद्य की विभाजक रेखा को मिटा दिया। आधुनिक काल में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एक युग प्रवर्तक के रूप में हमारे सामने आता हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- आधुनिक काल का दूसरा चरण
- युग प्रवर्तक द्विवेदी
- सरस्वती पत्रिका
- सरस्वती पत्रिका का संपादकत्व में द्विवेदी
- काव्य भाषा- खडी बोली
- ब्रज और खडीबोली का सम्यक प्रयोग
- काव्य रचना में इतिवृत्तात्मकता
- मानवतावाद की प्रतिष्ठा
- प्रमुख काव्यगत विशेषताएँ

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन वर्ष कब है ?
2. द्विवेदी युग की भाषा क्या है ?
3. द्विवेदी युग की समयावधि लिखिए ?
4. 1903 ई में सरस्वती पत्रिका का संपादक कौन है ?
5. द्विवेदी का पूरा नाम क्या है ?
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के दो रचनाओं के नाम लिखिए ।
7. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि थे ?
8. द्विवेदी युग के दो कवियों के नाम लिखिए ?

Answers उत्तर

1. सन् 1900 ई
2. ब्रज और खडीबोली
3. सन् 1900 - 1920 ई
4. महावीर प्रसाद द्विवेदी ।
5. महावीर प्रसाद द्विवेदी ।
6. कविता कलाप, काव्य मंजुषा ।
7. द्विवेदी युग ।
8. नाथुराम शर्मा शंकर, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध ।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments प्रदत्त कार्य

- युग प्रवर्तक महावीर प्रसाद द्विवेदी पर टिप्पणी लिखिए।
- द्विवेदीयुगीन काव्यगत भाषा की विशेषताएँ क्या है ?
- सरस्वती पत्रिका पर टिप्पणी लिखिए ?
- द्विवेदी युगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ क्या है ?

SGOU

इकाई : 5

द्विवेदीयुगीन प्रमुख कवि :अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, मैथिली शरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधर पाठक

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- द्विवेदीयुगीन प्रमुख कवियों का परिचय प्राप्त होता है।
- उनके काव्यगत विशेषताएँ समझता है।
- द्विवेदीयुगीन कवियों की भाषा शैली समझता है।
- खडीबोली भाषा के प्रस्तावना के युग के रूप में समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

द्विवेदीयुगीन कवियों ने आचार्य द्विवेदी की प्रेरणा एवं युग परिस्थितियों के फलस्वरूप परंपरा से पृथक को काव्य रचना में भाग लिया। द्विवेदी के माध्यम से कवियों ने एक नयी चेतना का विकास किया। द्विवेदीयुगीन कवियों ने जातीय जीवन की बडी मार्मिक और रचनात्मक आलोचना की।

Keywords / मुख्य बिन्दु

खडीबोली भाषा और प्रवर्तक, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का योगदान, प्रमुख कवि और उनके काव्यगत विशेषताएँ।

Discussion / चर्चा

द्विवेदीयुगीन कवियों ने जातीय जीवन की बडी मार्मिक और रचनात्मक आलोचना की। उन्होंने उसके शुभ पक्ष को प्रोत्साहित और अशुभ पक्ष को तिरस्कृत किया। जहाँ उन्होंने सामाजिक कुरीतियों धार्मिक आडम्बरों एवं निरर्थक रूढ़ियों पर जोरदार प्रहार किये, वहाँ अपनी परंपरा के उपयोगी तत्वों का सबल समर्थन और पोषण भी किया।

1.5.1 प्रमुख कवियाँ

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध

द्विवेदी जी के प्रभाव से इन्होंने खडीबोली में संस्कृत छन्दों और संस्कृत की समस्त पदावली का सहारा लिया, जिसका परिपक्व रूप अपने प्रिय प्रवास में दिखाया।

प्यारे जीवें, जगहित करें, गेह चाहे न आवें ।

उपाध्याय जी के वैदेही वनवास में लोक संग्रह के भावना की प्रधानता है, किन्तु इसमें कोई विशेष नवीनता का झलक पाई।

रचनाएँ : 'प्रियप्रवास', 'वैदेही वनवास', 'चौखे चौपते', 'चूभते चौपते', 'रसकलस', 'पद्य प्रसून'।

मैथिलीशरण गुप्त

द्विवेदीयुगीन प्रतिष्ठित कवि। आपकी खडीबोली की कविताएँ सरस्वती पत्रिका में द्विवेदी जी के संपादन काल तक बराबर निकलती रही। उन दिनों में इतिवृत्तात्मक कविताओं के लिखने का बडा ज़ोर था। मैथिलीशरण गुप्त ने तो स्पष्ट रूप से लिखा है -

केवल मनोरंज न कवि का कर्म होना चाहिए ।

उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए ।

रचनाएँ: 'जयद्रथ वध', 'भारत भारती', 'पंचवटी', 'साकेत', 'यशोधरा', 'नहुष', 'जय भारत', 'विष्णु प्रिय', 'द्वापर', 'झंकार'।

रामनरेश त्रिपाठी :

अपने काव्यों में जीवन के नवीन मूल्यों और आदर्शों के प्रति उन्मुख हुई। रामनरेश त्रिपाठी ने प्राचीन पौराणिक तथा ऐतिहासिक पात्रों की सृष्टि बुद्धिवादी युग के आदर्शों के अनुरूप की।

रचनाएँ: 'मिलन', 'पथिक', 'मानसी', 'स्वप्न', 'कविता कौमुदी'।

श्रीधर पाठक :

इन्होंने खडीबोली और ब्रज दोनों में स्वतंत्र रूप से प्रकृति का वर्णन किया। इन्होने खडीबोली पद्य केलिए सुन्दर लय, ताल और स्वर के भी नये ढांचे निकाले ।

खडीबोली भाषा में लिखित प्रकृति वर्णन :-

विजन वन प्रांत था, प्रकृति मुख शान्त था ।

अटन का समय था, रजनी का उदय था ।

रचनाएँ : जगत सच्चाई सार,काश्मीर सुषमा, जार्ज वन्दना, श्री गोखले प्रशस्ति, संध्या अपन, वनाष्टक।

द्विवेदी युग के कवियों के काव्य में ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों एवं समसामयिक परिस्थितियों का अद्भुत समन्वय परिलक्षित होता है। इस काल में कवि का दृष्टिकोण जीवन तथा प्रकृति के प्रति बदल चुका था। इसी कारण इस काल में काव्य में स्वच्छ्न्द भावना के दर्शन हूए। द्विवेदी युग में इतिवृत्तात्मक कविता की एक परिपाटी चलती रही, जिसमें बँधकर प्राय: सभी कवियों ने रचनाएँ कीं। मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔधे, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय तथा सियाराम शरण गुप्त ने पौराणिक तथा ऐतिहासिक पात्रों के सृष्टि बुद्धिवादी युग के आदर्शों के अनुरूप की।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

खडीबोली की प्रतिष्ठा ।

काव्य में व्यक्त नीति एवं आदर्श

Critical Overview / अवलोकन

द्विवेदी युग के अधिकांश कवि छायावादी युग में लिखते रहे परन्तु उनकी वर्ण प्रधान इतिवृत्तात्मक रचनाएँ छायावाद की पूर्वगामिनी ही समझनी चाहिए, यद्यपि उनमें स्वचछन्दतावादी कविता के पूर्व चिह्न अवश्य प्रकट हो गये थे। इस दृष्टि से श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी आदि छायावाद युग के कडी ठहरते हैं। भाषा, छन्द तथा अन्य साहित्यक परंपराओं तथा रूढ़ियों से मुक्त होकर उन्मुक्त स्वचछन्दतावाद का जो रूप हमको द्विवेदी युग के कवियों के रचनाओं में मिलता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- द्विवेदी युग
- सरस्वति पत्रिका
- द्विवेदीयुगीन प्रवृत्तियाँ
- काव्यगत विशेषताएँ
- खडीबोली भाषा की विकास युग
- प्रमुख कवियाँ
- अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध और उनके रचनाएँ
- श्रीधर पाठक और उनके रचनाएँ
- रामनरेश त्रिपाठी और उनके रचनाएँ
- मैथलीशरण गुप्त और उनके रचनाएँ

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. झंकार किसकी कृति है ?
2. श्रीधर पाठक किस युग के कवि थे ?
3. मिलन किस विधा की रचना है ?
4. राष्ट्र कवि कौन है ?
5. प्रियप्रवास की रचयिता कौन है ?
6. सरस्वती पत्रिका का संपादक कौन हैं ?
7. खडीबोली में रचित पहला महाकाव्य क्या है ?
8. प्रियप्रवास के नायक कौन हैं ?

Answers उत्तर

1. मैथिली शरण गुप्त ।
2. द्विवेदी युग ।
3. काव्य ।
4. मैथिली शरण गुप्त ।
5. अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध ।
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी ।
7. प्रियप्रवास ।
8. कृष्ण ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. द्विवेदीयुगीन प्रमुख कवि और उनकी प्रमुख रचनाएँ ।
2. द्विवेदी युग की प्रमुख कवियों की नाम लिखिए ?
3. द्विवेदी युग की कवियों की काव्यगत विशेषताएँ क्या है ?
4. द्विवेदी युगीन कवियों की प्रमुख रचनाएँ लिखिए ?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई : 6

प्रियप्रवास, साकेत, यशोधरा, मिलन, कशमीर सुषमा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रियप्रवास काव्य की परिचय प्राप्त होता है।
- साकेत खण्डकाव्य के बारे में समझता है।
- मिलन कविता की उद्देश्य समझता है।
- यशोधरा काव्य की विशेषताएँ समझता है।
- काश्मीर सुषमा काव्य की काव्यगत विशेषता समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी साहित्य की आधुनिक काल में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एक युग प्रवर्तक के रूप में हमारे सामने आते हैं। मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधरपाठक आदि सुकवियों को द्विवेदीजी ने काफी प्रोत्साहन दिया और ये कवि उस काल की सरस्वती जी की स्टाइल के सुकवि है। द्विवेदी युग के श्रेष्ठ कवियों में प्रमुख है - मैथिली शरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, श्रीधर पाठक आदि। द्विवेदीयुग की अद्वितीय रचनाओं में साकेत, यशोधरा, मिलन, काश्मीर सुषमा आदि काव्यों का नाम स्मरणीय है। ये काव्य रचनाएँ द्विवेदी युग की श्रेष्ठ रचनाएँ है। इन्हीं रचनाओं में द्विवेदी युग के समसामयिक परिस्थितियों का अद्‌भुत समन्वय परिलक्षित होता है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- द्विवेदी युग की अत्यंत श्रेष्ठ रचनाएँ है।
- ऐतिहासिकता
- लोकजीवन के विषयों से सम्बन्धित ।

Discussion / चर्चा

द्विवेदी युग के कवियों के काव्य में ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों एवं समसामयिक परिस्थितियों का अद्‌भुत समन्वय परिलक्षित होता है। इस काल में कवि का दृष्टिकोण जीवन तथा प्रकृति के प्रति बदल चुका था। इसी कारण इस काल में काव्य में स्वच्छन्द भावना के दर्शन हूए। इस काल में साहित्य में प्राचीन रूढ़ियों और निरर्थक परंपराओं के प्रतिरोध की भावना है। रीतिकाल की श्रृंगार-भावना, जो भारतेन्दु काल में जिस रूप में चलती रही, इस काल के साहित्य में सर्वथा बहिष्कार कर दिया गया।

6.1.1 साकेत

द्विवेदीयुग की अद्वितीय कवि मैथिली शरण गुप्त की प्रबंध काव्य है — साकेत और यशोधरा।

साकेत की रचना में इन्होंने हिन्दी महाकाव्यों में युगान्तर उपस्थित कर दिया। गुप्त जी का कवि राम-वन-गमन में तत्पर नही हुआ, वह अयोध्या में राम और इस काव्य की नायिका ऊर्मिला तथा नायक भरत को सदा देखता रहा। गुप्त के राम, वाल्मीकि और तुलसी की राम न होकर सामान्य मानव हैं और अपनी मानवता के उत्कर्ष द्वारा ईश्वरत्व के अधिकारी हैं। कैकेयी के प्रति कवि ने पर्याप्त संवेदनशीलता से काम लिया है। इसके साथ-साथ साकेत में तत्कालीन राजनीतिक आन्दोलन का भी प्रतिबिंब है।

साकेत की नायीका ऊर्मिला की पीडा को व्यक्त करते हुए गुप्त जी लिखा है :-

तूने तो सहधर्माचारिणि से भी ऊपर

धर्म स्थापन किया भाग्यशालिनी इस भू पर ।

साकेत में वर्णात्मक तथा प्रगीत दोनों शैलियों को अपनाया गया है। कथा के अन्तिम चार सर्गों के कुछ शिथिलता आ गई। साकेत में कुल बारह (12) सर्ग है। इसके अध्याय को सर्ग कहते है। साकेत की नवम सर्ग अत्यंत श्रेष्ठ है। ये सर्ग ऊर्मिला विरह सर्ग के रूप में प्रसिद्ध है।

6.1.2 यशोधरा :

यशोधरा की रचना चंपु के ढंग पर की गई है। इसमें नाटक के समान गद्य और पद्य दोनों का समावेश है। इसमें बुद्ध भगवान के चरित्र से संबंध रखने वाले पात्रों के भावों की बडी उच्च और सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। गीतों में भावाभिव्यनजना अत्यंत मनोरम बन पडी है। बुद्ध यशोधरा को आदि रात में सोती छोड़ कर चले गये। उसे त्याग का भी गौरव नहीं मिला। बस यही उसका उपालंभ है और वेदना है —

"सखि वे मुझे से कह कर जाते।"

विरहिणी यशोधरा और कुमार राहुल का चरित्र-चित्रण इस काव्य में अत्यंत मार्मिक, करूणोत्पादक तथा मनोवैज्ञानिक बन पडा। वियोग-वर्णन के प्रसंग में कवि ने रीतिकालीन आलंकारिक परंपरा का अनुधाव किया है।

6.1.3 मिलन

मिलन हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार रामनरेश त्रिपाठी द्वारा रचित खण्डकाव्य है। जिसका प्रकाशन सन 1917 ई में हुआ था।

1953 तक हिन्दी मन्दिर, प्रयाग से इसके नौ संस्करण निकल चुके थे।

'मिलन' एक प्रेमाख्यानक खण्डकाव्य है, जिसमें कवि द्वारा निर्मित एक सूक्ष्म कथातंतु के माध्यम से दाम्पत्य जीवन, प्रकृति तथा देश भक्ति की भावनाओं का बडा सरस वर्णन किया गया है।

इस खण्डकाव्य की भाषा सरस, प्रवाह पूर्ण खडीबोली है तथा कविता की दृष्टि से इसमें स्वच्छंदतावादी प्रवृत्तियों का समावेश हुआ है।

खडीबोली के काव्यात्मक विकास केलिए रामनरेश त्रिपाठी की यह प्रारंभिक कृति अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है।

प्रियप्रवास

श्रीधर पाठक द्वारा लिखित 'प्रियप्रवास' आधुनिक काल के प्रथम सफल महाकाव्य है। इसमें संस्कृत के वर्ण वृत्तों का प्रयोग किया गया है। 'प्रियप्रवास' का कथा कृष्ण का ब्रज से मथुरा को प्रवेश और फिर लौट आना मात्र है। किन्तु कवि की विशेषता इस बात में है कि उन्होंने छोटी सी कहानी के भीतर कृष्ण जीवन का संपूरण वृत्त और उस के माध्यम से समाज के विविध अंगों और समस्याओं का सुंदर समवेश कर दिया है। इस छोटे से वृत के भीतर मानव मन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावनाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण और भी प्रशंसनीय बन पड़ा है।

आज्ञा भूलूं न प्रियतम की , विश्व के काम आऊं ।

मेरा कौमर - व्रत भव में पूर्णता प्राप्त होवे ।।

'प्रियप्रवास' में यद्यपि कृष्ण महापुरुष के रूप में अंकित हैं तथापि इसमें उनका यह रूप अनुषंगिक है।

उपाध्याय जी ने वैज्ञानिक और बुद्धि-प्रधान के युग में एक नए कृष्ण और नयी राधिका दी है। यहाँ कृष्ण, एक शुद्ध मानव रूप में है और उन्हें विश्व मंगल में संल्गन एक जन-नेता के रूप में चित्रित किया गया है। राधा आधुनिक युग की प्रबुद्ध नारी के रंग में रंगी है। वास्तव में हरिऔध ने राधा के माध्यम से राष्ट्रीय जीवन की एक केंद्रीय समस्या का उद्घाटन किया है और उसका स्थूल-सा-समाधान भी उपस्थित किया है।

कशमीर सुषमा

श्रीधर पाठक ने कश्मीर सुषमा की रचना सन् 1904 में थी। श्रीधर पाठक ने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में अच्छी कविता की हैं। आधुनिक काल के खड़ी बोली के प्रथम समर्थक कवि भी है, श्रीधर पाठक। इन्होंने कश्मीर सुषमा कविता के लिए सुन्दर लय, ताल और स्वर के भी नये ढांचे निकाले। कश्मीर सुषमा कविता में छंद, पद - विन्यास आदि के संबंध में इन्होंने नवीन सूझ - बूझ से काम लिया ।

कश्मीर सुषमा में वर्णित श्रीधर पाठक के प्रकृति वर्णन देखिए :-

बीता कातिक मास शरद् का अन्त है।

लगा सकल सुखदायक ऋतु हेमन्त ।।

कश्मीर सुषमा कविता में सुरुचि-संपन्नता, भावुकता और प्रतिभा के सर्वत्र दर्शन होते है। कश्मीर सुषमा में वर्णित सब बातों पर विचार करने से यह स्पष्ट है कि स्वच्छंदतावाद के बहुत से चिन्हों का आभास मिलता है, अतः श्रीधर पाठक को स्वचछन्दतावाद का प्रवर्तक भी कहा जा सकता है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

खडीबोली भाषा की परिमार्जता

द्विवेदी युगीन काव्य की श्रेष्ठता।

काव्य में संकलित ऐतिहासिक तत्व।

आधुनिक काल के प्रथम खडीबोली कवि ।

Critical Overview / अवलोकन

द्विवेदी युगीन कवियों की काव्य रचना अद्वितीय है, साथ ही प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। द्विवेदीयुगीन काव्य में प्राचीन रूढ़ियों और निरर्थक परंपराओं के प्रतिरोध की भावना है। कवियों की दृष्टि जीवन के नवीन मूल्यों और आदर्शों के प्रति उन्मुख हुई। गुप्त, उपाध्याय, पाठक तथा रामनरेश त्रिपाठी ने पौराणिक तथा ऐतिहासिक पात्रों की सृष्टि बुद्धिवादी युग के आदर्शो के अनुरूप की।

Recap / पुनरावृत्ति

- द्विवेदी युग
- द्विवेदी युगीन प्रमुख कवि
- प्रमुख कवियों की अत्यंत श्रेष्ठ रचनाएँ
- राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त और उनके श्रेष्ठ रचनाएँ
- श्रीधर पाठक और खडीबोली
- खडीबोली के प्रथम महाकाव्य - प्रियप्रवास
- काव्य में उपलब्ध इतिवृत्तात्मकता
- काव्य में उपलब्ध-राष्ट्रीयता, साम्प्रदायिकता एवं प्रान्तियता

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मिलन की विधा क्या है ?
2. यशोधरा काव्य किस कोटी की रचना है ?
3. साकेत खण्डकाव्य की नायिका कौन है ?
4. साकेत में कुल कितने सर्ग है ?
5. बूद्ध देव की पत्नी का नाम क्या है ?
6. प्रियप्रवास किस कोटि के रचना है ?
7. रामनरेश त्रिपाठी की दो काव्य रचनाओं का नाम लिखिए ?
8. साकेत शब्द का अर्थ क्या है ?
9. काशमीर सुषमा किसकी कृति है ?

Answers उत्तर

1. प्रेमाख्यान खण्डकाव्य
2. चम्पु काव्य
3. ऊर्मिला
4. बारह (12)
5. यशोधरा
6. महाकाव्य
7. पथिक , मिलन
8. अयोध्या
9. श्रीधर पाठक

Assignments प्रदत्त कार्य

1. साकेत काव्य आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में ऊर्मिला का चरित्र चित्रण लिखिए।
2. यशोधरा काव्य की ऐतिहासिकता ।
3. साकेत की नायिका का वर्णन कीजिए ?
4. यशोधरा काव्य की उद्देश्य क्या है ?
5. मिलन काव्य की सन्देश क्या है ?

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : संपादक नगेन्द्र
2. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ- डॉ. शिवकुमार शर्मा ।
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : सत्यदेव मिश्र ।

BLOCK - 02

छायावाद और प्रगतिवाद

इकाई : 1

छायावाद—नामकरण और प्रवृत्तियाँ, उद्भव के कारण और परिस्थितियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावादी में रहस्यानूभूति का स्वरूप समझता है।
- छायावादी काव्य-भाषा की विवेचना समझता है।
- छायावादी कविता की स्वचछन्त कल्पना का परिचय प्राप्त होता है।
- छायावादी काव्यों के सौन्दर्य बोध समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आधुनिक काल में भारतेंदु युग तथा द्विवेदी युग में राष्ट्रीय भावना तथा देश प्रेम की कविताएँ थी। इन काव्यों में इतिवृत्तात्मकता की प्रधानता है। इससे ऊबकर एक नवजागरण की प्रवृत्ति हिन्दी जगत में आया और वह है छायावाद। छायावाद एक प्रकार की रहस्यवादी काव्यानदोलन है, साथ ही स्वचछन्दतावादी काव्य पद्धति भी है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भावपक्ष में - व्यक्तिवाद, निराशा एवं वेदना, प्रकृति का मानवीकरण, मानवतावाद, राष्ट्रीयकरण, जिज्ञासात्म रहस्यवाद आदि।

कलासक्ष में - नवीन छन्द विधान, लाक्षणिक शब्दावली, नवीन प्रतीकों ।

Discussion / चर्चा

कविता में आधुनिकता के सूत्रपात छायावादी युग में हुआ है। हिन्दी साहित्य में छायावाद का आगमन द्विवेदीयुगीन काव्य प्रवृत्ति की प्रतिक्रिया की उपज माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मत में – "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में है - एक तो कवि उस अनंत-अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर चित्रमयी भाषा में प्रेम के अनेक प्रकार की व्यंजना करता हैं। दूसरा प्रयोग, काव्य-शैली या पद्धति-विशेष के व्यापक अर्थ में है।"

छायावाद के बारे में डॉ. रामकुमार वर्मा के मत उल्लेखनीय है – "परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा में,यही छायावाद है।"

"स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह" कहकर डॉ. नगेन्द्र ने छायावाद का परिचय दिया है।

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार - 'मानस अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भाव ही छायावाद है।'

2.1.1 छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

छायावादी काव्य में अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं, इनमें प्रमुख है :-

- विचारगत
- शैलीगत
- विषयगत प्रवृति के अन्तर्गत तीन प्रकार की वर्णन हुई है –
  नारी सौन्दर्य और प्रेम वर्णन ।

प्रकृति-सौन्दर्य और प्रेम वर्णन ।

अलौकिक प्रेम अथवा रहस्यवाद ।

2.1.1 नारी सौन्दर्य और प्रेम वर्णन

छायावादी कवियों ने सौन्दर्य के स्थूल चित्रण कम किया है, उसके सूक्ष्म रूप का वर्णन किया है। वे किसी रूढ़ी, मर्यादा या नियमबद्धता को स्वीकार नहीं किया है। इनके प्रेम की दूसरी विशेषता उसमें निहित वैयक्तिकता है। हिन्दी के आरंभ काल से श्रृंगारी कवियों ने प्रेम-वर्णन किया है। लेकिन प्रेममार्गी शाखा के कवियों को छोड़कर बाकी सभी ने राधा, पद्मिनी, उर्मिला,यशोधरा आदि को प्रेम का माध्यम बनाया है। किंतु छायावादी कवियों ने निजी प्रेमानुभूतियों की वर्णन किया है।

छायावादी कवियों का प्रेम स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म है। इन्होंने सूक्ष्म भाव दशाओं का खुलकर वर्णन किया है। भावात्मकता, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता और कोमलता आदि गीति शैली के सभी गुण छायावादी कविता में उपलब्ध है। लेकिन प्राचीन रूढियों को तोडने की इस भावना ने हमारे यहाँ सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र को झकझोर डाला था।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

छायावाद काव्य में प्रगीत तत्व ।

छायावादी काव्य में प्रबंध कल्पना ।

मानवतावाद ।

Critical Overview / अवलोकन

छायावाद का उज्जवलतम पक्ष उसका मानवतावाद है। छायावादी काव्ययुग गीति –प्रधान युग है। छायावाद काव्य की भाव, भाषा, छन्द अलंकार, प्रतीक आदि में पूर्ण स्वचछन्दता को अपनाया गया। इसी स्वतंत्र के कारण छायावाद में भाषा का जैसा परिमार्जन हुआ, वैसा और किसी युग में नहीं हो सका ।

Recap / पुनरावृत्ति

- द्विवेदी युग के बाद आनेवाले काव्य धारा
- समयावधि 1920 - 1936 ई
- स्वच्छंदतावादी काव्य धारा
- रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ
- छायावादी काव्य की भाव पक्ष
- छायावादी काव्य की कलापक्ष
- मानवतावाद
- प्रबंधात्मक काव्य धारा
- सौन्दर्य बोध

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. द्विवेदीयुग के बाद आनेवाले युग का नाम क्या है ?
2. छायावाद का दूसरा नाम क्या है ?
3. छायावाद की समयावधि क्या है ?
4. छायावाद की एक प्रमुख प्रवृत्ति लिखिए ?
5. छायावाद नामकरण किसने दिया ?
6. किसने छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह माना ?
7. छायावाद किस काल के अन्तर्गत आने वाले युग है ?
8. किसने छायावाद को रहस्यवाद से अभिन्न माना?

Answers उत्तर

1. छायावाद ।
2. रहस्यवाद ।
3. 1920- 1936 ईं ।
4. मानवतावाद ।
5. मुकुटधर पाण्डेय ।
6. नगेन्द्र ।
7. आधुनिक काल।
8. डॉ. रामकुमार वर्मा ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए ।
2. छायावाद नामकरण की समस्या ?
3. छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या है ?
4. छायावाद काव्य में व्यक्त प्रकृति चित्रण का वर्णन कीजिए ?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई : 2

छायावाद के प्रमुख कवि- प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, सियाराम शरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', आरसी प्रसाद सिंह, गोपाल सिंह नेपाली

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावाद के प्रमुख कवियों का परिचय प्राप्त होता है।
- छायावादी काव्य के चार आधार स्तंभों के बारे में समझता है।
- छायावादी काव्य की विशेषताएँ समझता है।
- छायावादी कवियों की स्वचछन्दतावादी दृष्टिकोण का परिचय मिलता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

छायावादी काव्य एक नितान्त सरस, रूमानी, भाव प्रवण, कल्पना प्रधान काव्य धारा है, जिसके स्वरूप का रेखांकन कठिन है। छायावाद के चार आधार स्तंभ हैं -जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त, सूर्यकान्तत्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा। छायावाद के आधार स्तंभों में प्रसाद जी प्रथम है। छायावादी कविता की मूल प्रवृत्ति उसकी सौन्दर्यानुभूति है। छायावादी कवियों ने प्रकृति के सौन्दर्याभिव्यक्ति के साथ ही नारी के सौन्दर्य का चित्रण भी अनेक रूपों में किया है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- चार आधार स्तंभ
- उनकी प्रमुख रचनाएँ।
- प्रति निधि काव्य- कामायनी।

Discussion / चर्चा

छायावादी काव्य अनुभूति एवं अभिव्यक्ति दोनों पक्ष में नवीनता एवं ताज़गी से परिपूर्ण है। छायावादी काव्य की मूल प्रवृत्ति उसकी सौन्दर्याभिव्यक्ति है। इस युग के रचनाओं में सूक्ष्म सौन्दर्य सत्ता की प्रतिष्ठा है, साथ ही सौन्दर्य बोध के भाव का विस्तार भी। छायावादी कवियों ने यथावसर रहस्यवादी अनुभूतियों को भी स्वर दिया है। उनका रहस्यवाद भावात्मक है, जो प्रकृति के माध्यम से व्यक्त होता है।

जयशंकर प्रसाद

2.2.1 छायावाद के प्रमुख कवि और रचनाएँ

छायावाद के चार प्रमुख कवि हैं –

जयशंकर प्रसाद।

सुमित्रानन्दन पन्त।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।

महादेवी वर्मा ।

जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी के आदरणीय महाकवि,

कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, एकांकीकार एवं निबंधकार भी है। उनका जन्म 30 जनवरी 1890 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। घर पर से उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी, और उर्दू में अध्ययन किया था। प्रसाद छायावाद के प्रौढ़तम श्रेष्ठ कवि हैं।

जयशंकर प्रसाद ने आरम्भ में ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं हैं। 1913-14 में वे खड़ी बोली में कविता लिखने लगे। उनके प्रमुख काव्य ग्रन्थों में- 'चित्राधार', 'प्रेम पथिक', 'करुणालय', 'महाराणा का महत्व', 'कानन कुसुम', 'झरना', 'आँसू', 'लहर' और 'कामायनी' आदि महत्वपूर्ण है। 'कामायनी' महाकाव्य उनकी अंतिम काव्य-कृति है। 'प्रेम पथिक' लघु प्रबन्ध काव्य है। 'आँसू' खण्ड काव्य है, जो विरह काव्य है। 'कानन कुसुम', 'झरना', 'लहर स्फुट' कविताओं के संग्रह हैं।

बीती विभारी जाग री
अम्बर पनघट पर डूबो रही तारा घट ऊषा नागरी
खग-कुल-कुल-सा बोल रहा ,
किसलय का अंचल डोल रहा ,
लो यह लतिका भी भर लायी ।
मधु-मुकुल नवल रस- गागरी ।

जयशंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक आदि उनके उल्लेखनीय काव्य ग्रंथ है। सन् 1935 में प्रकाशित उनकी कामायनी महाकाव्य हिन्दी के महत्वपूर्ण काव्यों में एक हैं।

सुमित्रानंदन पंत

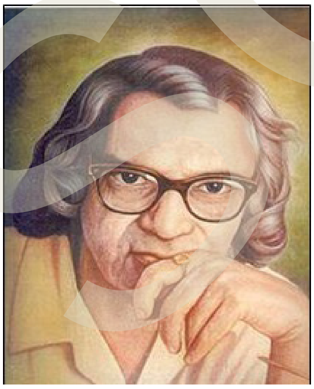

कविवर सुमित्रानंदन पंत छायावादी काव्यधारा के महान कवियों में एक हैं। पंत छायावाद आदर्शवाद का चौथा स्तंभ है। छायावाद काव्य की सभी विशेषताएँ पंत की कविता में पायी जाती है।

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया ।
बाले तेरे रूप बाल में कैसे उलझा दूँ लोचन ?
छोड़ अभि से इस जग को ।

पंत में कल्पना की स्वच्छंद उड़ान, अत्यंत दुर्लभ मनोरम प्रकृति चित्रण, प्रकृति एवं मानव जीवन के अटूट संबंध की ज़रूरत आदि विशेषताएँ मिलती है। पंत को प्रकृति के सुकुमार कवि कहते हैं।

महाकवि पंत का जन्म हिमालय के तराई अल्मोड़ा में हुआ था। बचपन में उनकी माता का देहांत हो गया। आगे मातृहीन पंत हिमालय की गोद पर पला। इसलिए उनकी कविता में हिमालय की प्राकृतिक सुषमा जोरों पर मिलती है। पंत छायावाद के संस्थापक कवियों में एक है। उनके चिदम्बरा शीर्षक महाकाव्य को 1968 में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है।

सन् 1921 में महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्होंने कालेज का अध्ययन छोड़ दिया। बाद में आप इलाहाबाद में आकाशवाणी के अधिकारी रहे। सन् 1961 में उन्हें पद्म भूषण उपाधि मिला है।

वीणा, पल्लव, गुंजन आदि पंत के छायावादी काव्य संग्रह है। इसके अलावा ग्राम्या, युगान्त, युगवाणी, स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि, युगपथ, उत्तरा, रजत रश्मि, कला और बूढ़ा चाँद, चिदम्बरा आदि पंत की उल्लेखनीय काव्य कृतियाँ है। चिदम्बरा महाकाव्य पर सर्वोच्च पुरस्कार ज्ञानपीठ प्राप्त हुआ है।

सुमित्रानन्दन पंत का देहांत 28 दिसम्बर 1977 को हुआ था ।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

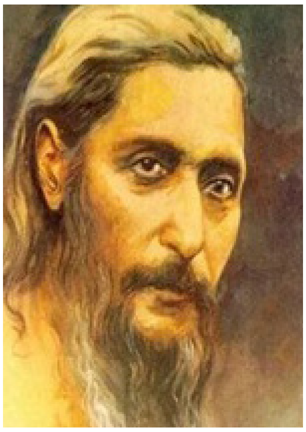

सूर्यकांत त्रिपाठी का उपनाम है निराला। निराला हिन्दी साहित्य जगत में महाप्राण विशेषण से सुपरिचित है। उनका

जन्म 21 फरवरी 1897 में पश्चिम बंगाल के मेदनीपुर (वर्तमान नाम मिटनापुर) के महिषादल में हुआ था।

हिन्दी साहित्य में पहली मुक्त छन्द का अवधारणा करनेवाली कवि है निराला। मुक्त छन्द की पहली कविता जूही की कली हिन्दी जगत में अद्वितीय है।

- प्रगतिवादी कवि “दर्शन में जिसे द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद माना गया है, राजनीति में जो साम्यवाद है, वही साहित्य में प्रगतिवाद है।”

बोले रघुमणि - मित्रवर, विजय होगी न समर,
यह नहीं रहा नर- वानर का राक्षस से रण।।
उतरीं पा महाशक्ति रावण से आमन्त्रण।
अन्याय जिधर है उधर शक्ति।

‘अपरा’, ‘अप्सरा’, ‘अनामिका’, ‘अर्चना’, ‘आराधना’, ‘अलका’, ‘अणिमा’, ‘परिमल’, ‘गीतिका’, ‘राम की शक्ति पूजा’, ‘तुलसीदास’, ‘सरोज स्मृति’ आदि निराला की उल्ले-खनीय काव्य रचनाएँ है। इसमें ‘सरोजस्मृति’ अपनी बेटी के असमय मृत्यु पर दुःखी होकर रची गयी शोकगीत है।

महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का निधन 14 अक्तूबर 1961 में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध पद्यकार एवं गद्यकार हैं। महादेवी वर्मा के वैयक्तिक जीवन और काव्य जीवन में भक्तिकालीन कृष्ण भक्त कवयित्री मीराबाई का प्रभाव होने से उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से पुकारते है।

महादेवी का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तर प्रदेश के फर्रूख़ाबाद में हुआ था । उन्होंने संस्कृत में एम. ए. पास करने के उपरांत पहले प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रोफ़ेसर और बाद में प्रिंसिपल का काम किया। उनकी कविता का मूल भाव प्रेम के पीर, दुःख एवं कारण है। 1930 में प्रकाशित ‘नीहार’, 1932 में प्रकाशित ‘रश्मि’, 1934 में प्रकाशित ‘नीरजा’, 1936 में प्रकाशित ‘सांध्यगीत’ और ‘यामा’ आदि महादेवी वर्मा के उल्ले-खनीय काव्य ग्रंथ है। ‘यामा’ नामक काव्य पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है। ‘श्रृंखला की कड़ियाँ’, ‘अतीत के चलचित्र’, ‘स्मृति की रेखाएँ’ आदि महादेवी के प्रौढ़ गद्य ग्रंथ है।

मैं नीर भरी दुःख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा;
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक-से जलते पलकों में निर्झरिणी मचली!

महादेवी वर्मा को 1941 में ‘स्मृति की रेखाएँ’ ग्रंथ पर द्विवेदी पदक, 1943 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मंगला प्रसाद पुरस्कार, 1943 में भारत-भारती पुरस्कार, 1956 में पूरी साहित्य सेवा के लिए पद्म भूषण, 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1982 में ‘यामा’ पर ज्ञानपीठ पुरस्कार, 1988 में पद्म विभूषण पुरस्कार, तदनंतर विक्रम, कुमाऊँ, दिल्ली व बनारस विश्वविद्यालयों द्वारा डी. लिट. की मानद उपाधियाँ आदि प्राप्त हुई है। 80 वर्ष की आयु में 11 सितम्बर सन् 1987 को प्रयाग में महादेवी वर्मा स्वर्ग सिधार गयी ।

- **माखनलाल चतुर्वेदी**

रचनाएँ: ‘हिमकिरीटिनी’, ‘हिमतरंगिणी’, ‘माता’।

- **सियाराम शरण गुप्त**

रचनाएँ : ‘बापू’, ‘दूवार्दल’, ‘पाथेय’, ‘मृण्मयी’, ‘मौर्य विजय’।

- **बालकृष्ण शर्मा नवीन :**

रचनाएँ: ‘कुंकुंम’, ‘ऊर्मिला’, ‘अपलक’, ‘रश्मिर रेखा’, ‘क्वासि’, ‘हम विषपायी जनम के’।

- **डॉ रामकुमार वर्मा**

रचनाएँ: ‘रूपराशि’, ‘निशीथ’, ‘चित्ररेखा’, ‘आकाशगंगा’।

- **रामधारी सिंह दिनकर**

‘हुँकार’, ‘रेणुका’, ‘रश्मिरथि’, ‘दिल्ली’, ‘रसवंति’, ‘इतिहास के आँसू’, ‘द्वन्द्वगीत’, ‘धूप और धुआँ’, ‘कुरुक्षेत्र’।

- **सुभद्रा कुमारी चौहान**

रचनाएँ : चित्र धारा, मुकुल।

- **आरसि प्रसाद सिंह**

रचनाएँ: ‘कलापि’, ‘पांचजन्य’।

- **गोपाल सिंह नेपाली**

रचनाएँ: ‘उमंग’, ‘पंछी’, ‘रागिनी’, ‘पंचमी’, ‘नवीन’, ‘नीलिमा’।

छायावादी कवियों की कविता में युगानुरूप राष्ट्रीय भावना एवं देश-प्रेम की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पन्त तथा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला छायावाद की बृहत्त्रयि है। प्रसाद यदि छायावादी युग के ब्रम्ह, पन्त विष्णु तो निराला जी उसके शिव शंकर हैं। महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा एवं माखनलाल चतुर्वेदी छायावाद की लघुत्रयी के अन्तर्गत आते है।

छायावाद के महासागर में और भी अनेक नदी तथा नदों ने योगदान दिया जिसमें बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान एवं सियाराम शरण गुप्त आदि का नाम उल्लेखनीय है। छायावादी युग की काव्य धारा के समकालीन रामधारी सिंह दिनकर तथा आरसी प्रसाद सिंह तथा गोपाल सिंह नेपाली आदि भी विशेष उल्लेखनीय हैं।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

कामायनी काव्य में मानवतावाद।

पहली मुक्त रचना।

हिन्दी साहित्य का पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार - पन्त जी (चितंबरा काव्य संकलन 1968)।

Critical Overview / अवलोकन

आधुनिक काल के श्रेष्ठ युग।

कामायनी महाकाव्य का जन्म।

छायावाद के बृहत्रय।

Recap / पुनरावृत्ति

- छायावादी काव्य धारा की मुख्य प्रवृत्तियाँ
- छायावाद का समय सीमा - 1920 - 1936 ई
- स्वच्छंदतावादी काव्य धारा
- रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ
- छायावादी काव्य धारा - चार आधार स्तंभ
- छायावादी काव्य की कलापक्ष
- प्रमुख छायावादी कवि और उनके रचनाएँ
- प्रमुख कवियों का योगदान

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. छायावाद के प्रतिनिधि कवि कौन है ?
2. मुक्त छंद की पहली रचना क्या है ?
3. प्रकृति के कवि कौन है ?
4. आधुनिक मीरा कौन है ?
5. कामायनी किस विधा की रचना है ?
6. हिमकिरीटिनी की रचयिता कौन है ?
7. महादेवी वर्मा को किस रचना पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला ?
8. कुरुक्षेत्र के रचयिता कौन है?

Answers उत्तर

1. जयशंकर प्रसाद
2. जूही की कली
3. सुमित्रानंदन पंत
4. महादेवी वर्मा
5. महाकाव्य
6. माखनलाल चतुर्वेदी
7. यामा काव्य संकलन पर (1982)
8. रामधारी सिंह दिनकर

Assignments प्रदत्त कार्य

1. छायावाद के चार आधार स्तंभ के बारे में लिखिए।
2. प्रकृति के कवि के बारे में लिखिए।
3. कामायनी काव्य की विशेषता क्या है?
4. निराला के बारे में लिखिए।
5. प्रमुख छायावादी कवि और उनके रचनाएँ लिखिए।

इकाई : 3

कामायनी, आंसू, जूही की कली, राम की शक्ति पूजा, सरोजस्मृति, सांध्यगीत, दीपशिखा, प्रथम रश्मि, गुंजन, नौका विहार (सामान्य परिचय)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छायावाद की पहली मुक्तक छन्द की कविता 'जुही की कली' से परिचय प्राप्त होता है।
- पल्लव काव्य में चित्रित प्रकृति वर्णन समझता है।
- आँसू काव्य में चित्रित विरह वर्णन समझता है।
- सरोज स्मृति में चित्रित वियोग वर्णन समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

छायावाद ने आधुनिक काव्य परंपरा को विकसित और परिमार्जित कर उसे एक सहज माधुरी और सुकुमारता प्रदान की। इस नवीन प्रगीत काव्य के प्रतिनिधि कवि प्रसाद, पंत, निराला एवं महादेवी वर्मा है।

कामायनी, आँसू, जूही की कली, राम की शक्तिपूजा, सरोजस्मृति, सांध्यगीत, दीपशिखा, प्रथम रश्मि आदि प्रमुख छायावादी काव्य रचनाएँ है। इन काव्यों में हिन्दी को नई भाषा, नया छंद, विधान, नया शास्त्र, नयी भावना और नया प्रकार दिया ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- स्वच्छंदतावादी काव्य दृष्टि ।
- विरह वर्णन ।
- प्रेम वर्णन।
- प्रकृति की मनोरम चित्र ।

Discussion / चर्चा

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला - जूही की कली

निराला की 'जूही की कली' हिन्दी के प्रथम छायावादी कविता माने जाते है।

कवि कहते हैं कि विजन-वन वल्लरी में रहने वाली जुही की कली विरह व्यथा में बहुत पीड़ित है। क्योंकि उनके प्रियतम पवन (हवा) जुही की कली को छोड़कर दूर-विदूर की मलय गिरी पर्वत की ओर चला गया था। प्रेमी के विरह में जुही की कली तड़प रही है। उनके वियोग तीव्र एवं असहनीय है।

विजन वन वल्लरी पर
सोती थी – सुहाग भरी – स्नेह स्वप्न मन
अमल- कोमल -तरु तरुणि जूही की कली

प्रेमी पवन जुही की कली को छोड़कर जाने के बाद वह अपने प्रेमी के स्वप्न में खोई हुई रहती। जुही की कली की उदासीनता में हुई अतृप्ति पवन पर बड़ी प्रतिक्रिया पैदा करती हैं। नहीं तो वह अपनी झोंके से जुही की कली के कोमल शरीर पर आघात न लगता है। बेसुध सपने से सुध पायी जुही की कली पवन के झोंके में हड़बड़ा कर उठ जाती है। तब अचानक अपने पास अपने प्रेमी पवन को देखकर वह खुशी से पुलकित हो जाती है। तब ही दोनों, प्रेमी- प्रेमिकाओं के वियोग-पीड़ा दूर हो जाता है, दोनों अनुरक्त हो जाता है। आगे दोनों आलिंगन

बद्ध हो जाता है। दोनों के मिलन से आसपास की प्रकृति मुग्ध हो उठे। प्रेमी पवन और प्रेमिका जुही की कली अपार प्रेम के रंग में डूब जाते हैं।

निराला - सरोज स्मृति :

सरोज स्मृति अपनी बेटी के असमय मृत्यु पर दुःखी होकर रची गयी शोकगीत है। सरोज स्मृति निराला द्वारा रचित अनामिका नामक काव्य संग्रह का प्रसिद्ध शौक गीत है। यह रचना उन्होंने सन् 1935 में अपनी प्रिय पुत्रि सरोज के अकाल निधन पर लिखी थी। सरोज स्मृति मात्र एक शोकगीत है,वेदना का महाकाव्य है। यह एक हल्की कथा नहीं, निराला जी के संपूर्ण संघर्षमय जीवन का आहत इतिवृत है।

दुख ही जीवन की कथा रही है
क्या कहुँ आज जो नहीं कहीं।।

इस रचना में निराला ने पुत्रि सरोज के प्रति अपनी ममता, उसके अलौकिक एवं निर्लिप्त सौन्दर्य, उसके विवाह में पंडित पुरोहित एवं माता का कार्य हृदयद्रावी वर्णन किया है।

निराला - राम की शक्तिपूजा

'राम की शक्तिपूजा' निराला के 'अनामिका' नामक कविता संग्रह की सबसे महान रचना है। कृत्तिवास ओझा कृत 'कृत्तिवास रामायण' का इस रचना पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। किन्तु इस रचना की मूल प्रेरणा उन्हें मूल प्रेरणा तुलसी तथा उनके 'रामचरितमानस' से ही प्राप्त हुई। किन्दु इस रचना की मूल प्रेरणा उन्होंने तुलसी तथा उनके 'रामचरितमानस' से ही प्राप्त हुई। बंगाल में प्रचलित शक्ति पूजा का भी व्यापक प्रभाव इस पर देखा जा सकता है।

निराला की इस लंबी कविता में राम और रावण के युद्ध का वर्णन है। राम सत्य और सात्विक वृत्ति के प्रतीक हैं और रावण असत्य तथा तामसिक वृत्ति का प्रतीक है। राम-रावण के बीच ही नहीं, समस्त मानव जाति के मन में होता है। इस रचना में निराला का अपना जीवन संघर्ष भी उभर कर सामने आया है। अपने व्यापक उद्देश्य और उदात्त कला-तत्वों के कारण इस रचना को प्रबंधात्मक रूप दिया जा सकता है।

2.3.1 महादेवी वर्मा - सांध्यगीत

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध पद्यकार एवं गद्यकार हैं। महादेवी वर्मा के वैयक्तिक जीवन और काव्य जीवन में भक्तिकालीन कृष्ण भक्त कवयित्री मीराबाई का प्रभाव होने से उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से पुकारते हैं।

'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' नामक कविता के माध्यम से महादेवी वर्मा कहती है कि मेरे मन के दीपक, तू निरंतर जल कर रहे। मैं जिस रास्ते से परमात्मा की ओर जाता हूँ, उस रास्ते को प्रकाश पूर्ण बना दो। हे मेरे दीपक, तू मधुरता और कोमलता से ज्ञान का रास्ता आलोकित करते रहें। दीपक से कवयित्री निवेदन करती है कि जैसे धूम या अगरबत्ती अपने सुगंध को फैलाते हैं, वैसे तू अपने सुगंध को फैला दे।

हृदय रूपी दीपक से निवेदन करती हुई कवयित्री बताती है कि कभी भी तेरे प्रकाश की कोई सीमा न रहे, तू असीमित जले रहे। कवयित्री निवेदन करती है कि जैसे मोम बत्ती स्वयं जलकर चारों ओर प्रकाश फैलाते है, ठीक वैसे अपने शरीर रूपी मोम को जलाकर प्रकाश फैला दें। तू स्वयं पिघला कर अपने घमंड को दूर करें। कवयित्री ने यहाँ अपनी आस्था को दीपक कहा गया है। कवयित्री अपने मन को प्रियतम परमात्मा की प्राप्ति के लिए आलोक देने का निवेदन करती है। उससे उनकी प्रार्थना है कि प्रसन्नता के साथ निरंतर जल दें ।

महादेवी वर्मा कहती है कि आजकल पूरे संसार में परमात्मा के प्रति विश्वास का अभाव देख सकता है। सारी कोमल प्राणी परमात्मा की भक्ति से वंचित हैं। अथवा संसार में चारों तरफ तम पड़ी हुई है। तब आस्था की ज्योति द्वारा संसार को ढूंढना पड़ती हैं। किंतु कवयित्री को कहीं से कुछ भी प्राप्त नहीं होती है। अपने दुर्भाग्य पर संसार रूपी पतंग पश्चाताप कर रो रहा है। क्योंकि उसे परमात्मा की भक्ति रूपी प्रकाश चाहिए। कवयित्री का कथन है कि मैं अपने अहंकार रूपी ज्योति को क्यों छोड़ नहीं देती? अहंकार छोड़ता तो परमात्मा का मिलन हो जाता है।

महादेवी वर्मा - दीपशिखा

दीपशिखा महादेवी वर्मा का पांचवा कविता संग्रह है। इसका प्रकाशन 1942 में हुआ ।

इस काव्य के गीतों का मुख्य प्रतिपाद्य स्वयं मिटकर दूसरे को सुखी बनाना है।

प्रकृति-चित्रण, रहस्यवादी भावना, देश- प्रेम का भाव, प्रेम विरह का चित्रण, वेदना एवं निराशा आदि इस काव्य की विशेषताएँ है। इस तरह समस्त छायावादी प्रवृत्ति या इनके काव्य में मिल जाती है। दुखवाद उनकी सिद्धि और साधना दोनों ही है। महादेवी वर्मा के रहस्यवाद की मौलिकता यह है

कि उनका प्रिय प्रेममात्र के साथ ही प्रेममय भी है। वह अपनी प्रेमिका से मिलने को आतुर बना रहता है। महादेवी वर्मा ने अपने संपूर्ण जीवन को विरह का जलजात माना है।

2.3.1.1 सुमित्रानंदन पंत - प्रथम रश्मि

'प्रथम रश्मि' कविता में कवि ने सुबह की प्रथम किरण के साथ ही साथ प्रकृति में होने वाले स्वाभाविक बदलाव का बड़ा ही सटीक और मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत कविता में कवि अपना यह शंका एक जगह ही नहीं, कई स्थान में प्रकट करते हैं। प्रथम रश्मि के आने से पहले पूरा विश्व स्तब्ध था, मूर्चछित था, जड चेतन सब एकाकार थे, पूरे विश्व में जैसे शून्याकाश था, इसमें सिर्फ सांसों का आना जाना था लेकिन अब चेतना जाग गई है।

कवि इस परिवर्तन को कौतूहल से देखाता है। उसे आश्चर्य होता है कि चिडियों को सूर्य के आने का पता कैसे चल जाता है।

कवि संशय से पूछते है कि तुम्हें प्रथम रश्मि के आने की पता, रश्मि के आगमन से बहुत समय पहले कैसे मिला? पंत बड़ा होकर भी यहाँ बालसुलभ जिज्ञासा उठाता है।

'प्रथम रश्मि का आना रंगिनि

तूने कैसे पहचाना ?

कहाँ कहाँ ! हे बाल - विहंगिनि !

पाया, तूने यह गाना ?'

कवि यहाँ भोर के पहले का मनोरम तथा प्रकृति की रमणीय दृश्य उपस्थित कर छायावादी कविता की विशेषताएँ साबित करने का प्रयास करता हैं।

सुमित्रानंदन पंत - गुंजन

गुंजन में पंत जी जगत और जीवन के प्रकृत क्षेत्र के भीतर और बढते हुऐ पाते है। प्रत्यक्ष बोध से अतृप्त होकर कल्पना की स्रचिरता से तृप्त होने और बुद्धि व्यापार से कलांत होकर रहस्य की छाया में विश्राम करने की प्रवृत्ति साथ ही साथ बनी हुई है।

कवि जीवन का उद्देश्य बताता है इस चारों ओर खिले हुए जगत की सूषमा से हृदय को संपन्न करना है:-

क्या यह जीवन ? सागर में जलभार मुखर भर देना !

कुसुमित पुलिनों की क्रीडा व्रीडा से तनिक न लेना ?

गुंजन में भी पंतजी की प्रतिभा बहुत ही व्यंजक और रमणीय साम्य जगह सामने लाती है।

सुमित्रानंदन पंत - नौकाविहार

जन्म के पश्चात मृत्यू और मृत्यू के पश्चात जन्म जीवन का अटल धर्म है। नौका विहार आनंद में मैं तो अपनी सत्ता को ही भूल बैठा है, मुझे अपनी भी सुध नहीं रही, किन्तु यह तो जीवन का चिरन्तन प्रमाण है।

कवि ने बड़ी कुशलता से जीवन की नौका विहार का दार्शनिक रूप दे दिया है। लेकिन, यह दार्शनिकता काव्यमयी है। अद्वैतवादी दर्शन के अनुसार मृत्यु के उपरांत आत्मा ब्रम्ह में लीन हो जाती है और एक अभी तो बाद ही दर्शन के अनुसार मृत्यु के उपरांत आत्मा ब्रम्ह में लीन हो जाती है और यह तल्लीनता उसे अमरता प्रदान करती है।

'नौकाविहार' का वर्णन अप्रस्तुत आरोपों से अधिक आच्छादित होने पर भी प्रगति के प्रत्यक्ष रूपों की ओर कवि का खिंचाव सूचित करता है।

2.3.1.2 जयशंकर प्रसाद : कामायनी

जयशंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। 'कानन कुसुम', 'महाराणा का महत्व', 'झरना', 'आँसू', 'लहर', 'कामायनी', 'प्रेम पथिक' आदि उनके उल्लेखनीय काव्य ग्रंथ है। सन् 1935 में प्रकाशित उनकी 'कामायनी' महाकाव्य हिन्दी के महत्वपूर्ण काव्यों में एक हैं।

'कामायनी' प्रसाद जी की अन्तिम किन्तु सर्वश्रेष्ठ कृति है और यह छायावाद का महाकाव्य है। मनु महाराज के मानसिक विकास और ब्राह्मा संघर्ष के रूप में आज के व्यक्ति के विकासोन्मुख व्यक्तित्व की ही अन्तर्कथा है।

- मनु आज के आत्म- चेतन व्यक्तिवादी व्यक्ति के प्रतीक हैं।
- इडा आधुनिक पूंजीवादी समाज के वर्ग - भेद और शोषण को मान्यताओं पर आधारित बुध्दि- तत्व की प्रतीक है।
- श्रद्धा मनुष्य की सहज मानवीय भावनाओं नाइट्रिक मूल्य श्रद्धा मनुष्य की सापेक्ष मानवीय भावनाओं नैतिक मूल्यों और सौहार्द्रता से युक्त मानव-हृदय की आस्थाशील श्रद्धा-तत्व की प्रतीक है।

इन तीनों पात्रों के माध्यम से प्रसाद जी ने आधुनिक पूंजीवादी प्रणीत सभ्यता और उसके समस्त अंतर्विरोधों असंगतियों का ऊहापोह विवेचन किया है।

प्रसाद जी आज के विडंबनामय जीवन का चित्रण करते हुए कहते हैं:-

'ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडंबना है जीवन की।'

उनका 'कामायनी' महाकाव्य मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित हुआ है।

जयशंकर प्रसाद - आँसू

1930-1932 के राष्ट्रीय आन्दोलन के दिनों में प्रसाद के आंसू काव्य का प्रकाशन हुआ था। जिसे प्रसाद जी की छायावद के संबंध में अत्यन्त प्रौढ़ रचना समझना चाहिए। 'आँसू' में प्रसाद ने प्रेम- वेदना की एक दिव्य झांकी प्रस्तुत की है। जिसमें सुख और दुख है। इसमें प्रसाद जी का व्यक्तिवाद आपने समग्र रूप में प्रकट हुआ है। 'आँसू' एक स्मृति काव्य है। कवि ने अतीत जीवन की अनुभूतियों को स्मृति के माध्यम से दर्द -भरी अभिव्यक्ति दी है आंसु की भावभूमि स्थायि नहीं, विकास शील है। उसमें कवि का अतीत (जो - स्मृति -पथ पर आता है) ही नहीं उसका वर्तमान भी संयुक्त है इसलिए अंत तक आते -आते कवि अपने अवसाद से ऊपर उठकर अपनी वेदना को करुणा के रूप में, विश्व प्रेम के रूप में रूपांतरित कर देता है। इसका कारण स्पष्ट है- छायावादी काव्य निराशावादी काव्य नहीं है, वह मानव समाज केलिए कल्याण की कामना से अलंकृत है।

छायावादी, काव्य के मूल में नवजागरण का भाव है। छायावादी कविता में युगारूप राष्ट्रीय भावना एवं देश- प्रेम की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। छायावादी कविता की मूल प्रवृत्ति उसकी सौन्दर्यानुभूति है। उनका रहस्यवाद भावात्मक है जो प्रगति के माध्यम से व्यक्त होता है। विषाद की अभिव्यक्ति छायावादी काव्य की एक और विशेषता है। महादेवी वर्मा का काव्य विषादमूलक है, जिससे उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है। पन्त और निरला की विविध कविताओं में विषाद के पुट निहित है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

छायावादी कविताओं की काव्यगत विशेषताएँ ।
स्वच्छंदतावादी दृष्टिकोण ।

Critical Overview / अवलोकन

हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठतम युग।
अद्वितीय कवियों का संकलन।
प्रबन्धात्मक रचना।
वैयक्तिक आशा निराशा, हर्ष -विषाद।
निम्न वर्गों के प्रति करुणा।
समन्वयात्मक दृष्टि।
छायावादी कवि प्रकृति में नारी का दर्शन करते है।

Recap / पुनरावृत्ति

- छायावाद
- प्रमुख कवि
- चार आधार स्तंभ
- काव्यगत विशेषताएँ
- मुक्त छन्द की अवधारणा
- कामायनी का उद्देश्य
- आधुनिक मीरा
- प्रकृति के मनोरम वर्णन

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. विरह की गायिका कौन है ?
2. निराला का पूरा नाम क्या है ?
3. पंत को किस काव्य केलिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला ?
4. प्रसाद की विरह काव्य का नाम क्या है ?
5. महादेवी वर्मा को किस काव्य केलिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला ?
6. आंसू किसकी रचना है ?
7. निराला के शोकगीत का नाम लिखिए।
8. राम की शक्ति पूजा किस कोटी की रचना है?

Answers उत्तर

1. महादेवी वर्मा ।
2. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ।
3. चिदंबरा (1968)।
4. आँसू ।
5. यामा काव्य संकलन - 1982 ई ।
6. जयशंकर प्रसाद।
7. सरोज स्मृति।
8. प्रबन्धात्मक रचना ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. छायावाद के प्रमुख कवि और उनके रचनाओं पर प्रकाश डालिए।
2. जुही की कली कविता का उद्देश्य क्या है ?
3. सांध्यगीत कविता का सारांश लिखिए ?
4. पन्त जी के प्रकृति वर्णन लिखिए ?
5. कामायनी महाकाव्य पर टिपणी लिखिए ।
6. 'महादेवी वर्मा विरह की गायिका है'- व्यक्त कीजिए ।

इकाई : 4

प्रगतिवाद - उदय और परिस्थितियाँ - प्रमुख प्रवृत्तियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रगतिवाद की परिस्थितियों के जानकारी प्राप्त होता है।
- प्रगतिवादी कविताओं की प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त होता है।
- प्रगतिवाद साम्यवादी विचारधारा से परिचय प्राप्त होता है।
- मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित कविताएँ सीखने का अवसर मिलता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रगतिवाद का समय सीमा सन् 1936 से 1943 तक मानते हैं। इसका सरल परिभाषा है - 'राजनीति के क्षेत्र में जो साम्यवाद है, वह काव्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद है।' हिन्दी में प्रगतिवादी काव्य छायावाद के समापन काल में सन् 1936 के आस-पास सामाजिक चेतना को लेकर विकसित हुआ। प्रगतिवादी कवियों पर मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव पड़ा है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मार्कस वाद, साम्यवाद, वैविध्य पूर्ण विषय

Discussion / चर्चा

प्रगतिवाद का समय सीमा सन् 1936 से 1943 तक मानते हैं। इसका सरल परिभाषा है- 'राजनीति के क्षेत्र में जो साम्यवाद है, वह काव्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद के नाम से जाने जाते हैं।'

हिन्दी में प्रगतिवादी काव्य छायावाद के अन्तिम काल में विकसित हुआ। प्रगतिवादी कविता में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक शोषण से मुक्ति का स्वर गूँजता है। प्रगतिवादी कवियों पर मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव पड़ा है।

2.4.1 प्रगतिवाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ

प्रगतिवादी कवि 'दर्शन में जिसे द्वन्द्वात्मक भौतिक माना जाता है, राजनीति में जो साम्यवाद है, वही साहित्य में प्रगतिवाद है।'

- प्रगतिवादी लेखक धर्म, ईश्वर, परलोक आदि का विश्वास नहीं करते हैं।
- प्रगतिवादी लेखक समाज में वर्ग संघर्ष को आवश्यक मानते हैं।
- प्रगतिवादी के अनुसार समाज में शोषक-शोषित वर्ग है, प्रगतिवादी शोषितों के हिमायती है।
- प्रगतिवादी पूँजीपति वर्ग से घृणा करते हैं।
- प्रगतिवादी नारी के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण रखते हैं।
- प्रगतिवादी की भाषा-शैली सरल है, जिससे अपनी रचनाओं को जन - साधारण तक पहुँचाना का प्रयास है।

प्रगतिवाद के प्रमुख कवि और रचनाएँ

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ('कुकुरमुत्ता', 'भिक्षुक'), सुमित्रानन्दन पन्त ('युगवाणी', 'ग्राम्या'), नरेन्द्र शर्मा, भगवतीचरण वर्मा, रामधारीसिंह 'दिनकर', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', शिवमंगल सिंह 'सुमन' ('हिल्लोल', 'जीवन के गान',

प्रलय सृजन), रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथसिंह (युग की गंगा, नींद के बादल), केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह आदि प्रगतिवादी कवियों में प्रमुख है।

प्रगतिवाद का काव्य में यथार्थ चित्रण होता है। सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण और सामान्य प्राकृतिक परिवेश का चित्रण। सामाजिक यथार्थ के अन्तर्गत जनसमूह की आर्थिक विषमता और राजनीतिक चेतना का चित्रण है। यह समाज के दो परस्पर विरोधी वर्गों से संबंधित है - पूंजिपति वर्ग है और दूसरा कृषक मजदूर है। पूंजिपति वर्ग के आधार स्तंभ कृषक और मजदूर है। प्रगतिवादी कवियों ने इन्हीं कृषकों और मजदूरों के दयनीय जीवन को काव्य का आधार बनाया है।

डॉ. नगेन्द्र ने इस संबंध में लिखा है कि 'प्रगतिवादियों ने अपनी अभिव्यक्ति के उपकरण आग्रह पूर्वक साधारण स्वस्थ जनजीवन से ग्रहण करना आरंभ किया। '

चर्चा के मुख्य बिन्दु

मार्क्सवादी विचाराधारा का प्रभाव

साम्यवाद का केन्द्र बिन्दु

द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद

Critical Overview / अवलोकन

प्रगतिवादी के अनुसार समाज में शोषक-शोषित वर्ग है, प्रगतिवादी शोषितों के हिमायती है।

Recap / पुनरावृत्ति

- छायावाद के प्रतिक्रिया स्वरूप आनेवाले काल
- मार्क्सवादीय दृष्टिकोण
- काव्यगत विशेषताएँ
- प्रवृत्तियाँ
- प्रमुख कवियों के नाम
- निराला, पंत, नागार्जुन, नरेन्द्र शर्मा, त्रिलोचन आदि प्रमुख कवियाँ हैं
- प्रमुख प्रगतिवादी रचनाएँ
- कुक्कूरमुत्ता, युगवाणी, हिल्लोल, जीवन के गान आदि प्रमुख रचनाएँ

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. छायावादोत्तर काल का नाम क्या है ?
2. प्रगतिवाद की समय- सीमा क्या है ?
3. दो प्रगतिवादी कवियों का नाम लिखिए ?
4. सुमन नाम से विख्यात कवि कौन है ?
5. नवीन उपनाम से विख्यात कवि कौन है ?
6. प्रगतिवादी कविता कुक्कुरमुत्ता की रचनाकार कौन है ?
7. प्रगतिवादी कवि नागार्जुन का असली नाम क्या है?
8. त्रिलोचन रचित एक प्रगतिवादी काव्य का नाम लिखिए?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Answers उत्तर

1. प्रगतिवाद
2. सन् 1936 - 1941 ई
3. निराला, नागार्जुन
4. शिव मंगल सिंह सुमन
5. बालकृष्ण शर्मा नवीन
6. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
7. वैध्यनाथ मिश्र
8. धरती

Assignments प्रदत्त कार्य

1. प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ ।
2. प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ क्या है ?
3. प्रमुख प्रगतिवादी कवियों के नाम लिखिए ?
4. प्रगतिवादी कविता में उपलब्ध मार्क्सवादीय दृष्टिकोण व्यक्त कीजिये ?

SGOU

इकाई : 5

प्रगतिवाद के प्रमुख कवि-पन्त, निराला, दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिव मंगल सिंह सुमन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रगतिवादी कवियों का परिचय प्राप्त होता है।
- प्रमुख प्रगतिवादी रचनाएँ समझता है।
- काव्य में संकलित विषय वैविध्यता समझता है।
- साम्यवादी दृष्टिकण के अनुसार निर्मित काव्यधारा सीखने का अवसर मिलता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रगतिवादी कवि 'दर्शन में जिसे द्वन्द्वात्मक भौतिक विकासवाद माना गया है, राजनीति में जो साम्यवाद है, वही साहित्य में प्रगतिवाद है'। प्रगतिवाद, छायावादोत्तर युग के नवीन काव्यधारा का भाग है। प्रगतिवाद के प्रमुख कवि - पन्त, निराला, दिनकर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिव मंगल सिंह सुमन आदि है। प्रगतिवादी कवि आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों में परिवर्तन या सुधार के पक्षधर हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रमुख कवि :- पंत, निराला, दिनकर, नागार्जुन, सुमन, केदरनाद अग्रवाल आदि है।

काव्यगत विशेषताएँ, सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण ।

Discussion / चर्चा

राजनीतिक क्षेत्र में समाजवाद और दर्शन द्वन्दात्मक भौतिकवाद है, वही साहित्यक क्षेत्र में प्रगतिवाद के नाम से अभिहित की जाती है। दूसरे शब्दों में मार्क्सवादी या साम्यवादी दृष्टिकोण के अनुसार निर्मित काव्यधारा प्रगतिवाद है। किसी भी उपकरण से समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला साहित्य प्रगतिशील कह सकता है। प्रगतिवादी साहित्य सामाजिक वैषम्य के निवारण करने के लिए मार्क्सवादी विचारधारा के माध्यम के रूप में अपनाने केलिए विवश है।

2.5.1 प्रगतिवाद के प्रमुख कवि और रचनाएँ :

सूर्यकांत त्रिपाठि निराला - 'कुकुरमुत्ता', 'भिक्षुक' ।

सुमित्रानन्दन पन्त- 'युगवाणी', 'ग्राम्या' ।

रामधारीसिंह 'दिनकर' - 'हूँकार', 'रेणुका', 'कुरुक्षेत्र', 'इतिहास के आँसू', 'रश्मिरथी', 'दिल्ली', 'रसवंति' ।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - 'कुंकुंम', 'उर्मिला', 'अपलक क्वासि'।

शिवमंगल सिंह 'सुमन'-'हिल्लोल', 'जीवन के गान', 'प्रलय सृजन' ।

नागार्जुन - 'युगधारा', 'सतरंख पंखों वाली'।

केदारनाथ सिंह - 'युग की गंगा', 'नींद के बादल'।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

आदि प्रगतिवादी कवियों में प्रमुख है।

प्रगतिवाद के अनुसार पुंजिवादी व्यवस्था का मूलाधार ही शोषण है, वह कारखानों में मजदूरों का, गांवों में किसानों का शोषण करने के साथ-साथ दैनिक जीवन में निम्न वर्ग का शोषण करता है। इस पूंजीवादी वर्ग या शोषक वर्ग के प्रति घृणा, वितृष्णा, व्यंग्य आदि की अभिव्यक्ति प्रगतिवादी काव्य में है।

निराला जी ने लिखा है,

अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पायी खुशबू रंग - ओ- आब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट ।
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट ।

प्रगतिवादी कविताओं में भी प्रेम को वर्णन का विषय कम बनाया गया है। राघेय राघव ने इस संबंधों कहा कि - प्रेम का अपना स्थान है, प्रगतिशील लेखकों ने प्रेम के प्रति प्रायः उदासीनता दिखलायी है; क्योंकि उन्होंने प्रेम को बुर्जुओ वर्ग की विरासत माना है।

प्रगतिवादी कवियों ने, समसामयिक परिस्थितियों के अनुकूल राष्ट्रीयता एवं विश्वबन्धुत्व की भावना को भी स्वर दिया है, किन्तु मार्क्सवाद से प्रभावित होने के कारण इनका विश्वबन्धुत्व संकुचित हो गया है।

प्रगतिवादी कवियों ने काव्य के भावपक्ष की तरह कलापक्ष में भी नवीनता का समावेश किया है। उनकी भाषा छायावादी कवियों की संस्कृतनिष्ठ न होकर अत्यंत सरल है। भावानुकूल भाषा शैली की अभिव्यक्ति इनकी विशेषता है। भाषा को एक बार फिर से उसके बोली रूप में प्रस्तुत किया। उनकी कविताओं में साधारण बोलचाल के शब्दों का प्रयोग अधिक है।

इस तरह स्पष्ट है कि प्रगतिवाद आधुनिक हिन्दी साहित्य की सशक्त विचारधारा है और प्रगतिवादी साहित्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि। प्रगतिवाद का दौर 1943 तक माना गया हैं।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

समसामयिक विषयों का चित्रण

मार्क्सवाद का प्रभाव ।

Critical Overview / अवलोकन

काव्य में क्रान्ति की भावना ।

मार्क्स तथा रूस का गुणगान ।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रगतिवाद
- प्रमुख प्रवृत्तियाँ ।
- मार्क्सवाद से प्रभावित काव्यधारा
- साम्यवादी दृष्टिकोण से निर्मित काव्यधारा
- प्रमुख कवि
- प्रमुख रचनाएँ
- उनके काव्यगत विशेषताएँ ।
- प्रगतिवादी काव्य के महत्व ।

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. युगधारा किसकी कृति है ?
2. निराला जी के एक प्रगतिवादी कविता का नाम लिखिए ?
3. ऊर्मिला के रचयिता कौन है ?
4. पन्त जी का पुरा नाम क्या है ?
5. कुक्कूरमुत्ता का विधा क्या है ?
6. केदारनाथ सिंह किस युग के कवि थे?
7. दिनकर की पूरा नाम क्या ?
8. नवीन किसका उपनाम है ?

Answers उत्तर

1. नागार्जुन ।
2. तोडती पथ्तर ।
3. बालकृष्ण शर्मा नवीन ।
4. सुमित्रानंदन पंत ।
5. प्रगतिवादी कविता ।
6. आधुनिक काल की प्रगतिवादी कवि ।
7. रामधारीसिहं दिनकर ।
8. बालकृष्ण शर्मा नवीन ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. प्रमुख प्रगतिवादी कवि और उनके रचनाएँ ।
2. प्रगतिवादी कवियों के काव्य की प्रवृत्तियाँ क्या है ?
3. प्रगतिवादी कविता में व्यक्त मार्क्सवादीय प्रभाव क्या है ?
4. प्रमुख प्रगतिवादी कवि और उनकी रचनाएँ लिखिए ?

इकाई : 6
तोड़ती पत्थर, युगवाणी, हिल्लोल (सामान्य परिचय)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- तोड़ती पत्थर कविता का परिचय प्राप्त होता है।
- समाज में शोषितों की समस्याओं से अवगत हो जाता है।
- समसामयिक समस्याओं को कविताओं के माध्यम से समझता है।
- युगवाणी कविता के सामान्य परिचय प्राप्त होता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

सूरयाकांत त्रिपाठी निराला प्रगतिशील चेतना के कवि है। निराला जी की सशक्त प्रगतिवादी कविता है तोडती पत्थर। तोड़ती पत्थर कविता में शोशित और दुःखीजनों के प्रति गहरी सहानुभूती है।

सुमित्रानं पन्त की प्रगतिवादी कविता है युगवाणी। सुमित्रानंदन पंत का काव्य संग्रह युगवाणी प्रगतिवाद का प्रथम काव्य संग्रह माना जाता है। पंत को ही प्रगतिवाद का जनक माना जाता है।

शिव मंगल सिंह सुमन की सशक्त प्रगतिवादी कविता है, हिल्लोल। शिव मंगल सिंह सुमन केवल हिन्दी प्रगतिवादी कविता के क्षेत्र में एक शक्तिशाली चिह्न ही नहीं थे, बल्कि वह अपने समय की सामुहिक चेतना के संरक्षक भी थे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

शोषितों का करुणा गान, रूढ़ी विरोध

Discussion / चर्चा

प्रगतिवादी काव्य में यथार्थ चित्रण होता है। सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण और सामान्य परिवेश का चित्रण है। सामाजिक यथार्थ के अन्तर्गत जनसमूह की आर्थिक विषमता और राजनीतिक चेतना का चित्रण है। यह समाज के दो परस्पर विरोधी वर्गों से सम्बन्धित है - एक पूंजीपति वर्ग है और दूसरा कृषक मज़दूर है। डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है कि 'प्रगतिवादियों ने अपनी अभिव्यक्ति के उपकरण आग्रहपूर्वक साधारण स्वस्थ्य जनजीवन से ग्रहण करना आरंभ किया।'

2.6.1 तोड़ती पत्थर - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कवि निराला इस कविता में इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोडने वाली एक मज़दूरनी का वर्णन किया है।

कवि ने इस कविता के द्वारा साधारण और दलित वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है। पूंजीपतियों पर वह हथोडा से प्रहार कर रही है।

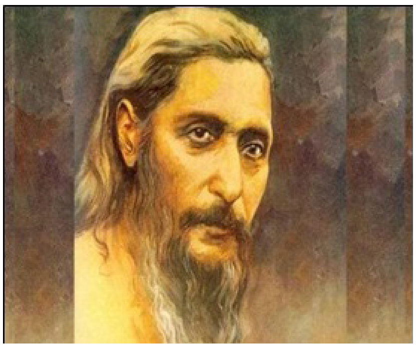

इसी प्रकार श्रमिक जीवियों के कष्टों की सहानुभूती लिये हुऐ जो लोकहितवाद का आन्दोलन चला है। उसपर भी निराला जी की दृष्टि गई है :-

वह तोडती पत्थर ;

देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर ।

निराला ने इस कविता के द्वारा साधारण और दलित के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है। पूंजिपतियों पर हथोडा का प्रहार हुआ। श्रमिक वर्ग की निराशा के साथ उसकी निरंतर कर्मशीलता का अत्यंत भावपुर्ण चित्रण निराला जी ने इस कविता में किया है। कविता में जीवन का यथार्थ कटुतापूर्ण शैलि में चित्रित है।

सुमित्रानंदन पंत

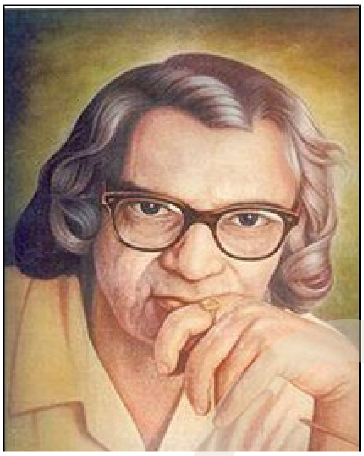

कविवर सुमित्रानंदन पंत छायावादी काव्यधारा के महान कवियों में एक हैं। पंत छायावाद आदर्शवाद का चौथा स्तंभ है। छायावाद काव्य की सभी विशेषताएँ पंत की कविता में पायी जाती है।

पंत में कल्पना की स्वच्छंद उड़ान, अत्यंत दुर्लभ मनोरम प्रकृति चित्रण, प्रकृति एवं मानव जीवन के अटूट संबंध की ज़रूरत आदि विशेषताएँ मिलती है। पंत को प्रकृति के सुकुमार कवि कहते हैं।

युगवाणी

युगवाणी का प्रकाशन 1939 ईं में हुआ। यह सुमित्रानंदन पंत के पांचवां काव्य संग्रह है। कवि ने उसे गीत गद्य कहा है।

- भूतवाद और आध्यत्मिकवाद का समन्वय, जिसे मनुष्य की चेतना का पथ प्रशस्त बने है।
- पिछले युग के आदर्शों और रूढियाँ, रीतियों का तीव्र भर्तसना, जो आज मानवता के विकास में बाधक बन रही है।

युगवाणी में नर जीवन पर ही विशेष रूप से दृष्टि जमी रहने के कारण कवि के सामने प्रकृति का वह रूप भी आया है, जिसमें मनुष्य को लडना पडा है :-

‘बहिन बाढ़, उल्का, झंझा की भीषण भू पर

कैसे रह सकता है कोमल मनुज कलेवर‘

- मार्क्सवाद तथा फ्रोयड़ का प्राणि शास्त्रीय मनोदर्शन के युग की विचारधारा पर प्रभाव जन समाज का पुनः संगठन एवं दलित लोक समुदाय का जीर्णोद्धार।
- बहिजर्वन के साथ अंतर्जीवन क संगठन की आवश्यकता राग भावना का विकास और नारी जागरण।

हिल्लोल - शिवमंगल सिंह सुमन

यह सुमन जी के प्रेम-गीतों का प्रथम काव्य-संग्रह है। इसमें ह्दय की कोमल भावनाओं को चित्रित किया गया है।

सुमन जी प्रगतिवादी कवि के रूप में हमारे समक्ष अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से उपस्थित होते हैं। ‘हिल्लोल’ कविता का रचना काल 1939 ई है। कविता में दलित, पीडित, शोशित एवं वंचित श्रमिक वर्ग का समर्थन किया गया है, साथ ही सामान्य रूप से पूंजिपती वर्ग तथा उनके अत्याचारों का खण्डन भी अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है।

प्रगतिवादी कवियों ने भावपक्ष की तरह कला पक्ष में भी नवीनता का समावेश किया है। उनकी भाषा छायावादी कवियों की संस्कृत निष्ठ न होकर अत्यंत सरल है। भावानुकूल भाषा शैलि की अभिव्यक्ति इनकी काव्य की विशेषता है।

इस तरह स्पष्ट है कि प्रगतिवाद आधुनिक हिन्दी साहित्य की सशक्त विचारधारा है और प्रगतिवादी साहित्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

प्रगतिवादी कविता में उपलब्ध क्रान्ति की भावना ।

नारी चित्रण।

रचनाओं में बोलचाल की भाषा ।

Critical Overview / अवलोकन

प्रगतिवादी काव्य जीवन की विषमता का निवारण तथा मानवता की प्रतिष्ठा करता है या अभिनंदनीय है। सामाजिक यथार्थ के साथ-साथ कवियों ने प्राकृतिक परिवेश का चित्रण भी काव्य में किया है। प्रगतिवादी कवि सामाजिक एवं राजनीतिक दुर्व्यवस्था से पीडित हो विप्लव गान करता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रगतिवाद
- प्रगतिवाद के प्रमुख कवि
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और तोड़ती पत्थर
- शिवमंगल सिंह सुमन और हिल्लोल
- सुमित्रानंदन पन्त और युगवाणी
- काव्यगत विशेषताएँ
- मार्क्सवादीय दृष्टिकोण
- प्रगतिवादी काव्य की महत्व

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. युगवाणी के रचयिता कौन है ?
2. हिल्लोल किस विधा की रचना है ?
3. तोडती पत्थर कविता किस कोटि की रचना है ?
4. एक प्रगतिवादी काव्य का नाम लिखिए ?
5. शिवमंगल सिंह सुमन किस युग के कवि है ?
6. निराला जी के एक प्रगतिवादी कविता का नाम लिखिए।
7. कवि निराला ने इलाहाबाद के रास्ता पर किसे देखा था ?
8. प्रकृति के कवि कौन थे ?

Answers उत्तर

1. सुमित्रानंदन पंत ।
2. काव्य ।
3. प्रगतिवादी कविता ।
4. तोडती पत्थर ।
5. प्रगतिवाद ।
6. तोडती पत्थर।
7. एक पत्थर तोडती हुई मजदूरनी युवती को।
8. सुमित्रानंदन पन्त ।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. युगवाणी कविता का सन्देश क्या है ?
2. तोडती पत्थर कविता का सारांश लिखिए ।
3. युगवाणी कविता का सारांश लिखिए ।
4. हिल्लोल कविता का सन्देश क्या है ?
5. तोड़ती पत्थर कविता की समस्या क्या है ?

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आधुनिक हिन्दी कविता (छायावाद से प्रयोगवाद तक)- वीरेश कुमार
2. आधुनिक हिन्दी कविता और काव्यानुभूति- एकान्त श्रीवास्तव
3. प्रगतिवाद और समानांतर साहित्य- रेखा अवस्थि
4. प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन-हरिनिवास पाण्डेय

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 03

भारतेन्दु और हिन्दी गद्य साहित्य

SGOU

इकाई : 1

खड़ीबोली हिन्दी गद्य–उद्भव और विकास, हिन्दी के प्रमुख गद्यकार और उनके योगदान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- खडीबोली हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास की जानकारी प्राप्त करता है।
- भारतेंदु युग के प्रमुख गद्यकार की जानकारी प्राप्त करता है।
- भारतेंदु युग के प्रमुख गद्यकार के योगदान की जानकारी प्राप्त करता है।
- फार्ट विलियम कॉलेज का योगदान समझता है।
- राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' और राजा लक्ष्मण सिंह का योगदान समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भारत में आधुनिकता का प्रभाव सबसे पहले बंगाल में आया था। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल की शुरुआत 19 - वीं शताब्दी से माना जाता है। जब हिन्दी साहित्य में गद्य का विकास हुआ तब साहित्य का भी विकास होने लगा। आधुनिक काल हिन्दी साहित्य का चौथा काल है। इसे गद्य काल भी कहते हैं। सन् 1850 से आज तक की काल सीमा आधुनिक काल या गद्य काल के अंतर्गत आती हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- देश की विकास यात्रा में साहित्य का प्रमुख स्थान है।
- अंग्रेज़ी शिक्षा के फलस्वरूप देश में मध्य वर्ग का उदय हुआ ।
- शिक्षा प्राप्त मध्यवर्गीय बुद्धि जीवी वर्ग जनता की बोलचाल की भाषा और शैली में साहित्य लिखना शुरू की ।
- उस समय की बोलचाल की भाषा थी 'हिन्दी' और शैली थी 'गद्य' ।
- साहित्यकार यह जानते थे कि जब जनता की शैली यानी गद्य में साहित्य लिखना शुरू करेंगे, तब देश की गतिविधियों से वे परिचित रहेंगे ।
- यह देश का विकास केलिए सहायक रहेगा ।

Discussion / चर्चा

भारतेन्दु युग हिन्दी गद्य के बहुमुखी विकास का युग है। इस समय के साहित्य को 'सांस्कृतिक जगरण का साहित्य' कहा जाता है। यह भी उल्लेखनीय हैं कि उन्नीसवीं शती के अंतिम चरण में देश में गद्य साहित्य के माध्यम से भी विकास हुआ। इस प्रकार खड़ीबोली की प्रतिष्ठा और गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास-ये दो महत्त्वपूर्ण बदलाव आधुनिक काल में दिखाई देता हैं। ये दोनों एक दूसरे के पूरक भी हैं। मतलब आधुनिक काल में खड़ीबोली का आगमन गद्य भाषा के रूप में होता है। इस युग में रचित गद्य साहित्य में नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि विभिन्न विधायें हैं।

भारतेन्दु युग का समय सीमा सन् 1868 से 1902 तक माना जाता है। इस युग में खड़ी बोली हिन्दी गद्य के विकास केलिए विभिन्न लोग और संस्थान की भूमिका उल्लेखनीय हैं। इनमें अन्य भाषाओं से अनूदित रचनाएँ भी आते हैं।

प्रारंभिक प्रयास

इस युग में खड़ी बोली हिन्दी गद्य का प्रथम ग्रंथ 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' की रचना हुई। इसकी रचना अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा हुआ था। 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' में संस्कृत के तत्सम शब्द मिलता है। साथ ही साथ ब्रजभाषा के भी शब्दों का बहुतायत हुआ है। भारतेन्दु युग के हिन्दी गद्य के विकास में पटियाला निवासी राम प्रसाद निरंजनी का 'भाषा योगवासिष्ठ' का स्थान सर्वोपरि है। इस ग्रंथ की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने राम प्रसाद निरंजनी को हिन्दी का 'प्रथम प्रौढ़ गद्य-लेखक' माना है। निरंजनी के बाद 'पं. दौलतराम' ने सात सौ पृष्ठों में हरिषेणाचार्य कृत 'जैन पद्मपुराण' का अनुवाद खड़ीबोली में किया।

फार्ट विलियम कॉलेज

भारतेन्दु युग से पूर्व सन् 1800 में स्थापित 'फोर्ट विलियम कॉलेज' खड़ेबोली हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कॉलेज के अध्यापक गिल क्राइस्ट ने उर्दू और हिन्दी में गद्य पुस्तकें तैय्यार कराने की अलग-अलग व्यवस्था की। फार्ट विलियम कॉलेज के आध्यापकों ने अंग्रज़ों के आदेशानुसार खड़ी बोली हिन्दी के विकास केलिए काम की। लल्लूलाल ने प्रेमसागर और सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की।

राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' और राजा लक्ष्मण सिंह का योगदान

राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' हिन्दी एवं उर्दू, दोनों भाषाओं के लेखक हैं। वे शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर थे। इन्होंने काशी से 'बनारस' नाम का अख़बार निकालकर साहित्य सेवा की। पं. वंशीधर, श्रीलाल और बद्रीलाल इस काल के अन्य लेखक है।

राजा लक्ष्मण सिंह, राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' के विपरीत सोचते थे। उन्होंने अरबी-फ़ारसी के शब्दों की जगह संस्कृत के तत्सम शब्द का प्रयोग किया। वे आगरा से 'प्रजाहितैषी' नामक पत्र निकालकर संस्कृत-सम्मत हिन्दी गद्य के प्रचार- प्रसार किया। इन्होंने कालिदास कृत 'रघुवंश', 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्', 'मेघदूत' आदि संस्कृत ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया। राजा लक्ष्मण सिंह का गद्य साहित्य सामान्य बोल-चाल की भाषा से दूर रहा। फिर भी यह हिन्दी गद्य को एक नया रूप प्रदान किया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मत में - 'राजा लक्ष्मण सिंह के समय में ही हिन्दी गद्य की भाषा अपने भावी रूप का अभास दे चुकी थी। अब आवश्यकता ऐसे शक्तिसंपन्न लेखकों की थी जो अपनी प्रतिभा और उद्भावना के बल से उसे सुव्यवस्थित और परिमार्जित करते और उसमें ऐसे साहित्य का विधान करते जो शिक्षित जनता की रुचि के अनुकूल होता। ठीक इसी परिस्थिति में भारतेंदु का उदय हुआ।

राजा लक्ष्मण सिंह और राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' इन दोनों लेखकों के गद्य की भाषा अलग-अलग है। दोनों को लेकर वाद-विवाद हुए । राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' की भाषा 'हिन्दुस्तानी' पर आधारित है। प्रेमचन्द्र का गद्य राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' की गद्य से मिलते-जुलते हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने राजा लक्ष्मण सिंह की संस्कृतनिष्ठ गद्य को अधिक मान्यता दिया।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- भारतेन्दु युग में हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास हुआ ।
- फार्ट विलियम कॉलेज भारतेन्दु युग की देन है।

Critical Overview / अवलोकन

- भारतेन्दु युग में विकसित खडीबोली गद्य विधाओं में नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना और अन्य गद्य विधायें जैसे जीवनी, यात्रवृत्त आदि आते हैं।
- अंग्रेज़ी शिक्षा के कारण इस युग में साहित्य, संगीत और कला आदि नये मोड में पहूँच गयें।
- राजा शिव प्रसाद छात्रों केलिए पाठपुस्तकें तैयार कीं। धर्मिक ग्रन्थों की रचना में निपुण थे - नवीन चंद्र राय और श्रद्धाराम फुल्लौरी।
- राजा शिव प्रसाद और राजा लक्ष्मण सिंह दोनों सर्वाधिक रूप से हिन्दी गद्य की प्रतिष्ठा कर गद्य साहित्य की विविध विधाओं के विकास का कार्य किया।

Recap / पुनरावृत्ति

- भारतेन्दु युग हिन्दी गद्य के बहुमुखी विकास का युग है
- भारतेन्दु युग सन् 1868 से 1902 तक है
- भारतेन्दु युग में विकसित खडीबोली गद्य विधाओं में नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना और अन्य गद्य विधायें जैसे जीवनी, यात्रा वृत्त आदि आते हैं
- राजा लक्ष्मण सिंह, राजा शिव प्रसाद सितारेहिंद, नवीन चंद्र राय, श्रद्धाराम फुल्लौरी आदि लोगों का योगदान उल्लेखनीय हैं
- फार्ट विलियम कॉलेज की भूमिका
- जब जनसाधारण की भाषा में और जन साधारण की शैली (गद्य) में साहित्य रचने लगे तब देश का विकास होने लगा
- अरबी-फारसी के शब्दों कि जगह संस्कृत के तत्सम शब्द का प्रयोग ।

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी गद्य के बहुमुखी विकास का युग कब है ?
2. भारतेन्दु युग में विकसित खडीबोली गद्य विधायें क्या- क्या है ?
3. भारतेन्दु युग की समय सीमा कब से कब तक है ?
4. हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारंभ कब है ?
5. फार्ट विलियम कॉलेज के स्थापना कब हुआ ?
6. लल्लूलाल की रचना का नाम क्या है ?
7. सदल मिश्र की रचना का नाम क्या है ?
8. राजा लक्ष्मण सिंह की पत्रिका का नाम क्या है ?

Answers उत्तर

1. भारतेन्दु युग
2. नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना और अन्य गद्य विधायें जैसे जीवनी, यात्रवृत्त आते हैं।
3. सन् 1868 से 1902 तक ।
4. 19 वीं शताब्दी से
5. सन् 1800
6. 'प्रेमसागर'।
7. 'नासिकेतोपाख्यान' ।
8. 'सितारे हिन्द'

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Assignments प्रदत्त कार्य

1. भारतेन्दु युगीन गद्य की विकास यात्रा पर टिप्पणी तैयार कीजिए ?
2. भारतेन्दु युग की प्रमुख रचनाकार कौन-कौन है ? और उन की विशेषतायें क्या-क्या है ?
3. हिन्दी के प्रमुख गद्यकार की जानकारी प्राप्त कीजिए ।
4. खड़ीबोली हिन्दी गद्य के उद्भव और विकास के बारे में अपना विचार प्रकट कीजिए।
5. फॉर्टविलियम कॉलेज के बारे में एक टिप्पणी तैयार कीजिए।
6. भारतेन्दु युग के प्रमुख गद्यकार के बारे में अपनी जानकारी प्रकट कीजिए।

इकाई : 2

भारतेन्दु युग में गद्य का विकास और भारतेन्दु मंडल के गद्यकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भारतेन्दु युग के हिन्दी गद्य साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- भारतेन्दु युगीन हिन्दी कथा साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- भारतेन्दु युगीन हिन्दी नाटक और एकांकी साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- भारतेन्दु युगीन हिन्दी निबंध साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- भारतेन्दु युगीन हिन्दी अलोचना साहित्य तथा अन्य विधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भारतेन्दु युग गद्य के विकास का काल है। पाश्चात्य शिक्षा, डाक-तार और प्रेस का विकास, विभिन्न दर्शनों का प्रभाव, साहित्य आदि विभिन्न तत्वों के प्रभाव से भारत आधुनिक होने लगा। साहित्य के क्षेत्र में जो परिवर्तन आये, वह पूरे देश के विकास केलिए सहायक बना। विभिन्न गद्य विधाएँ हिन्दी साहित्य को संपन्न किया। नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, अलोचना, जीवनी साहित्य, यात्रावृत्त आदि विभिन्न गद्य विधायें भारतेन्दु युग को संपन्न किया।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- भारतेन्दु युग हिन्दी साहित्य का समृद्धि का काल हैं।
- इस युग में विकसित साहित्य, हिन्दी साहित्य जगत केलिए एक नया मोड प्रदान किया।
- देश की याथार्थ स्थिति जनता तक पहूँचाने में गद्य साहित्य बहुत सहायक बना ।

Discussion / चर्चा

1868 से 1903 तक के समय को भारतेन्दु युग कहा गया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी के लिए वरदान सिद्ध हुए। उनकी प्रतिभा का सहारा पाकर हिन्दी साहित्य समृद्ध हो उठा। भारतेन्दु जी ने स्वयं नाटक, निबंध आदि की तथा अनेक गद्यकारों को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया।

भारतेन्दु युग में निबन्ध, नाटक, कहानी आदि सभी विधाओं में साहित्य सृजन हुआ। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि सभी विषयों पर लिखा गया। इस काल के लेखकों का ध्यान हिन्दी साहित्य के भण्डार को भरने की ओर था इसलिए उन्होंने व्यावहारिक भाषा को अपनाकर सरल तथा स्पष्ट शैली में लिखा। खड़ी बोली का शैशव काल होने के कारण भाषा में संस्कृत, अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग मिलता है।

भारतेन्दु युग के प्रमुख गद्यकार

इस युग के गद्यकारों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस युग में मौलिक रचनाओं के साथ-साथ अनूदित रचनाएँ भी पर्याप्त मात्रा में हुए। 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन', 'कविवचन सुधा', 'आनन्द कादम्बिनी', 'हिन्दी प्रदीप' आदि पत्रिकाओं ने हिन्दी गद्य के विकास में बहुत योगदान दिया।

आज हिन्दी गद्य का जो बहुमुखी विकास दिखायी पड़ रहा

है, उसका मूलाधार भारतेन्दु युग है। इस प्रकार हिन्दी गद्य के विकास में भारतेन्दु युग का विशेष महत्त्व है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म सन् 1850 में काशी के एक अत्यन्त सम्पन्न परिवार में हुआ। भारतेन्दु जी आधुनिक युग के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं। आप अपने समय के एक निबंधकार, लोकप्रिय कवि, नाटककार एवं सम्पादक थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एक समाज सुधारक के रूप में भी जाने जाते हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ब्रजभाषा और खड़ी बोली का सफल प्रयोग किया। इन्होंने गद्य के लिए खड़ी बोली का प्रयोग किया। हास्य और व्यंग्य शैली के समावेश से अपनी रचनाओं को प्रभावशाली बनाया। राष्ट्रीय एवं सामाजिक उन्नति उनका प्रमुख लक्ष्य था। यह पाठकों केलिए ही नहीं बल्कि अपने युग के अन्य साहित्यकारों को भी प्रोत्साहन था। इसीलिए वे आधुनिक काल के प्रवर्तक और अपने युग का साहित्यकार माने जाते हैं। उन्होंने नाटक, निबंध, आलोचना आदि अनेक विधाओं से हिन्दी साहित्य को संपन्न किया।

प्रमुख रचनाएँ :-

नाटक:- 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'श्री चंद्रावली', 'विषस्यविषमौषधम', 'भारत दुर्दशा', 'नीलदेवी', 'अंधेर नागरी', 'प्रेमजोगिनी', 'सती प्रताप' आदि प्रमुख हैं।

निबंध संग्रह:- 'नाटक', 'कालचक्र', 'लेवी प्राण लेवी', 'कश्मीर कुसुम', 'जातीय संगीत', 'हिन्दी भाषा', 'स्वर्ग में विचार सभा' आदि प्रमुख हैं।

कहानी:- 'अद्भुत अपूर्व स्वप्न'

यात्रा वृत्तान्त:- 'सरयूपार की यात्रा', 'लखनऊ'

आत्मकथा:- 'एक कहानी- कुछ आपबीती कुछ जगबीती'

उपन्यास:- 'पूर्ण प्रकाश', 'चन्द्र प्रभा'

बालकृष्ण भट्ट

भारतेन्दु युग के प्रमुख साहित्यकारों में से एक है बालकृष्ण भट्ट। आधुनिक हिन्दी गद्य के आदि निर्माताओं और उन्नायक रचनाकारों में एक हैं। वे हिन्दी के प्रमुख गद्यकार, पत्रकार, निबंधकार तथा हिन्दी की आधुनिक आलोचना के प्रवर्तक भी हैं। सामयिक समस्याओं पर उन्होंने बल दिया।

उन्होंने 'हिन्दी प्रदीप' नामक पत्रिका का सम्पादन की। हिन्दी के प्रचार केलिए उन्होंने 1933 में प्रयाग में 'हिन्दीवर्द्धिनी' नामक सभा की स्थापना की। हिन्दी प्रदीप के अतिरिक्त बालकृष्ण भट्ट जी, दो-तीन अन्य पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

भट्ट भारतेन्दु युग के निबंधकार थे। उनके निबंध सदा मौलिक और भावना पूर्ण थे। 'साहित्य सुमन', 'भट्ट निबंधमाला', 'आत्मनिर्भरता' आदि प्रमुख निबन्ध संग्रह हैं।

'सौ अजान एक सुजान', 'रेल का विकट खेल', 'नूतन ब्रह्मचारी' आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'दमयन्ती स्वयंवर', 'बाल-विवाह', 'चन्द्रसेन' आदि मौलिक नाटक हैं।

प्रताप नारायण मिश्र

पं. प्रताप नारायण मिश्र भारतेन्दुयुग के एक प्रसिद्ध निबन्धकार, सम्पादक एवं कवि हैं। उनका जन्म सन् 1856 में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हुआ। प्रताप नारायण मिश्र ने लगभग 50 से ज़्यादा रचनाओं से हिन्दी साहित्य को संपन्न किया। इनकी सम्पूर्ण रचनाओं को नागरी प्रचारिणी सभा ने 'प्रताप नारायण मिश्र-ग्रन्थावली' के नाम से प्रकाशित किया है।

प्रताप नारायण मिश्र भारतेन्दु के विचारों और आदर्शों के महान प्रचारक और व्याख्याता थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समान ही समसामयिक समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। वे अंग्रेज़ी राज्य की शोषण पर हमेशा व्यंग्य किया। 'हिन्दी, हिन्दू , हिंदुस्तान' उनका प्रसिद्ध नारा था।

5 मार्च 1883 में उन्होंने ने 'ब्राह्मण' नामक मासिक पत्रिका निकाला। 1891 में उन्होंने कानपुर में 'रसिक समाज' की स्थापना की। कांग्रेस के कार्यक्रमों के अतिरिक्त भारतधर्ममंडल, धर्मसभा और अन्य सभा-समितियों के सक्रिय कार्यकर्ता भी रहे थे। 38 वर्ष की आयु में 6 जुलाई 1894 को उसकी मृत्यु हुई।

रचनाएँ

समाजसुधार को दृष्टि में रखकर उन्होंने अनेक रचानायें की है। एक सफल व्यंग्यकार और हास्यपूर्ण गद्य-पद्य-रचनाकार के रूप में उनका विशिष्ट स्थान है।

नाटक :- 'गो संकट', 'भारत दुर्दशा', 'कलिकौतुक', 'कलि प्रभाव', 'हठी हम्मीर', 'जुआरी-खुआरी' (प्रहसन)। 'संगीत शाकुंतल' (कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुंतम्' का अनुवाद)।

निबंध संग्रह :- 'निबंध नवनीत', 'प्रताप पीयूष', 'प्रताप

समीक्षा' आदि।

अनूदित गद्य कृतियाँ :- 'राजसिंह', 'अमरसिंह', 'इन्दिरा', 'कथामाला', 'शिशु विज्ञान', 'राधारानी', 'युगलांगुरीय', 'सेनवंश का इतिहास', 'सूबे बंगाल का भूगोल', 'वर्णपरिचय', 'चरिताष्टक', 'पंचामृत', 'नीतिरत्नमाला', 'बात' आदि।

बालमुकुन्द गुप्त

बालमुकुन्द गुप्त का जन्म गुड़ियानी गाँव, जिला रिवाड़ी, हरियाणा में हुआ। 1889 ई में हिन्दी दैनिक 'हिंदोस्थान' के सहकारी संपादक हुए। मुरादाबाद के 'भारत प्रताप' उर्दू मासिका का संपादन किया और कुछ हिन्दी तथा बाँग्ला पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद किया। 1893 ई में 'हिन्दी बंगवासी' के सहायक संपादक होकर कलकत्ता गए 1899 ई में 'भारतमित्र' कलकत्ता के भी संपादक हुए।

1907 को गुप्तजी की मृत्यु हुई। वह भारतेन्दु और प्रतापनारायण मिश्र के सच्चे उत्तराधिकारी थे।

प्रमुख रचनाएँ :- 'शिव शंभू के चिट्ठे', 'चिट्ठे औ खत', 'खेल तमाशा', 'बालमुकुंद गुप्त निबंधावली', 'सन्निपात चिकित्सा'।

बदरी नारायण चौधरी ' प्रेमघन'

बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' का जन्म सन् 1855 में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में एक सम्पन्न परिवार में हुआ। 'प्रेमघन'- भारतेन्दु-युग के एक प्रतिष्ठित साहित्यकार है। इन्होंने काव्य, नाटक, निबन्ध एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी और फारसी के साथ ही साथ संस्कृत की शिक्षा की व्यवस्था की।

'प्रेमघन' सिर्फ कवि ही नहीं उच्च कोटि के गद्यलेखक और नाटककार भी थे। गद्य में निबंध, आलोचना, नाटक, प्रहसन आदि से उनहोंने हिन्दी साहित्य को सम्पन्न किया।

पत्रिकाएँ

आनंद कादंबिनी (1881) - मिर्जापुर से मासिक

नागरी नीरद (1893) - मिर्जापुर से साप्ताहिक

शुक्लजी ने 'आनंद कादंबिनी' से हिन्दी पुस्तकीय आलोचना का सूत्रपात माना।

रचनाएँ

नाटक

'भारत सौभाग्य'(1888), 'प्रयाग', 'रामागमन', 'वीरांगना रहस्यमहानाटक'(वेश्या विनोद महानाटक) अपूर्ण।

निबंध

'बनारस का बुढ़वा मंगल'

'दिल्ली दरबार में मित्र मंडली के यार'

आलोचना

संयोगितास्वयंवर एवं बंगविजेता की आलोचना आनंद कादंबिनी में प्रकाशित हुई।

भारतेन्दु युग में गद्य का विकास

उपन्यास

भारतेन्दु युग में उपन्यास लिखने की प्रेरणा लेखकों को बंगला और अंग्रेजी के उपन्यासों से ही मिली। इस युग में ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, जासूसी, तिलस्मी-ऐयारी और रोमानी जैसी उपन्यासों की परंपरा उपज रही थी। इसी परंपरा को हम द्विवेदी युग में फला-फूला हुआ पाते हैं। इस युग में श्रद्धाराम फुल्लौरी कृत(भाग्यवती) 1877, और लाला श्रीनिवास दास कृत(परीक्षा गुरु) 1882, उपन्यास की रचना हुई थी। इसके अलावा बालकृष्ण भट्ट (रहस्यकथा) 1879, नूतन ब्रह्मचारी 1886, और (सौ अजान एक सुजान)1892, राधाकृष्ण दास (निस्सहाय हिंदू) 1890, लज्जाराम शर्मा (धूर्त रसिकलाल)1890 और (स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी)1899, किशोरीलाल गोस्वामी (त्रिवेणी) और (सौभाग्यश्री) 1890, उपन्यासों को देखा जा सकता है। इन उपन्यासों की रचना का मुख्य उद्देश्य समाज की कुरीतियों को सामने लाना तथा उनका विरोध करना था। वही तिलिस्मी-ऐयारी उपन्यासों पर दृष्टि डालें तो देवकीनंदन खत्री का 'चंद्रकांता' (1882), 'चंद्रकांता संतति' (24 भाग, 1896), 'नरेंद्र मोहिनी' (1893), 'वीरेंद्र वीर' (1895), 'कुसुम कुमारी' (1899), और 'हरेकृष्ण जौहर का 'कुसुमलता' (1899), को देखा जा सकता है। इस युग में ऐसे उपन्यास बहुत ही लोकप्रिय हुए थे।

नाटक

इस युग में लिखित नाटकों को विषय एवं प्रवृत्ति भेद के अनुसार विभिन्न रूप में देख सकते हैं। पौराणिक, ऐतिहासिक, रोमानी आदि रूपों में विभाजित कर सकता है।

हिन्दी साहित्य में नाटक की शुरूआत भारतेन्दु हरिश्चद्र से माने जाते हैं। इस युग के सर्वश्रेष्ठ नाटककार है भारतेन्दु हरिश्चद्र। उन्होंने अनूदित और मौलिक नाटकों की रचना की। 'विद्यासुंदर', 'चौर पंचशिखा'(बंगाल से अनूदित), 'पाखण्ड विडम्बन', 'प्रबोध चंद्रोदय', 'धनंजय विजय', 'कर्पूर मंजरी', 'भारत जननी', 'मुद्रा राक्षस', 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' (संस्कृत से अनूदित), 'दुर्लभ बंधु' (शेक्सपियर के मरचेंट ऑफ वेनिस' नाटक का अनुवाद) आदि अनूदित नाटक हैं।

वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चन्द्र श्री चंद्रावली, विषस्य, विषमौषधम, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अंधेर नगरी, सती प्रताप, प्रेम जोगिनी आदि हिन्दी में लिखित नाटक हैं।

कहानी

इस युग में कहानियों का विकास ठीक प्रकार से नहीं हुआ था। जैसे मुंशी नवल किशोर द्वारा संपादित 'मनोहर कहानी' (1880) में संकलित एक सौ कहानियाँ, अंबिकादत्त व्यास कृत 'कथा कुसुम कलिका' (1888), राजा शिव प्रसाद सितारे हिंद कृत 'वामा-मनोरंजन' (1886) और चंडी प्रसाद सिंह कृत 'हास्य रतन' (1886), आदि कहानियाँ उस समय के शिक्षा नीति से प्रेरित कथाएँ थी । ऐसी कहानियों को लेखकों ने लिखा और प्रकाशित करवाया ।

निबंध

भारतेन्दु युग में सबसे अधिक निबंध कला का विकास हुआ, क्योंकि निबंधों का संबंध पत्र-पत्रिकाओं से था । उस समय के लेखकों के पास अनगिनत विषय थे। विचारों को व्यक्त करने का और उसे लोगों तक पहुँचाने का पत्र-पत्रिका बहुत ही अच्छा और सस्ता माध्यम था, इसीलिए समाज के कल्याण के लिए लोगों ने पत्र-पत्रिकाओं का सहारा लिया ।

भारतेन्दु युग के प्रमुख निबंधकार

इस युग के प्रमुख निबंधकार हैं- भारतेन्दु हरिश्चंन्द्र(हरिश्चंन्द्र मैगजीन), प्रतापनारायण मिश्र(ब्राम्हण), बालकृष्ण भट्ट (हिन्दी प्रदीप), बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'(आनंदकादंबिनी), लाला श्रीनिवास दास(सदादर्श), राधाचरण गोस्वामी(भारतेन्दु), काशीनाथ खत्री।

इस युग में निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता उनके माध्यम से प्रकट होने वाले राष्ट्रीय सांस्कृतिक जागरण था।

आलोचना

इस युग में 'हिन्दी प्रदीप' नामक एक ही पत्र था जो आलोचनाएँ प्रकाशित करता रहा। इस युग में तीन प्रकार की आलोचनाएँ देखी जा सकती है।

1. रीतिकालीन लक्षण ग्रंथों की परंपरा में लिखित सैद्धांतिक आलोचना ।
2. ब्रजभाषा एवं खड़ीबोली-गद्य में लिखी गई टीकाओं के रूप में प्रचलित आलोचना।
3. इतिहास-ग्रंथों में कवि परिचय के रूप में लिखी गई आलोचना।

भारतेन्दु युग में आधुनिक आलोचना का रूप यदि बीज रूप में सुरक्षित है तो वह पत्र-पत्रिकाओं में तथा प्रकाशित पुस्तक समीक्षाओं में ही है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- भारतेन्दु जी आधुनिक युग के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते है।
- विभिन्न गद्य विधाएँ हिन्दी साहित्य को संपन्न किया।
- भारतेन्दु युग के उपन्यासों में ऐतिहासिक, सामाजिक, जासूसी, तिलस्मी-ऐयारी और रोमानी प्रवृत्ती देख सकते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

- हिन्दी गद्य का जो बहुमुखी विकास दिखायी पड़ रहा है, उसका मूलाधार भारतेन्दु युग है।
- साहित्य सृजन की दृष्टि से हिन्दी गद्य की सभी विधाओं का सूत्रपात इसी युग में हुआ।
- समाज में प्रचलित सृष्टियों एवं अन्धाविश्वासों को खोलकर दिखाने में इस समय की रचनाएँ सक्षम हो गयी।
- भारतेन्दुकाल का साहित्य व्यापक जागरण का सन्देश लेकर आया और भाषा के स्वरूप विकास में भी अभूतपूर्व प्रगति हुई।

Recap / पुनरावृत्ति

- भारतेन्दु हरिश्चंन्द्र की पत्रिका है 'हरिश्चंन्द्र मैगजीन'
- प्रतापनारायण मिश्र की पत्रिका है 'ब्राम्हण'
- बालकृष्ण भट्ट की पत्रिका है 'हिन्दी प्रदीप'
- बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन की पत्रिका है 'आनंदकादंबिनी'
- लाला श्रीनिवास दास की पत्रिका है 'सदादर्श'
- राधाचरण गोस्वामी की पत्रिका है 'भारतेन्दु'
- भारतेन्दु युग के प्रमुख निबंधकार हैं - भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र बालकृष्ण भट्ट, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन', लाला श्रीनिवास दास, राधाचरण गोस्वामी, काशीनाथ खत्री
- भारतेन्दु युग की अलोचना 'हिन्दी प्रदीप' नामक एक ही पत्रिका में प्रकाशित करता था
- भारतेन्दु युग के उपन्यासों में ऐतिहासिक, सामाजिक, जासूसी, तिलस्मी-ऐयारी और रोमानी प्रवृत्ती देख सकते हैं
- भारतेन्दु युग के गद्यकारों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, लाला श्रीनिवासदास, देवकीनन्दन खत्री, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' आदि प्रमुख हैं

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतेन्दु युग के प्रमुख तीन निबंधकार का नाम लिखिए ?
2. भारतेन्दु युग के प्रमुख तीन पत्रिकाओं का नाम लिखिए ?
3. श्रद्धाराम फुल्लौरी कृत उपन्यास का नाम लिखिए ?
4. लाला श्रीनिवास दास कृत उपन्यास का नाम लिखिए ?
5. 'मनोहर कहानी' का संपादन किसने किया ?
6. भारतेन्दु के नाटक का नाम लिखिए?
7. 'कथा कुसुम कलिका' किसकी कहानी है ?
8. भारतेन्दु हरिश्चंद्र की पत्रिका का नाम क्या है ?

Answers उत्तर

1. भारतेन्दु हरिश्चंन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन'
2. हरिश्चंद्र मैगजीन, ब्राम्हण, हिन्दी प्रदीप
3. भाग्यवती
4. परीक्षा गुरु
5. किशोर द्वारा संपादित
6. नीलदेवी, अंधेर नगरी, सती प्रताप, प्रेम जोगिनी
7. अंबिकादत्त व्यास
8. 'हरिश्चंद्र मैगजीन'

Assignments प्रदत्त कार्य

1. भारतेन्दु युग की प्रमुख उपन्यासों और उनकी रचानाकारों की बारे में एक टिप्पणी लिखिए।
2. भारतेन्दु युगीन निबंध हिन्दी साहित्य का अमूल्य दस्तावेज़ है। अपनी राय स्पष्ट कीजिए।
3. भारतेन्दु युग की कथा साहित्य के बारे में अपनी राय व्यक्त कीजिए।
4. भारतेन्दु युग के प्रमुख निबंधकारों के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।
5. भारतेन्दु युग के तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों को व्यक्त कीजिए।

इकाई : 3
द्विवेदी युग में गद्य का विकास और प्रमुख गद्यकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- द्विवेदी युगीन गद्य साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- द्विवेदी युगीन गद्य साहित्यकारों के बारे जानकारी प्राप्त करता है।
- द्विवेदी युगीन हिन्दी कहानी के बारे जानकारी प्राप्त करता है।
- द्विवेदी युगीन हिन्दी उपन्यास के बारे जानकारी प्राप्त करता है।
- द्विवेदी युगीन हिन्दी नाटक के बारे जानकारी प्राप्त करता है

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

द्विवेदी युग सन् 1903 से 1920 तक माना जाता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अपने युग के लेखकों का दिशा-निर्देशन किया। 'सरस्वती' के माध्यम से आपने खड़ी बोली को व्यवस्थित रूप देने का महान कार्य किया। वे सम्पादकीय तथा लेखों के माध्यम से लेखकों को शुद्ध भाषा और शैली का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करते थे। द्विवेदी युग में निबन्ध, कहानी, नाटक, जीवनी आदि अनेक विधाओं में रचनाएँ की गयीं। इस काल के प्रमुख लेखक पदमसिंह शर्मा, श्यामसुन्दर दास, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', सरदार पूर्णसिंह आदि हैं।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- द्विवेदी युग में सामाजिक, धार्मिक, नैतिक आदि विभिन्न विषयों पर गद्य साहित्य का सृजन हुआ।
- इस काल के लेखकों ने भारतेन्दु युग में प्रयोग होने वाली भाषा-शैली को परिमार्जित तथा विकसित रूप दिया।
- इसलिए कहा जा सकता है कि हिन्दी गद्य के परिमार्जन एवं विकास में 'द्विवेदी' युग का महत्वपूर्ण योगदान है।

Discussion / चर्चा

द्विवेदी-युग के प्रवर्तक महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। इस युग के प्रायः सभी साहित्यिक आन्दोलन उनसे प्रेरित एवं प्रभावित हुए हैं। ये अपने युग की साहित्यिक चेतना के सूत्रधार हैं। इस युग के साहित्य में जिस आदर्श की प्रतिष्ठा हुई, उसका श्रेय द्विवेदी जी को है।

द्विवेदी युग में गद्य-रचनाओं के साथ-साथ पद्य रचनाएँ भी खड़ी बोली में होने लगीं। कविता की भाषा की दृष्टि से इस युग में एक भारी परिवर्तन हुआ। खड़ी बोली का एकछत्र साम्राज्य स्थापित हो गया। उसके व्याकरणसम्मत रूप, परिष्कार तथा संस्कार का कार्य द्विवेदी जी ने बड़े मनोयोग के साथ किया।

द्विवेदी युग की कविता भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखती है। उसमें राष्ट्रीय चेतना, समाज-सुधार की भावना और उदार धार्मिकता का समावेश हुआ। वह मानवतावाद, विश्व प्रेम और जनसेवा को प्रश्रय देने लगी। उसमें नैतिकता, उपदेशात्मकता और प्रकृति-चित्रण की प्रधानता मिलती है। इस युग में देशी एवं विदेशी भाषाओं की कविताओं का खड़ीबोली में अनुवाद हुआ।

द्विवेदी युग के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

भारतेन्दु युग में जिन नवीन काव्य- प्रवृत्तियों का जन्म हुआ था, द्विवेदी युग में उनका विकास हुआ। हिन्दी काव्य में नयी

चेतना एवं आदर्श की प्रतिष्ठा हुई। जन-जीवन को आशा और विश्वास का सन्देश मिला। इस युग के काव्य की भावगत एवं कलागत मुख्य प्रवृत्तियाँ हैं -

1. **राष्ट्रीय चेतना** - इस युग के कवियों ने अतीत काल के गौरवमय आख्यानों द्वारा भारतवासियों में देश प्रेम की भावना को जगाया। जातीय आदशों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय आदर्शों को ग्रहण किया। इन्होंने भारत की अखण्डता एवं स्वतन्त्रता के लिए स्तुत्य कार्य किया। इस क्षेत्र में कविवर मैथिलीशरण गुप्त और माखनलाल चतुर्वेदी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
2. **सामाजिक चेतना**- इस युग के कवियों ने समाज-सुधार को दृष्टि में रखकर भी काव्य-रचना की है। इन्होंने स्त्री-शिक्षा एवं विधवा-विवाह का समर्थन किया और दहेज प्रथा, बाल-विवाह, बाह्य आडम्बरों आदि सामाजिक असंगतियों का घोर विरोध किया। ये कवि सामाजिक प्रगति के आकांक्षी थे, इनकी सुधारवादी भावना में सद्भावना और मण्डनात्मक प्रवृत्ति प्रमुख थी। इस दिशा में अयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त आदि कवियों का योगदान स्तुत्य है।

द्विवेदी युग के साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ

1. **राष्ट्रीयता** : भारत में बढ़ती हुई राजनीतिक चेतना (political awareness) और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के कारण राष्ट्रीयता द्विवेदी युग के साहित्य की प्रधान भावधारा थी। देशभक्ति और देश प्रेम के ऊपर कई कविताओं की रचना इस युग में हुई। भारत के अतीत पर गर्व और वर्तमान स्थिति पर दुख प्रकट किया गया। स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने और विदेशी वस्तुओं को त्यागने का आग्रह किया गया।
2. **सामान्य जनता की प्रतिष्ठा:** आरंभिक काल में साहित्य केवल ईश्वर, राजा, सामंत, योद्धावों या नायिकाओं को ध्यान में रखकर लिखा गया था। किन्तु द्विवेदी युग में सामान्य मनुष्य को साहित्य में स्थान मिला। आम लोगों के सुख-दुख और परिस्थितियों का वर्णन काव्य में सहज भाव से किया गया। मैथिली शरण गुप्त की 'किसान', सियारामशरण की 'अनाथ' और सनेही की 'कृषक क्रंदन' इसी प्रकार की कविताएँ हैं।
3. **नीति और आदर्श** : द्विवेदी युग का काव्य आदर्शवादी और नीतिपरक है। काव्य में असत्य पर सत्य की विजय दिखलाई गई है। स्वार्थ-त्याग, कर्तव्यपालन, आत्मगौरव आदि ऊँचे आदर्शों की प्रेरण दी गई है। मैथिलीशरण गुप्त का - साकेत, हरिऔध का प्रिय प्रवास और रामनरेश त्रिपाठी की मिलन ऐसी ही रचनाएँ हैं। आदर्शो को प्रस्तुत करने के लिए इतिहास-पुराण से कहानियाँ लिया गया।
4. **हास्य-व्यंग्य काव्य:** द्विवेदी युग में हास्य-व्यंग्य (satire) काव्य के माध्यम से सामाजिक और धार्मिक बुराइयों की निंदा की गई है। साथ ही अपनी संस्कृति छोड़कर विदेशी पाश्चात्य (western) संस्कृति को अपनाने वालों पर व्यंग्य (मज़ाक) किया गया है।
5. **काव्यरूप:** द्विवेदी युग के साहित्य के सभी काव्यरूपों का प्रयोग हुआ है। प्रबंध, मुक्तक, प्रगीत आदि विधा का प्रयोग हुआ। हिन्दी के कई प्रसिद्ध महाकाव्य भी इसी युग में लिखे गए जैसे साकेत (मैथिली शरण गुप्त), प्रिय प्रवास (हरिऔध) आदि। कई प्रसिद्ध खंडकाव्य भी इसी युग मे लिखे गए जैसे रंग में भंग (गुप्त), प्रेमपथिक (जयशंकर प्रसाद) आदि।
6. **भाषा:** द्विवेदी युग में खड़ी बोली हिन्दी ने ब्रजभाषा का स्थान ले लिया। इस काल के साहित्य ने खड़ी बोली को भाषा-सौन्दर्य, मार्दव (कोमलता) और अभिव्यंजना क्षमता (विचारों या भावों को शब्दों या संकेतों द्वारा ठीक तरह से तथा स्पष्ट रूप से प्रकट करने की क्रिया) के रूप में समृद्ध बनाया।

द्विवेदी युग का गद्य साहित्य:

इस काल में निबंध, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं समालोचना का अच्छा विकास हुआ। इस युग के निबंधकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र, श्याम सुंदर दास, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बाल मुकंद गुप्त और अध्यापक पूर्ण सिंह आदि उल्लेखनीय हैं। इनके निबंध गंभीर, ललित एवं विचारात्मक हैं। किशोरीलाल गोस्वामी और बाबू गोपाल राम गहमरी के उपन्यासों में मनोरंजन और घटनाओं की रोचकता है।

हिन्दी कहानी का वास्तविक विकास द्विवेदी युग से ही शुरू हुआ। किशोरी लाल गोस्वामी की इंदुमती, बंग महिला की कहानी दुलाई वाली, शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय', जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम' और चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' महत्त्वपूर्ण हैं। समालोचना के क्षेत्र में पद्मसिंह शर्मा उल्लेखनीय हैं।

हिन्दी गद्य के विकास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के आगमन से हिन्दी गद्य को एक महान प्रतिभा का सहयोग मिला। इन्होंने खड़ी-बोली गद्य को व्यवस्थित करने का कार्य लिया। 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से द्विवेदी जी ने अपने समय के साहित्यकरों का मार्गदर्शन किया।

रचनाएँ-

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने गद्य और पद्य दोनों में मौलिक और अनूदित पन्थों की रचना की।

उनकी कृतियां इस प्रकार हैं -

'तरुणोपदेश', 'नेपघचरितचर्चा', 'वैज्ञानिक कोन हिन्दी नवरा कालिदास की समालोचना', 'कालिदास की निरंकुशता', 'हिन्दी की पहली किताब', 'रसज-जन', 'सुकवि-संकीर्तन'(संकलन), 'वाग्विलास', 'समालोचना', 'समुच्चय', 'विचार-विमर्श' आदि इनके मौलिक ग्रन्थ हैं। 'भामिनी विलास', 'बेणी संहार कुमार सम्भव', 'रघुवंश', 'स्वाधीनता', 'शिक्षा', 'बेकन विचार', 'रत्नावली', 'मेघदूत' 'किरातार्जुनीयम्', 'आख्यायिका', 'सप्तक' आदि एक दर्जन से अधिक उनकी अनूदित रचनाएँ हैं।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- द्विवेदी-युग के प्रवर्तक महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं।
- द्विवेदी युग में गद्य-रचनाओं के साथ-साथ पद्य रचनाएँ भी खड़ी बोली में होने लगीं।
- हिन्दी काव्य में नयी चेतना एवं आदर्श की प्रतिष्ठा हुई ।

Critical Overview / अवलोकन

- द्विवेदी जी अपने युग की महान विभूति थे।
- उन्होंने हिन्दी के विकास के विविध स्रोत प्रवाहित किये।
- उन्होंने भाषा का परिष्कार किया।
- द्विवेदी जी की हिन्दी सेवाएँ सम्मानपूर्वक स्मरण की जाती रहेंगी ।
- द्विवेदी जी प्रबुद्ध समीक्षक, उत्कृष्ट विचारक,सफल सम्पादक निबन्ध लेखक और कवि थे। समसामयिक रचनाकारों ने इनसे प्रेरणा प्राप्त कर स्तरीय साहित्य की रचना की।
- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को युग निर्माता और युग प्रवर्तक होने का गौरव प्राप्त है।
- हिन्दी गद्य का बहुमुखी विकास द्विवेदी जी के समय में ही हुआ है ।

Recap / पुनरावृत्ति

- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को युग निर्माता और युग प्रवर्तक कहा जा सकता
- द्विवेदी जी प्रबुद्ध समीक्षक, उत्कृष्ट विचारक,सफल सम्पादक निबन्ध लेखक और कवि थे
- इस युग के निबंधकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र, श्याम सुंदर दास, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बाल मुकंद गुप्त और अध्यापक पूर्ण सिंह आदि उल्लेखनीय हैं
- 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी निबंध साहित्य में एक मील की पत्थर था
- द्विवेदी युग की कविता भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखती है
- भारतेन्दु युग में जिन नवीन काव्य- प्रवृत्तियों का जन्म हुआ था, द्विवेदी युग में उनका विकास हुआ
- हिन्दी कहानी का वास्तविक विकास द्विवेदी युग से ही शुरू हुआ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. द्विवेदी युग के प्रमुख तीन निबंधकारों का नाम लिखिए ?
2. द्विवेदी का पूरा नाम क्या है ?
3. द्विवेदी युग के एक प्रमुख पत्रिका का नाम लिखिए ?
4. बंग महिला की कहानी का नाम क्या है ?
5. शुक्ल की कहानी का नाम क्या है ?
6. जयशंकर प्रसाद की पहली कहानी कौनसी है ?
7. 'दुलाई वाली' किस प्रकार की विधा है ?
8. 'तरुणोपदेश' के रचनाकार कौन है?

Answers उत्तर

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र, श्याम सुंदर दास
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी
3. सरस्वती
4. दुलाई वाली
5. ग्यारह वर्ष का समय
6. ग्राम
7. कहानी
8. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी गद्य साहित्यिक जगत में महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान ।
2. द्विवेदी युगीन साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ क्या क्या है ?
3. द्विवेदी युगीन हिन्दी कहानीकारों पर पर्चा लिखिए।
4. द्विवेदी युग के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
5. महावीर प्रसाद द्विवेदी के आगमन हिन्दी गद्य को एक नया रूप प्रदान किया, व्यक्त कीजिए।

इकाई : 4

उत्तर द्विवेदी युग में गद्य और गद्यकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- उत्तर द्विवेदी युगीन गद्यकार की जानकारी प्राप्त करता है।
- उत्तर द्विवेदी युगीन उपन्यास के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- उत्तर द्विवेदी युगीन कहानी के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- उत्तर द्विवेदी युगीन निबंध के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।
- उत्तर द्विवेदी युगीन अलोचना के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद तथा प्रेमचन्द जैसी साहित्यिक प्रतिभाएँ उत्तर द्विवेदी युग में अवतरित हुई। शुक्ल जी खड़ी बोली गद्य में विषय की गम्भीरता का समावेश किया तथा भाषा-शैली के परिमार्जित रूप को अपनाया। प्रसाद नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि की श्रेष्ठ रचनाओं से हिन्दी गद्य को गौरवान्वित किया। उक्त तीन गद्यकारों के नामों के आधार पर इस युग को 'शुक्ल- प्रेमचन्द प्रसाद युग' भी कहा जा सकता है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- विषयों की विविधता उत्तर द्विवेदी समय की प्रमुख विशेषता है।
- उत्तर द्विवेदी युग के अन्य प्रमुख लेखक बाबू गुलाबराय, नन्ददुलारे बाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, वियोग हरि, लक्ष्मीनारायण मिश्र, रामकुमार वर्मा, हरिकृष्ण प्रेमी, निराला, महादेवी वर्मा आदि हैं।
- उत्तर द्विवेदी युग के गद्यकारों ने नाटक, निबन्ध कहानी, उपन्यास, समीक्षा आदि विषयों पर लिखा है। यात्रावृत्त, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि कई विधाओं का उन्नयन भी इसी युग में हुआ ।
- 'शुक्ल युग' हिन्दी गद्य का गौरवकाल रहा है।

Discussion / चर्चा

गद्य के विकास में इस युग का विशेष महत्त्व है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंध, हिन्दी साहित्य के इतिहास और समालोचना के क्षेत्र में गंभीर लेखन किया। उन्होंने मनोविकारों पर हिन्दी में पहली बार निबंध लेखन किया। साहित्य समीक्षा से संबंधित निबंधों की भी रचना की। उनके निबंधों में भाव और विचार अर्थात् बुद्धि और हृदय दोनों का समन्वय है। हिन्दी शब्दसागर की भूमिका के रूप में लिखा गया उनका इतिहास आज भी अपनी सार्थकता बनाए हुए है। जायसी, तुलसीदास और सूरदास पर लिखी गयी उनकी आलोचनाओं ने भावी आलोचकों का मार्गदर्शन किया।

प्रमुख गद्यकार

जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बाबू गुलाबराय, नन्ददुलारे वाजपेयी, महादेवी वर्मा, राय कृष्णदास, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि शुक्ल युग के प्रमुख गद्यकार हैं।

इस काल के अन्य निबंधकारों में जैनेन्द्र कुमार जैन, सियारामशरण गुप्त, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी और जयशंकर प्रसाद आदि उल्लेखनीय हैं। कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद ने क्रांति ही कर डाली। अब कथा साहित्य केवल मनोरंजन, कौतूहल और नीति का विषय ही नहीं रहा बल्कि जीवन की समस्याओं से भी जुड़ गया। उनकी तीन सौ से अधिक कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ भागों में संगृहीत हैं। 'पूस की रात', 'कफ़न', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'पंच परमेश्वर', 'नमक का दरोगा' तथा 'ईदगाह' आदि उनकी कहानियाँ खूब लोकप्रिय हुई। इसकाल के अन्य कथाकारों में विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक, वृंदावनलाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', उपेन्द्रनाथ अश्क, जयशंकर प्रसाद, भगवतीचरण वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद का विशेष स्थान है। इनके 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' जैसे ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास और कल्पना तथा भारतीय और पाश्चात्य नाट्य पद्धतियों का समन्वय हुआ है।

लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, जगदीशचंद्र माथुर आदि इस काल के उल्लेखनीय नाटककार हैं।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- इस युग को 'शुक्ल- प्रेमचन्द प्रसाद युग' भी कहा जा सकता है।
- उत्तर द्विवेदी काल हिन्दी गद्य का उत्कर्ष काल रहा है।
- निबन्ध, समीक्षा, इतिहास लेखन के क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने दिशा निर्देशन का कार्य किया।

Critical Overview / अवलोकन

- कहानियों में काव्यात्मकता के स्थान पर वैचारिस्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी के उपन्यासों में 'आंचलिक उपन्यास' एक उल्लेखनीय उपलब्धि रही।
- आंचलिक उपन्यास में किसी विशेष 'अंचल' का चित्रण कथानक के द्वारा किया जाता है।
- प्रत्येक युग के साहित्य में नर नारी के पारस्परिक आकर्षण, आसक्ति, दांपत्य प्रेम, यौन भावना तथा कामवासना की कोमल भावना का अभिव्यंजन होता आया है।
- किसी भी प्रकार के शोषणों के प्रति आवाज बुलंद कर अपनी मुखर भाषा में तनाव पूर्ण स्थितियों के संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत करता है।
- समाज की संघर्षशील विद्रोही मानसिकता के चित्रण में नानाविध प्रतीकों का सम्यक उपायोग करता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- विषयों की विविधता इस समय की प्रमुख विशेषता है
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हज़ार प्रसाद द्विवेदी आदि इस समय के महान लेखक थे
- यात्रावृत्त, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि कई विधाओं का विकास हुआ
- जैनेन्द्र कुमार, सियाराम शरण गुप्त, पदूमलाल पुन्नालाल बख्शी और जयशंकर प्रसाद आदि प्रमुख निबंधकार हैं

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. द्विवेदी युग के प्रमुख रचनाकार का नाम लिखिए ?
2. द्विवेदी युग के दो निबंधकार का नाम लिखिए?
3. प्रेमचंद का किसी एक उपन्यास का नाम लिखिए ?
4. द्विवेदी युग में विकसित अन्य विधाएँ क्या क्या हैं ?
5. शुक्ल युग की समय सीमा कब से कब तक है ?
6. जयशंकर प्रसाद के तीन नाटकों का नाम लिखिए ?
7. द्विवेदी युग के प्रमुख तीन नाटककारों के नाम लिखिए ?
8. 'ईदगाह' किसकी कहानी है ?

Answers उत्तर

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. जैनेन्द्र कुमार जैन, सियाराम शरण गुप्त
3. निर्मला, गबन
4. यात्रावृत्त, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि ।
5. सन् 1920 से 1936 तक
6. चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी
7. लक्ष्मीनारायण मिश्र, हरिकृष्ण प्रेमी, जगदीशचंद्र माथुर
8. प्रेमचन्द

Assignments प्रदत्त कार्य

1. गद्य साहित्य में प्रेमचंद का योगदान स्पष्ट कीजिए।
2. उत्तर द्विवेदी युगीन आलोचना के बारे में अपना विचार प्रकट कीजिए।
3. उत्तर द्विवेदी युग के प्रमुख कहानीकारों पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
4. उत्तर द्विवेदी युगीन निबंधकार और उनके प्रमुख निबंधों के बारे में पर्चा लिखिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास -डॉ हरिश्चन्द्र अग्रहरि
2. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास - डॉ अमित कुमार सिंह
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ अमित कुमार सिंह
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - नगेन्द्र
5. आधुनिक उपन्यास : विविध आयाम - डॉ विवेकी राय
6. आधुनिक हिन्दी कहानी - लक्ष्मीनारायण लाल

SGOU

BLOCK - 04

हिन्दी कथा साहित्य

SGOU

इकाई : 1
हिन्दी उपन्यास साहित्य का उदय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी के प्रारंभकालीन उपन्यास साहित्य से परिचय प्राप्त करता है।
- हिन्दी के प्रारंभिक उपन्यास साहित्य की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है।
- हिन्दी के आदिकालीन उपन्यास साहित्य के प्रमुख रचनाकारों के बारे में समझता है।
- उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद का योगदान समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी भाषा के गद्य साहित्य में उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय विधा है। हिन्दी उपन्यास के मूल तत्व संस्कृत साहित्य में मिलते हैं। हिन्दी साहित्य में उपन्यास नामक गद्य विधा का वर्तमान रूप में प्रादुर्भाव आधुनिक काल से ही माना जाता है। हिन्दी उपन्यास के मूल तत्व संस्कृत साहित्य में मिलते हैं। इस के विकास की श्रेय अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों को दिया जा सकता है। हिन्दी में इस विधा का आरम्भ अंग्रेजी एवं बंगला उपन्यासों की लोकप्रियता से हुआ। हिन्दी में उपन्यास का आरंभ भी अंग्रेजी से अनूदित उपन्यासों से माना जाता है। आधुनिक काल के भारतेन्दू-युग से ही इसकी परंपरा मिल जाती है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- अध्यायों या प्रकरणों में लिखी हुई ऐसी कल्पित और बड़ी आख्यायिका है उपन्यास।
- उपन्यासों में अनेक पात्र और विस्तृत तथा सुसंबद्ध घटना है।
- 'प्रेमचंद' को हिन्दी उपन्यासकारों का केन्द्रबिन्दु मानते हुए हिन्दी उपन्यास के विकास का अध्ययन इस प्रकार किया है, 'प्रेमचंदपूर्व हिन्दी उपन्यास', 'प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यास' और 'प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास'।

Discussion / चर्चा

आधुनिक काल में विकसित गद्य विधाओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। आलोच्य काल कथा साहित्य की दृष्टि से उपन्यास अपेक्षाकृत समृद्ध है। अंग्रेजी तथा बंगला साहित्य के प्रभाव से हिन्दी में उपन्यास लेखन का प्रारम्भ माना जाता है। हिन्दी के मौलिक उपन्यासों की रचना भारतेन्दु युग से शुरू हुई है।

हिन्दी उपन्यास का उदय

गद्य साहित्य के विकास ने ही उपन्यास को जन्म दिया। उपन्यास को आधुनिक जीवन का 'महाकाव्य' कहा जाता है। आरंभ में उपन्यास मनोरंजन, आदर्श व शिक्षा देने के उद्देश्य से लिखा जाता था। आज उपन्यास साहित्य यथार्थ के विविध रूपों में लिखा जा रहा है। यह व्यक्ति केंद्रित होने के साथ-साथ समाज के उपेक्षित वर्ग को भी अपने कथानकों में समाहित कर चुका है।

आधुनिक युग की परिस्थितियों ने ही हिन्दी उपन्यास को जन्म दिया। उपन्यास की इस वास्तविक जमीन को सर्व प्रथम 'प्रेमचंद' ने पहचाना था। उपन्यास शब्द 'उप' समीप और 'न्यास' थाती के योग से बना है। जिसका अर्थ होता है निकट रखी हुई वस्तु। अर्थात वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारी ही जीवन का प्रतिबिंब है, इसमें हमारी ही कथा हमारी ही भाषा में कही गई है।

किसी भी साहित्य प्रवृत्ति के पीछे उसकी तात्कालिक परिस्थितियाँ काम करती है यह सत्य है, यह भी सत्य है कि बिना किसी कारण का कोई भी कार्य संभव नहीं होता। उपन्यास उन्नीसवीं सदी के सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्य विधा है। उपन्यास के उदय के पीछे भी समाज और युग की विशिष्ट परिस्थितियों का योग है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- हिन्दी के मौलिक उपन्यासों की रचना भारतेन्दु युग से शुरू हुई है।
- उपन्यास का प्रारम्भ भारतेन्दु काल में हो गया था।

Critical Overview / अवलोकन

- मध्यकालीन रूमानी कथाओं की जगह वास्तविक चरित्रों ने ली हैं, और भाषा-कर्म विविध रंगों से खिला हैं। उपन्यास की भाषा में भी परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व दिखाई दे पड़ता हैं।
- अंग्रेजी पात्रों की प्रस्तुति के कारण उपन्यासें में अंग्रेजी शब्दों का उपयोग हैं, तो साथ ही प्रारंभिक हिन्दी एवं संस्कृत और फ़ारसी का भी उपयोग हैं।
- श्रीनिवासदास भाषा- प्रयोजन के प्रति अति-जागरूक मालूम होते हैं और अलग अलग परिस्थितियों में वह उचित भाषा का प्रयोग करना जानते हैं।
- नैतिक और उपदेशात्मक सर्गो में संस्कृत-फ़ारसी का ज़्यादा उपयोग हैं तो सामान्य बातचीत में बोल-चाल की हिन्दी का उपयोग हैं।

Recap / पुनरावृत्ति

- आधुनिक (सन् 1800 से आज तक) काल का दूसरा नाम गद्यकाल है
- साहित्य को पद्य और गद्य के रूप में विभाजित कर सकते हैं
- आधुनिकता की पहली निशानी हैं उपन्यास
- गद्य विधाओं में उपन्यास का प्रमुख स्थान है
- लाला श्रीनिवासदास के परीक्षागुरु(1843) हिन्दी का पहला उपन्यास माना जाता है
- यह उपन्यास अंग्रेज़ उपनिवेश के दौरान लिखा गया था

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी का पहला उपन्यास कौन-सा है ?
2. 'परीक्षागुरु' की रचना कब हुई ?
3. 'परीक्षागुरु' में स्पष्ट मुख्य विषय क्या है ?
4. श्रीनिवासदास किससे प्रभावित थे ?
5. राधाकृष्ण दास का उपन्यास का नाम क्या है ?
6. 'नूतनब्रह्मचारी' किसका उपन्यास है ?
7. 'सौ अजान एक सुजान' किस प्रकार की विधा है ?
8. एक तिलस्मी उपन्यासकार का नाम लिखिए ?

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Answers उत्तर

1. लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखित 'परीक्षागुरु' हिन्दी का पहला उपन्यास है।
2. 1843
3. अंग्रेज़ी उपनिवेश
4. अंग्रेजी उपन्यासकार ओलिवर गोल्डस्मिथ से प्रभावित थे।
5. 'निःसहाय हिन्दु'
6. बालकृष्ण भट्ट
7. उपन्यास
8. देवकीनंदन खत्री

Assignments प्रदत्त कार्य

1. परीक्षा गुरु की विशेषताओं पर टिप्पणी तैयार कीजिए?
2. हिन्दी उपन्यास के बारे में एक टिप्पणी तैयार कीजिए ?
3. आधुनिक गद्य साहित्य के विकास में उपन्यास का योगदान प्रमुख है। सिद्ध कीजिए।
4. हिन्दी कथा साहित्य की परिचय दीजिए।
5. आदिकालीन उपन्यास साहित्य के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।
6. गद्य विधाओं में उपन्यास का प्रमुख स्थान है, व्यक्त कीजिए।

इकाई : 2

प्रेमचंद पूर्व उपन्यास- प्रेमचंद युगीन उपन्यास- प्रेमचंदोत्तर उपन्यास साहित्य का विकास। (1942 तक)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी उपन्यास के विकास से परिचय प्राप्त करता है।
- हिन्दी उपन्यास के प्रारंभ से वर्तमान तक के उपन्यासकारों से परिचय प्राप्त करता है।
- उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचंदजी का स्थान समझता है।
- हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में लाला श्रीनिवासदास, प्रेमचन्द, प्रसाद, जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय, उषा प्रियंवदा आदि के देन और स्थान को समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम का आरंभिक युग प्रेमचन्द पूर्व युग से स्वीकार किया जाता है। उपन्यास निर्माण की दृष्टि से यह काल विभाग अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और इसमें सामाजिक, तिलस्मी, जासूसि भावप्रधान ऐतिहासिक आदि अनेक प्रकार के उपन्यास लिखे गये है। सन् 1918-1936 तक का समय हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम का विकास काल है। मुंशी प्रेमचन्द के नाम पर इसे प्रेमचन्द-युग का संज्ञा दी गयी है। सन् 1918 में प्रेमचन्द कृत उपन्यास सेवासदन के प्रकाशन से हिन्दी उपन्यास साहित्य के नये युग का प्रारंभ हो गया।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- भारतेन्दु युग (1850 से 1900 तक)
- द्विवेदी युग (1900 से 1920 तक)
- प्रेमचन्द युग (1904 से 1936 तक)
- प्रेमचंदोत्तर युग (1936 के बाद)

Discussion / चर्चा

प्रेमचंद पूर्व उपन्यास

इस काल में लिखे गए उपन्यास मुख्य रूप से सुधारवादी एवं उपदेशवादी प्रवृत्ति से परिचालित थे और उनका मुख्य लक्ष्य मनोरंजन ही माना जा सकता है। यह हिन्दी उपन्यास का शुरुआती दौर था।

प्रेमचंद पूर्व उपन्यासकारों में लाला श्रीनिवासदास, बालकृष्ण भट्ट, राधाकृष्ण दास, किशोरीलाल गोस्वामी, देवकीनंदन खत्री, गोपालराम गहमरी और भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाम उल्लेखनीय है। हिन्दी उपन्यासकला की दृष्टि से इस काल के उपन्यास उल्लेखनीय न हों, पर उस समय के उपन्यासकारों ने उपन्यास को एक दिशा देने का प्रयास अवश्य किया है।

प्रेमचंद युगीन उपन्यास

प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यासकारों में उपन्यास साम्राट 'प्रेमचंद' अपनी महान प्रतिभा के युग प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं। उन्हों ने हिन्दी उपन्यास शिल्प का विकास किया। उनके उपन्यासों में पहली बार सामान्य जनता की समस्याओं की कलात्मक अभिव्यक्ति की गई थी। प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों में जयसंकर प्रसाद, विश्वंभरनाथ 'कौशिक',

आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्रतापनारायन श्रीवास्तव, पाण्डेय बेचान शर्मा 'उग्र', वृंदवानलल वर्मा, भगवती प्रसाद वाजपेयी, जी.पी.श्रीवास्तव आदि मुख्य है।

प्रेमचंद युगीन उपन्यास में विषय- वैविद्य और शिल्पगत नवीनता दिखाई पड़ती है। इस युग के उपन्यासकारों ने एक ओर सामाजिक समस्याओं को अपने उपन्यासों का विषय बनाया, दूसरी ओर ऐतिहासिक कथानकों पर नवीन दृष्टि से विचार करते हुए मनोरंजक तथा सुरुचिपूर्ण उपन्यासों की रचना की।

इस समय तक हिन्दी उपन्यास का क्षेत्र पर्याप्त व्यापक हो गया था और वह मानवीय संबंधों को उजागर करनेवाला एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बन गया था।

प्रेमचंदोत्तर उपन्यास

प्रेमचंद के उपरांत हिन्दी उपन्यास किसी एक निश्चित दिशा की ओर अग्रसर नहीं हुआ बल्कि उसकी विविध धाराएँ अनेक दिशाओं की ओर प्रकाशित हुई जैसे- मनोविश्लेषणवादी उपन्यास, साम्यवादी (प्रगतिवादी) उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, आंचलिक उपन्यास और प्रयोगवादी उपन्यास।

उस समय के प्रमुख उपन्यासकार थे 'जैनेन्द्र कुमार', 'इलाचंद्र जोशी', 'अज्ञेय', 'यशपाल' आदि। इन उपन्यासों पर 'फ्रायड़' का गहरा प्रभाव है। जैनेन्द्र के प्रमुख उपन्यास हैं, 'परख सुनीता', 'कल्याणी', 'त्यागपत्र' आदि। इलाचन्द्र जोशी के उपन्यास हैं, 'सन्यासी', 'पर्दा की रानी', 'जहाज का पंछी', 'मुक्ति पथ' आदि। अज्ञेय का प्रमुख उपन्यास हैं, 'नदी के द्वीप', 'शेखर एक जीवनी' आदि।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- देश में परिवर्तन लाने में हिन्दी उपन्यास का योगदान महत्वपूर्ण है।
- 'प्रेमचंद' अपनी महान प्रतिभा के युग प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं।

Critical Overview / अवलोकन

- आधुनिक उपन्यासों में विषय-वैविद्य के साथ-साथ शैलियों के विभिन्न रूप दिखाई पड़ते हैं।
- आज उपन्यास का कथ्य जीवन के अधिक नजदीक है, उस में यथार्थ का पुट अधिक है।
- मानवीय संबंधों के बदलते रूप को उसमें उजागर करने का प्रयास किया गया है तथा महानगरीय बोध से उत्पन्न मानसिकता को अभिव्यक्ति दी गई है।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी साहित्य का पहला उपन्यास श्रीनिवासदास लिखित उपन्यास परीक्षागुरु(1843) है
- प्रेमचंद पूर्व युग के उपन्यास
- प्रेमचंद युग के उपन्यास
- प्रेमचंन्दोत्तर युग के उपन्यास
- प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों जैनेन्द्र कुमार, सच्चिदानंद हिरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', उपेन्द्रनाथ अश्क और यशपाल आदि प्रमुख हैं
- जैनेन्द्र कुमार को मनोवैज्ञानिक उपन्यास की शुरुआत करने का श्रेय दिया जाता
- प्रेमचंद यथार्थवादी उपन्यास का जनक कहा जाता है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आचार्य रामचंद्र सुक्ल ने हिन्दी का प्रथम प्रतिष्ठित उपन्यासकार किसे माना ?
2. मुंशी प्रेमचंद का भारतीय ग्रामीण जीवन की विषमताओं पर केन्द्रित उपन्यास कौन सा है ?
3. प्रसाद जी का प्रथम उपन्यास कौन सा है ?
4. अमृतलाल नागर का जीवनी परख उपन्यास कौन-सा है ?
5. ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में विख्यात रचनाकार कौन है ?
6. यशपाल के किस उपन्यास में भारत विभाजन की भूमिका और उसके दुष्परिणामों का विस्तृत चित्रण हुआ है ?
7. तिलस्मी ऐयारी उपन्यासों के जनक कौन है ?
8. सेवसदन उपन्यास किस उपन्यासकार द्वारा रचित है ?

Answers उत्तर

1. किशोरीलाल गोस्वामी
2. प्रेमाश्रम
3. कंकाल
4. खंजन नयन
5. वृन्दावनलाल वर्मा
6. झूठा-सच
7. देवकी नंदन खत्री
8. प्रेमचंद

Assignments प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र पर टिप्पणी लिखिए ?
2. प्रेमचंद यथार्थवादी उपन्यासों का जनक है। स्पष्ट कीजिए ?
3. हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास की यात्रा कैसे थे ?
4. प्रेमचंदपूर्व उपन्यासकार के बारे में अपना विचार प्रकट कीजिए।
5. जयशंकर प्रसाद के बारे में अपनी जानकारी व्यक्त कीजिए।

इकाई : 3

हिन्दी कहानी साहित्य का उदय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कहानी साहित्य के उद्‌भव एवं विकास समझता है।
- हिन्दी की प्रमुख कहाँनियों की विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करता है।
- कहानी कला से जानकारी प्राप्त कर सकता है।
- प्रमुख कहानिकारों की कहानियों से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

कहानी आधुनिक काल की उपलब्धि है। हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा करीब सौ वर्षों की होती है। अन्य साहित्य विधाओं की तुलना में कहानी अत्यधिक लोकप्रिय विधा है। कहानी ऐसी एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करते हैं। वस्तुतः हिन्दी कहानी के गर्भ में संस्कृत के पौराणिक कथावृत्तों का आधार रहा है। हिन्दी कहानी का उद्‌भव 20वीं शती के प्रारंभिक वर्षों से ही हुआ है। सरस्वती का प्रकाशन और हिन्दी कहानी की उत्पत्ति लगभग समानान्तर घटनाएँ है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- मनुष्य के आविर्भाव के साथ ही कहानी का आविर्भाव हुआ है।
- कहानी कहना तथा सुनना मनुष्य का आदिम गुण है।

Discussion / चर्चा

कहानी में लेखक अपनी कल्पना के आधार पर कम से कम संदर्भों और कथापात्रों द्वारा जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को उद्‌घाटित कर देता है।

कहानी के तत्व

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने कहानी के छः तत्व बताये गये हैं, जिसके अनुसार कहानी की अच्छाई-बुराई की विवेचना कर सकती है। 1. कथावस्तु 2. चरित्र और चित्रण 3. संवाद 4. देश-काल और वातावरण 5. भाषा-शैली 6. उद्देश्य ।

1.कथावस्तु (Plot)

कथावस्तु कहानी का अनिवार्य तत्व है। इसके बिना कहानी लिख नहीं सकती है। कथावस्तु जीवन के विभिन्न स्तर और स्थल की हो जाती है। कथावस्तु काल्पनिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, घटना प्रधान, राजनीतिक या सामाजिक आदि किसी भी हो सकती है।

2.चरित्र-चित्रण (Characterization)

कहानीकार कहानी में पात्रों के सोच-विचार, कार्य पद्धति आदि के माध्यम से चरित्र चित्रण करता है। कहानी में कथापात्रों की भूमिका के अनुसार उसे मुख्य, सहायक और खल के रूप में विभाजित करते हैं। इसके बाद संदर्भ और स्वभाव के अनुसार उसका स्वभाव चित्रण करता है। यह चरित्र-चित्रण नाम से जाना जाता है।

3.संवाद (Dialogue)

संवाद को कथोपकथन, वार्तालाप आदि भी कहलाते हैं। कहानी को प्रभावशील और संवेदनशील बनाने के लिए संवाद

मुख्य भूमिका निभाता है।

4.देश-काल और वातावरण

कहानी में देश-काल और वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जिस स्थान में कहानी की घटना चलती है, उसे देश समझना चाहिए। कहानी की घटना जिस समय चलती है, उस समय को काल समझते हैं। देश और काल के अनुरूप कहानीकार कहानी में वातावरण पैदा करता है। वातावरण कभी भौतिक और कभी मानसिक हो सकता है। कभी-कभी दोनों प्रकार के भी हो सकते हैं।

5.भाषा-शैली

भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। हरेक लेखक की अपनी-अपनी भाषा होती है। कहानी की भाषा सहज, सरल, प्रवाह युक्त और आकर्षक होनी चाहिए। शैली आलंकारिक, व्यंग्यात्मक, प्रवाह युक्त, रोचक, भावात्मक आदि नहीं होता है तो पाठक अतृप्त हो जाता है।

6.उद्देश्य

साहित्य, उद्देश्य निष्ठ होना चाहिए। कहानी में कहानीकार का कोई न कोई उद्देश्य होता है।

पहली कहानी

हिन्दी की पहली कहानी और कहानीकार के बारे में विद्वानों में मतभेद है। इस विषय में एक निष्कर्ष पर पहुँचाना कठिन है। अधिकांश विद्वान आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मत को स्वीकार करते हैं। आचार्य शुक्ल के अनुसार किशोरीलाल गोस्वामी की इन्दुमती (1900) हिन्दी की पहली कहानी है। किशोरीलाल गोस्वामी को हिन्दी के प्रथम कहानीकार मानते हैं। इसके उपरान्त 'ग्यारह वर्ष का समय', 'फिर दुलाईवाली', आदि का नाम आता है। लेकिन कुछ विद्वान इंशा अल्लाह खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1803) को पहली कहानी मानते हैं। 'रानी केतकी की कहानी' में विद्वान कहानी के मौलिक लक्षण का अभाव देखते हैं।

शैशवकालीन कहानी

इंशा अल्ला खाँ कृत 'रानी केतकी की कहानी', लल्लू लाल कृत 'प्रेमसागर', सदल मिश्र कृत 'नासिकेतोपाख्यान' आदि कहानियों को हिन्दी के शैशव काल की कहानियाँ मानते हैं। आरंभिक काल की कहानी विवरणात्मक, घटना प्रधान, कौतूहल प्रधान, स्थूल कथानक वाले और चमत्कार पूर्ण होते हैं। प्रारंभिक कहानियों में भाषा, शिल्प, संवेदना, उद्देश्य, शैली आदि सभी शिथिल और दुर्बल दिखायी पड़ती है।

पत्र पत्रिकाओं का योगदान

हिन्दी साहित्य के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए 'सरस्वती', 'हिन्दी प्रदीप', 'छत्तीसगढ़ मित्र' जैसी पत्रिकाओं का योगदान उल्लेखनीय है। सरस्वती सन् 1900 में उत्तर प्रदेश के प्रयाग से प्रकाशित पत्रिका है। जिसमें हिन्दी की पहली लक्षण युक्त मौलिक कहानी इन्दुमती (किशोरीलाल गोस्वामी) प्रकाशित हुई थी। 'हिन्दी प्रदीप' सन् 1887 में भारतेंदु हरिश्चंन्द्र के संपादकत्व में प्रयाग से प्रकाशित पत्रिका है। इसके सिवा छत्तीसगढ़ से मित्र नामक पत्रिका भी निकली थी ।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- अन्य साहित्य विधाओं की तुलना में कहानी अत्यधिक लोकप्रिय विधा है।
- हिन्दी कहानी के विकास में सरस्वती पत्रिका का योगदान।

Critical Overview / अवलोकन

किशोरीलाल गोस्वामी को हिन्दी के प्रथम कहानीकार मानते हैं। सन् 1900 में इन्दुमती के प्रकाशन के उपरांत सन् 1902 में लाला भगवानदीन की प्लेग की चुड़ैल, 1903 में रामचंद्र शुक्ल कृत ग्यारह वर्ष का समय, बंगमहिला की कहानी दुलाई वाली, तदनंतर माधवराय स प्रे की एक टोकरी पर मिट्टी, एक पथिक का स्वप्न आदि कहानियाँ प्रकाशित हुई।

यह सब हिन्दी साहित्य के आरंभकालीन कहानियाँ मानती हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी कहानी कला की विकास यात्रा
- कहानी कला के प्रमुख छह तत्व
- कहानी के विकास में सरस्वती पत्रिका का योगदान उल्लेखनीय है
- इंशा अल्ला खाँ कृत कहानी है रानी केतकी की कहानी
- लल्लू लाल कृत कृत कहानी है प्रेमसागर
- सदल मिश्र कृत कहानी है नासिकेतोपाख्यान
- शुक्ल के अनुसार किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा लिखित कहानी इन्दुमती हिन्दी की पहली कहानी है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा लिखित कहानी इन्दुमती की रचना कब हुई ?
2. सदल मिश्र कृत कहानी का नाम क्या है ?
3. लल्लू लाल कृत कहानी का नाम क्या है ?
4. इंशा अल्ला खाँ कृत कहानी का नाम क्या है ?
5. कहानी के विकास में सहायक पत्रिका का नाम क्या है ?
6. लाला भगवानदीन की कहानी का नाम क्या है ?
7. 'इंदुमती' की रचना कब हुई ?
8. रानी केतकी की कहानी की रचना कब हुई ?

Answers उत्तर

1. सन् 1900 में।
2. नासिकेतोपाख्यान ।
3. प्रेमसागर।
4. रानी केतकी की कहानी ।
5. सरस्वती।
6. प्लेग की चुड़ैल।
7. सन् 1900 में।
8. सन् 1803।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी कहानी के विकास में सरस्वती पत्रिका का योगदान पर अपनी विचार स्पष्ट कीजिए ?
2. कहानी की प्रमुख तत्वें क्या क्या है ?
3. आप के राय में हिन्दी की पहली मौलिक कहानी कौन-सी है और क्यों ?
4. कहानी के तत्व के बारे में अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. कहानी के विकास में पत्रकारिता का योगदान व्यक्त कीजिए।
6. प्रमुख कहानियाँ और कहानिकारों के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।

SGOU

इकाई : 4
कहानी साहित्य का क्रमिक विकास (1942 तक)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य की प्रमुख कहानियों से परिचित होता है।
- हिन्दी साहित्य के महान कहानीकार प्रेमचन्द की कहानी कला से परिचय प्राप्त करता है।
- प्रेमचन्द के समकालीन कहानिकारों से परिचय प्राप्त कर सकता है।
- हिन्दी की प्रतिनिधि यथार्थवादी कहानी के गुणों से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

भारत वर्ष में कहानी का उद्‌भव वैदिक काल से माना जाता है। भारतेन्दू युग, द्विवेदी युग, प्रेमचन्द युग, प्रेमचन्दोत्तर युग, नई कहानी आदि हिन्दी कहानी के विकास क्रम है। सन् 1900 के लगभग हिन्दी कहानी का जन्म हुआ। सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी कहानी का जन्म माना जाता है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंद और प्रसाद ने दो भिन्न प्रवृतियों को प्रतिष्ठित किया।
- प्रेमचंद जीवन की वास्तविक घटनाओं और समस्याओं को लेकर आदर्श की प्रतिष्ठा कर रहे थे, जब की प्रसाद मनुष्य की भीतरी भाव-द्वन्द्व को व्यक्त करने में लीन थे।

Discussion / चर्चा

हिन्दी कहानी साहित्य के विकास को हम विभिन्न श्रेणियों में विभाजित कर सकता है:- भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, प्रेमचन्द युग, प्रेमचन्दोत्तर युग, नयी कहानी आंदोलन आदि। भारत वर्ष में कहानी का उद्‌भव वैदिक काल से माना है। कहानी में जीवन के किसी एक अंग या संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। कहानी की मूल आत्मा 'एक संवेदना या एक प्रभाव' है। कहानी का प्रमुख उद्देश्य भी कम-से-कम शब्दों में उस प्रभाव को अभिव्यक्त करना मात्र है।

भारतेन्दु युग (1868-1902)

भारतेन्दु स्वयं कहानीकार रहा था। उनका लिखा हुआ- 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न' नामक कहानी हिन्दी की आरंभकालीन समय की विशिष्ट उपलब्धि है। उनके समकालीन कहानीकारों में किशोरीलाल गोस्वामी, बंग महिला, रामचंद्र शुक्ल, डॉ.भगवानदास, बद्रीनारायण चौधरी आदि के नाम भी उल्लेखनीय है। देशानुराग, राष्ट्रीय बोध, श्रृंगार वर्णन, हास्य तथा व्यंग्य वर्णन आदि विशेषताएँ इस समय की कहानियों में देखने को मिलती हैं।

द्विवेदी युग

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के महान पथ प्रदर्शक लेखक है। उन्होंने अपने नाम के साथ द्विवेदी युग नामक एक युग जोड़ दिया है। सन् 1903 को महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के संपादकत्व ले लिया। तब से हिन्दी कहानी की श्रीवृद्धि हुई।

हिन्दी कहानी के क्रमिक उत्थान द्विवेदी युग से मानना

उचित है। यह किशोरीलाल गोस्वामी की इन्दुमती से शुरू होती है। द्विवेदी युग की मौलिक कहानीकारों की श्रेणी में मास्टर भगवानदास (प्लेग की चुड़ैल-1902), रामचन्द्र शुक्ल (ग्यारह वर्ष का समय -1903), गिरिजादत्त बाजपेयी (पंडित और पंडितानी-1903), बंग-महिला (दुलाईवाली) आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। इस युग में महाकवि जयशंकर प्रसाद अपनी 'ग्राम' नामक कहानी द्वारा पहले पहल अपना परिचय दिया है। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (उसने कहा था) द्विवेदी युग के श्रेष्ठ कहानीकारों में एक है।

द्विवेदी युग के कहानीकारों ने सहज, सरल, सरस और प्रभावशाली खड़ीबोली भाषा में कहानियाँ लिखा है। इस युग के कहानीकार देश के चारों ओर फैली हुई अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास, अविवेक, अनीति, अत्याचार आदि पर ध्यान रखते थे। इस युग की कई रचनाएँ आदर्शवाद पर अधिष्ठित हैं। कहानीकारों ने यथार्थवाद को कम और काल्पनिकता को ज्यादा महत्व दिया है। नैतिकता के साथ आदर्शवाद की स्थापना भी कहानीकार का लक्ष्य हुआ था। सभी कहानियों में स्वदेश प्रेम एवं प्रकृति का सौंदर्य वर्णन भी देखने को मिलते हैं।

प्रेमचन्द युग

प्रेमचन्द युग (सन् 1916-1936) पूर्ण रूप में हिन्दी कहानी की सर्वतोन्मुखी प्रगति का युग है। प्रेमचन्द उर्दू मातृभाषि थे। हिन्दी कहानी की ओर की उनका आगमन महत्वपूर्ण घटना थी। कलम के सिपाही प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को अंग्रेज़ी, बंगला और संस्कृत की छत्रछाया से अपने ही पैर पर खड़ा कर दिया है। हिन्दी के शुष्क और नीरस कहानी जगत में प्रेमचन्द का पदार्पण एक अद्भुत-अपूर्व घटना थी। वस्तुतः वे उर्दू के लेखक थे। प्रेमचन्द युग में स्वयं प्रेमचन्द ही नहीं, अन्य कहानिकार भी कहानी के उत्कर्ष के लिए कर्मरत रहे थे।

जैनेंद्र कुमार

जैनेंद्र कुमार (फाँसी, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, एक रात, पाजेब, चिड़ियाँ आदि मुख्य कहानियाँ है)

सुदर्शन

सुदर्शन (1896-1967, हार की जीत, अलबम, गुरु मंत्र, आशीर्वाद, कवि की स्त्री आदि मुख्य कहानियाँ है)

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद (1881-1937, छाया, आँधी, आकाशदीप, इंद्रजाल आदि मुख्य कहानियाँ है)

विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक

विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक (1899-1945, रक्षाबंधन, पत्रकार, हवा, मणिमाला, कल्लोल, मनुष्य आदि मुख्य कहानियाँ है)

इस युग के कहानीकारों को संसार के किसानों-मज़दूरों के प्रति ममता, विदेशियों के प्रति कट्टर विरोध, जमींदार-साहूकारों के प्रति आक्रोश, सामाजिक कुरीतियों के प्रति निर्मम प्रतिकार, अहिंसा का प्रचार, स्वदेश प्रेम, मार्क्स की समाज-व्यवस्था और अर्थशास्त्र का समर्थन, स्त्री-पुरुष समभावना आदि इस युग की कहानियों का विषय रहा ।

प्रेमचन्द युग की कहानी सभी दृष्टिकोण में उच्च स्तरीय प्रतीत होती है। उनका भावपक्ष और कला पक्ष जबरदस्त है जो अन्यत्र नहीं मिलता है। कहानीकारों में अधिकतर एक-दूसरे के मार्गदर्शक भी बने हुए थे। सभी लेखकों की दृष्टि समाज पर पड़ती थी, जिसकी भली-भाँति परिवर्तन उनके महान आदर्श बने रहे थे। इसलिए इस युग की कहानी और कहानीकार युगांतरकारी बन गये है। यही कारण उनकी कहानी समाज का दर्पण बनकर रहता है।

नयी कहानी आंदोलन

नयी कहानी आंदोलन हिन्दी साहित्य के इतिहास में बड़ा महत्त्वपूर्ण रहा हैं। पश्चिम के 'हाई मोडर्निज्म'(आधुनिकतावाद) से यह आंदोलन प्रभावित था, मगर नयी कहानी के लेखक अपनी भारतीयता को भूलकर पश्चिम का अँधा अनुकरण नहीं कर रहे थे। उनके लिए पश्चिम एक संदर्भ मात्र था। नयी कहानी आंदोलन अपने पूर्व-सूरियों से नाता तोड़ता भी हैं और जोड़ता भी। प्रगतिवादी लेखकों का 1936 में जो आंदोलन हुआ, उसके बाद बहुत से प्रगतिवादी लेखक सामाजिक चेतना के साहित्य को ही सच्चा साहित्य मानने लगे थे। प्रगतिवादी लेखकों में अहमद अली, उपेन्द्रनाथ अश्क, प्रेमचंद, मुल्कराज आनंद इत्यादि लेखक शामिल थे।

इक तरफ था प्रगतिवादी लेखकों का वर्ग, दूसरी ओर था अज्ञेय और जैनेन्द्र जैसे रूमानी कथाकारों का वर्ग। नये श्रेणी के कहानीकार इन दोनों वर्गों से असहमत थे। उनके लिए सामाजिक चेतना का उतना ही मूल्य था जितना आंतरिक चेतना का। उसी तरह, स्त्री-पुरुष संबंधो के बारे में लिखी गई रूमानी कथाओं में उन्हें आंतरिक चेतना तो दिखती थी, मगर उनके लिए यह बहुत ही संकुचित दृष्टिवाला साहित्य था। दोनों

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

वर्गों में से उचित और ज़रूरी सामग्री लेकर नये कहानीकार अपनी खुद की ही साहित्यिक दुनिया बनाने में जुड़ गए।

नयी कहानी आंदोलन प्रेमचंद के साथ भी कुछ ऐसा लव-हैट का नाता रखता है। प्रेमचंद के लिए यथार्थ साधन था, और आदर्श साध्य। जबकि नयी कहानी के लेखकों के लिए यथार्थ ही साध्य था, और उस यथार्थ को सिद्ध करने के लिए जो भी कुछ सामग्री ज़रूरी थी, वह सब साधन।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- हिन्दी गद्य विधाओं में कहानी सबसे सशक्त विधा बनकर विकसित हुई है।
- प्रेमचन्द की कहानियों में ग्रामीण जीवन का सही रूप मिलता है।

Critical Overview / अवलोकन

- कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ती मानव सभ्यता की भांति प्राचीन है।
- मनुष्य ने अपनी भावाभिव्यक्ति केलिए चाहे कोई भी मध्यम अपनाया हो उस की पृष्ठभूमि पर कोई न कोई कहानी अवश्य है।
- हिन्दी कहानी आधुनिक युग की देन है।

Recap / पुनरावृत्ति

- प्रेमचन्द की कहानियों में ग्रामीण जीवन का सही रूप मिलता है
- प्रेमचन्द आदर्शवादी-यथार्थवादी लेखक है
- पेट भराने वाले किसानों का वास्तविक जीवन से परिचय प्राप्त करता है
- सन् 1903 को महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के संपादकत्व ले लिया
- सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी कहानी के विकास की कडी है
- कहानी का शाब्दिक अर्थ कहना है
- हिन्दी कहानी के विकास का अध्ययन करने केलिए कथा सम्राट प्रेमचंद को केंद्र बिंदु मान लें तो उसे चार भागों में विभक्त कर सकते हैं

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कौन है ?
2. प्रेमचंद की पहली कहानी किस पत्रिका में प्रकाशित हुई थी ?
3. प्रेमचंद का वास्तविक नाम क्या है ?
4. हिन्दी की पहली कहानी लेखिका कौन है ?
5. ऐतिहासिक कहानियों की परंपरा का शुभारंभ किसने किया ?
6. आधुनिक खोजों के अनुसार हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी के लेखक कौन है ?
7. प्रसाद जी की प्रथम कहानी कौन-सी है ?
8. 'चंद्रलोक की यात्रा' के लेखक कौन है ?

Answers उत्तर

1. कहानी
2. सरस्वती
3. धनपतराय
4. बंग महिला
5. वृन्दावनलाल वर्मा
6. माधव राव सप्रे
7. ग्राम
8. केशव प्रसाद सिंह

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी कहानी साहित्य की विकास पर टिप्पणी लिखिए ।
2. हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में प्रेमचंद का योगदान महत्वपूर्ण है, स्पष्ट कीजिए।
3. प्रेमचंद के कहानीकला का परिचय स्पष्ट कीजिए।
4. हिन्दी कहानी के क्रमिक विकास की जानकारी दीजिए।
5. प्रेमचंद युग के प्रमुख कहानिकारों पर टिप्पणी लिखिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई : 5

प्रमुख उपन्यासकार, कहानीकार और उनके योगदान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रमुख उपन्यास्कार से परिचय प्राप्त करता है।
- प्रमुख कहानीकार से परिचय प्राप्त करता है।
- प्रमुख उपन्यासों का परिचय प्राप्त करता है।
- प्रमुख कहानियों से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

उपन्यास हिन्दी गद्य की नवीन विधा है। उपन्यासों का लक्ष्य समाज की कुरीतियों को सामने लाकर उनका विरोध करना और आदर्श परिवार एवं समाज को उजागर करने का प्रयास भी है। कहानी और उपन्यास साम्राट के रूप में विख्यात साहित्यकार है प्रेमचन्द। प्रेमचंद के बाद हिन्दी उपन्यास और कहानी में कई मोड आए हैं। उपन्यासकार और कहानिकारों ने अपनी रचनाओं से समाज में परिवर्तन करने का प्रयास किया है। आधुनिक काल की सबसे प्रमुख विशेषता कहानी और उपन्यासों में आदर्श और यथार्थवाद का अभिव्यक्ती साहित्यकार ने किया है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- स्वातंत्र्योत्तर कहानी में एक नयी चेतना, नये विश्वास और नयी आशा-आकांक्षा अवश्य दृश्यमान है।
- राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर जैसे कहानीकार के नेतृत्व में हिन्दी में नयी कहानी आंदोलन की शुरुआत हुई है।
- वास्तव में हिन्दी उपन्यास का सही विकास प्रेमचन्द के पदार्पण से हुआ है।
- अनुभूति की प्रामाणिकता और अभिव्यक्ति की ईमानदारी इनका सिद्धांत रहा है।
- हिन्दी के नए कहानीकारों का मूल उद्देश्य पाठकों को समकालीन यथार्थ का परिचय कराना था ।

Discussion / चर्चा

हिन्दी की आरम्भिक कहानियाँ मात्र मनोरंजन को ध्यान में रखकर लिखी प्रतीत होती हैं। हिन्दी के आरंभ समय के कहानीकारों में लल्लू लाल(प्रेम सागर), सदल मिश्र (नासिकेतोपाख्यान), इंशा अल्ला खाँ(रानी केतकी की कहानी) आदि के नाम सर्वोपरि हैं।

सन् 1900 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत इन्दुमति नामक कहानी सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। इन्दुमति को हिन्दी के प्रथम प्रामाणिक, मौलिक कहानी मानी जाती है। इसके बाद बंग महिला कृत दुलाईवाली, रामचंद्र शुक्ल का 'ग्यारह वर्ष का समय' तथा माधवराव सप्रे कृत 'टोकरी भर मिट्टी' आदि कहानियों का स्थान आता हैं। सन् 1910 में प्रेमचन्द्र अपनी पहली हिन्दी कहानी, बड़े घर की बेटी लिखी। इसके प्रकाशन के साथ प्रेमचन्द्र कहानी क्षेत्र में सक्रिय हो गये। चंद्रधर शर्मा गुलेरी सन् 1915 में कृत उनसे कहा था हिन्दी के आरंभ काल की महत्वपूर्ण कहानियों में एक है। प्रेमचन्द्र ने 1936 में अपनी अंतिम कहानी कफन लिखी। उन्होंने अपने 56 वर्ष की कम

उम्र में 301 (जिनमें 3 अनुपलब्ध है) कहानियाँ रचकर इतिहास में अपना नाम जोड़ दिया है।

सुदर्शन, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, पद्मलाल पुन्नालाल बक्शी, सुभद्राकुमारी चौहान, भगवतीचरण वर्मा, जैनेंद्र कुमार, यशपाल, मोहन राकेश, भीष्म साहनी, कमलेश्वर, अमरकांत, ज्ञान प्रकाश, निर्मल वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, हरिशंकर परसाई, उदय प्रकाश, ज्ञानरंजन आदि ने हिन्दी कहानी के वर्तमान काल को संपन्न बनाया है।

समकालीन कहानीकार

ज्ञान प्रकाश, मोहनदास नैमिशराय, कँवल भारती, ओम प्रकाश वाल्मीकि, संजय खाती, संजय, जय प्रकाश कर्दम, अब्दुल बिस्मिल्लाह, विवेक, बादशाह हुसैन, रमेश उपाध्याय, मदन मोहन, दीप्ति खण्डेलवाल, प्रभा खेतान, मृणाल पाण्डेय, मृदुला गर्ग, दयानन्द बटौरी, चित्रा मुद्‌गल, निरुपमा सेवती, राजी सेठ, मंजुल भगत, सुधा अरोड़ा, पुन्नीसिंह आदि समकालीन कहानी के महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों में है।

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी(1883-1922) द्विवेदी युग के अनुगृहित कहानीकार है। उनकी उसने कहा था, सुखमय जीवन तथा बुद्धू का काँटा जैसी कहानी, साहित्य के क्षेत्र में हलचल मचा दिया है। यह उनकी कीर्ति-स्तंभ भी है। इसमें उसने कहा था शीर्षक कहानी आज भी चर्चित एवं जन मानस में पुरस्कृत है। घंटाघर, धर्मपरायण, सुकन्या, बुद्धू का काँटा, हीरे का हार आदि कहानियों के सिवा गुलेरी ने कई लघु कथाओं की रचना भी की है।

जैनेंद्र कुमार

हिन्दी के अमर कहानीकार जैनेंद्र कुमार का जन्म 2 जनवरी 1905 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ के कौड़ियागंज में हुआ था। उनकी मृत्यु 24 दिसम्बर 1988 को हुई। बनारस विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा के दौरान जैनेंद्र कुमार साहित्य जगत पर पदार्पण किये। विद्यार्थी जीवन में आप को असहयोग आंदोलन में भाग लेकर जेल जीवन भोगना पड़ा। आगे वे साहित्य-जगत में सजीव हो गया। जैनेंद्र कुमार को मानव मन के निपुण चितेरा कह सकते हैं। उन्हें भारत सन् 1966 में केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1971 में पद्मभूषण दे कर सम्मानित किया है। सन् 1973 में दिल्ली विश्वविद्यालय ने उनको डीलिट की उपाधि दे कर सम्मानित किया है।

जैनेंद्र कुमार अपनी कहानियों में पहले पहल दार्शनिक और बुद्धिजीवी के रूप में आये हैं, बाद में कहानीकार। जैनेंद्र, प्रेमचन्द युग और उसके बाद की नई कहानी की सेतु है। प्रेमचन्द अपने अल्पायु में जिस सामाजिक जीवन चित्रण अधूरा छोड़ चला गया, उसको जैनेंद्र कुमार ने पूरा किया है।

जैनेंद्र कुमार की कहानी व्यक्ति-मन के आंतरिक भाव चित्र है। वे व्यक्ति के मन को सूक्ष्म से सूक्ष्मता के साथ परखते हैं और अंत में निष्कर्ष पाठक-समक्ष पेश करते हैं।

जैनेंद्र कुमार ने लगभग 200 कहानियाँ लिखी है। उनका पहला कहानी संग्रह फाँसी का प्रकाशन सन् 1927 में हुआ था। पाजेब, फाँसी, दो चिड़ियाँ, ध्रुव यात्रा, एक रात, वातायन, नीलम देश की राजकुमारी आदि जैनेंद्र की प्रमुख कहानियाँ है।

यशपाल

यशपाल प्रेमचन्द के सामाजिक यथार्थ को मार्क्सवादी दृष्टिकोण में साकार किए गए कहानीकार है। यशपाल को सामाजिक यथार्थवादी कहानीकार कहते हैं। शोषण, भूख, अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न आदि सब उनकी कहानियों का प्रमुख विषय बना।

यशपाल का जन्म 3 दिसंबर 1903 को पंजाब के फिरोजपुर छावनी में हुआ था। लाहौर नेशनल कॉलेज में पढ़ते समय भगतसिंह, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद जैसे देशस्नेही क्रांतिकारियों के संपर्क में आकर वे नौजवान भारत सभा से जुड़े गये। स्वतंत्रता संग्राम के सिलसिले में उन्होंने कई साल जेल की यातनाएँ सहन करना पडा। लाहौर केंद्रीय जेल में विप्लव कन्या प्रकाशवती कपूर से हुई उनकी शादी इतिहास की अपूर्व घटनाओं में एक है।

पिंजड़े की उड़ान 1939 में प्रकाशित यशपाल का चर्चित कहानी संग्रह है। इसकी भूमिका में आदर्श व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है कि - हमारी कल्पना का आधार जीवन की ठोस वास्तविकताएँ होती है। धर्मयुद्ध, पिंजरे की उड़ान, सच बोलने की भूल, फूलो का कुर्ता, ज्ञानदान, भस्मावृत्त चिनगारी आदि यशपाल के प्रमुख कहानी-संग्रह है।

यशपाल असामान्य प्रतिभाशाली है। सन् 1940 से 1976 तक उनका 16 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी मृत्यु के पश्चात प्रकाशित संग्रह में 206 कहानियाँ संकलित हैं।

अज्ञेय

अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' है। उनका जन्म 7 मार्च 1911 को उत्तर प्रदेश के देवरिया

जिले के कसया (कुशीनगर) में हुआ था। अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। अज्ञेय को आधुनिक हिन्दी के पथ- प्रदर्शक कहते हैं। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार (1964-आँगन के पार द्वार), भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार(1978, कितनी नावों में कितनी बार) तथा 1983 में भारत-भारती पुरस्कार आदि मिले है।

महान कवि, प्रसिद्ध शैलीकार, कथा-साहित्य को एक महत्वपूर्ण मोड़ दिये गये कथाकार, श्रेष्ठ उपन्यासकार, ललित निबंधकार, समर्थ संपादक, सैनिक और सफल अध्यापक आदि विविध रूप में अज्ञेय का आदरणीय स्थान है। विपथगा (1937), (परंपरा 1944), अमर वल्लरी (1944), कड़ियाँ तथा अन्य कहानियाँ (1945), कोठरी की बात (1945), शरणार्थी (1948), जयदोल (1951), ये तेरे प्रतिरूप (1961), संपूर्ण कहानियाँ (1975) आदि उनका कहानी संग्रह है। अज्ञेय का निधन 4 अप्रैल 1987 को हुआ है। अज्ञेय आरंभ से अंत तक मनोवैज्ञानिक कहानीकार रहा है।

अज्ञेय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर कई साल कारावास में पड़े थे। उस समय के जीवन उन्होंने छाया (1931), कोठरी की बात (1934), दरोगा अमीनचंद (1938), नवंबर दस (1957) जैसी कहानियों में चित्रित है। उनकी द्रोही, चिड़िया घर, लेटर बाक्स, कोठरी की बात, हजामत का साबुन जैसी कहानियाँ आत्मकथात्मक कोटि पर आती हैं।

अज्ञेय भाषा के धनी है। उन्होंने उसका जादू-सा उपयोग किया है। वैसे भावपक्ष और कला पक्ष की दृष्टि में अज्ञेय की कहानियाँ श्रेष्ठतम है। निष्कर्ष रूप में कह सकते है आधुनिक हिन्दी के कहानीकारों में अज्ञेय का स्थान शीर्षस्थ है।

नयी कहानी के आन्दोलन को प्रवाहमान बनाने में भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कण्डेय, अमरकान्त, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, हरिशंकर परसाई, शैलेश मटियानी आदि कहानीकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। आगे कुछ कहानीकार तत्कालीन यथार्थ को विषय-वस्तु बना कर प्रगति-पथ पर आगे बढ़े हैं। जिनमें श्रीकांत वर्मा, रवीन्द्र कालिया, जगदीश चतुर्वेदी, राजकमल, प्रबोध कुमार, ममता कालिया, ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, गंगा प्रसाद विमल, प्रयाग शुक्ल, महेन्द्र भल्ला, मुद्राराक्षस जैसे कहानीकारों के नाम सर्वोपरी है। अमृतराय के नेतृत्व में कुछ कहानीकार सहज कहानी के आंदोलन में भाग ले लिया।

जनवादी लेखन

सन् 1982 में दिल्ली में संपन्न जनवादी लेखक संघ के अधिवेशन ने जनवादी लेखन का आरंभ किया। जनवादी कहानीकार के वैचारिक आधार मार्क्सवाद है। वे सामान्य जन और श्रमिकों के पक्षधर रहते हैं। स्वयं प्रकाश, रमेश उपाध्याय, उदय प्रकाश, रमेश बतरा, हेतु भारद्वाज, असगर वजाहत, राजेश जोशी, मदन मोहन, धीरेन्द्र अस्थाना, विजयकांत, नमिता सिंह आदि हिन्दी जनवादी कहानीकारों में प्रमुख है।

हिन्दी में उपन्यास

उपन्यास का आगमन

हिन्दी में उपन्यास का वास्तविक आरंभ अंग्रेज़ी साहित्य के संपर्क से हुआ है। संसार में पहले पहल उपन्यास का आविर्भाव और विकास यूरोप में हुआ था। माना जाता है कि अंग्रेज़ी से बंगला में और बंगला से हिन्दी में उपन्यास साहित्य का आगमन हुआ।

उपन्यास के विकास

प्रेमचन्द के आगमन के पहले हिन्दी में कई उपन्यास लिखे थे, जिनमें कुछ महत्व भी पाये हैं। तब सामाजिक, ऐतिहासिक, काल्पनिक, पौराणिक कथ्य आदि बात उपन्यास के विषय रहे थे। प्रेमचन्द-पूर्व उपन्यासकारों में गोपालराम गहमरी, देवकीनंदन खत्री एवं किशोरी लाल गोस्वामी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है। देवकीनंदन खत्री जासूसी-तिलिस्मी तथा ऐयारी के उपन्यासकार थे। उनके चंद्रकांता, चंद्रकांता संतती जैसे उपन्यास हिन्दी एवं अहिन्दी पाठकों ने सहर्ष स्वीकार किया है। गोपालराम गहमरी कृत गुप्तभेद तथा सरकती लाश, बालकृष्ण भट्ट का नूतन ब्रह्मचारी तथा सौ अजान एक सुजान, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत ठेठ हिन्दी का ठाठ तथा अधखिला फूल आदि हिन्दी के आरंभिक काल के उपन्यासों में कुछ है।

प्रेमचन्द और अन्य उपन्यासकार

उपन्यास साम्राट प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को उत्तर प्रदेश के काशी से चार मील दूर लमही नामक गाँव में हुआ है। उनका यथार्थ नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। प्रेमचन्द की मातृभाषा उर्दू थी। उर्दू का संस्कार लेकर वे हिन्दी पर आये। उनका मूल नाम धनपत राय, उर्दू में नवाब राय और हिन्दी में वे प्रेमचन्द नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचन्द के पकड़ को देखकर बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास साम्राट का विशेषण दिया है।

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार है। उन्होंने हिन्दी उपन्यास के रूप और भाव को पूर्ण रूप में बदल दिया है। उन्होंने हिन्दी में सन् 1906 में प्रेमा नामक उपन्यास प्रकाशित किया है। इसके बाद वे बारह उपन्यास लिखे हैं। सन् 1936 में कृत मंगलसूत्र(अपूर्ण) प्रेमचन्द का अंतिम उपन्यास है। उनके गोदान विश्व साहित्य के महान उपन्यासों में एक है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला(अलका,निरुपमा), जयशंकर प्रसाद (कंकाल, तितली, इरावती), विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक(माँ, भिखारिणी), वृंदावनलाल वर्मा(विराटा की पद्मिनी), भगवतीचरण वर्मा(चित्रलेखा) आदि प्रेमचन्द युग के प्रमुख उपन्यासकार है।

प्रेमचन्दोत्तर युग

प्रेमचन्दोत्तर युग में हिन्दी में सामाजिक विषयों के साथ आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि सभी विषयों को आधार बनाकर महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचनाएँ हुई ।

यशपाल(झूठा सच, देशद्रोही), जैनेन्द्र कुमार (सुनीता, परख), अज्ञेय (शेखरःएक जीवनी, नदी के द्वीप), मोहन राकेश (अंधेरे बंद कमरे, अंतराल), भगवती चरण वर्मा (टेढ़े-मेढ़े रास्ते, भूले बिसरे चित्र),अमृतलाल नागर (अमृत और विष), हजारी प्रसाद द्विवेदी(बाणभट्ट की आत्मकथा), फणीश्वरनाथ रेणु (मैला आंचल), शिवपूजन सहाय(देहाती दुनिया), रांगेय राघव(कब तक पुकारूं), शैलेश मटियानी(होल्दार), कमलेश्वर (कितना पाकिस्तान, काली आँधी), राजेंद्र यादव (सारा आकाश), भीष्म साहनी (तमस, भटकती राख), नागार्जुन (बाबा बटेसरनाथ), धर्मवीर भारती (सूरज का सातवाँ घोड़ा), रामदरश मिश्र (पानी के प्राचीर), मन्नू भंडारी (आपका बंटी), कृष्णा सोबती (जिंद-गीनामा), राजकमल चौधरी (मरी हुई मछली), श्रीलाल शुक्ल (राग दरबारी) आदि प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रमुख उपन्यासकार हैं। इनके सिवा कई उपन्यासकार है, जिन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा साहित्य जगत को संवारा हैं।

चर्चा के मुख्य विन्दु

- इन्दुमति को हिन्दी के प्रथम प्रामाणिक, मौलिक कहानी मानी जाती है।
- उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार है।
- आज के जीवन को समग्रता में प्रस्तुत करने का कहानी सबसे सशक्त और लोकप्रिय माध्यम बन गयी है।

Critical Overview / अवलोकन

- उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें कहीं पर भी अनावश्यक रूप से खाली स्थान छोड़कर पृष्ठों की बर्बादी नही की गई है।
- उपन्यास की विशेषता है कि पात्रों को जीवंत करने के लिए लेखक ने परिस्थितियों को स्वयं नजदीक से देखने की कोशिश की है।
- हिन्दी कहानियों का इतिहास भारत में सदियों पुराना है।
- प्राचीन काल से ही कहानियाँ भारत में बोली, सुनी और लिखी जा रही है।
- आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ 20 वीं सदी में हुआ।
- हिन्दी कहानी ने आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रगतिवाद, मनोविश्लेषणवाद, आँचलिकता, आदि के दौर से गुजरते हुए सुदीर्घ यात्रा में अनेक उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Recap / पुनरावृत्ति

- बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने प्रेमचन्द को उपन्यास साम्राट का विशेषण दिया है
- नयी कहानी के आन्दोलन को प्रवाहमान बनाने में भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कण्डेय, अमरकान्त, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, हरिशंकर परसाई, शैलेश मटियानी आदि कहानीकारों का महत्वपूर्ण योगदान है
- राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर जैसे कहानीकार के नेतृत्व में हिन्दी में नयी कहानी आंदोलन की शुरुआत हुआ है
- हिन्दी उपन्यास का सही विकास प्रेमचन्द के पदार्पण से हुआ है
- आधुनिक हिन्दी कहानी का आरंभ द्विवेदीकाल में 1957 के बाद हुआ
- आधुनिक हिन्दी कहानी का जन्म सरस्वती पत्रिका से हुआ
- प्रेमचंद हिन्दी कहानी के साम्राट है
- तिलस्मी और ऐयारी उपन्यासों में देवकीनंदन खत्री कृत चंद्रकांता ,चंद्रकांता संतति, नरेश मोहिनी, वीरेंद्र वीर और कुसुम कुमारी तथा हरेकृष्ण जोहर कृत कुसुमलता उल्लेखनीय है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. किस उपन्यास में अज्ञेय का व्यक्तिवादी जीवन दर्शन व्यक्त हुआ है ?
2. जैनेन्द्र का साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत उपन्यास कौन है ?
3. अमृतलाल नागर का जीवनिपरख उपन्यास कौन-सा है ?
4. प्रेमचंद का ऐतिहासिक उपन्यास कौन-सा है ?
5. हिन्दी कहानी का जन्म किस पत्रिका से माना जाता है ?
6. ठाकुर का कुआँ किस साहित्यकार की रचना है ?
7. 'इंदुमति' कहानी किसकी रचना है ?
8. 'ग्यारह वर्ष' का समय का रचनाकार कौन है ?

Answers उत्तर

1. नदी के द्वीप
2. मुक्तिबोध
3. खंजन नयन
4. रूढ़ि रानी
5. सरस्वती
6. प्रेमचंद
7. किशोरीलाल गोस्वामी
8. माधव प्रसाद मिश्र

Assignments प्रदत्त कार्य

1. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी प्रमुख कहानीकार की विशेषता पर लेख तैयार कीजिए ।
2. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी प्रमुख उपन्यासकार की विषेषता पर लेख तैयार कीजिए।
3. हिन्दी उपन्यास और कहानी साहित्य का योगदान हिन्दी के गद्य विधाओं को संप्पन्न किया। अपना राय व्यक्त कीजिए।
4. स्वातंत्र्योत्तर कहानियों और कहानिकारों का परिचय दीजिए।
5. अज्ञेय की प्रमुख रचनाओं के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।
6. प्रेमचंदोत्तर युग साहित्य के बारे में अपनी मत प्रकट कीजिए।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास - डॉ. अमित कुमार सिंह
2. अद्यतन हिन्दी उपन्यास - बिन्दु भट्ट, बाबूभाई एच शाह
3. आधुनिक उपन्यास : विविध आयाम - डॉ विवेकी राय
4. कहानी के नए सीमांत - डॉ रत्नलाल शर्मा
5. हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग - डॉ त्रिभुवन सिंह

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

BLOCK - 05

नाटक व एकांकी साहित्य

SOU

इकाई : 1
हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास की पृष्ठभूमि समझता है।
- हिन्दी साहित्य में नाटक विधा की पृष्ठभूमि को समझ सकता है।
- आरंभकालीन हिन्दी नाटकों से परिचय प्राप्त करता है।
- आरंभकालीन हिन्दी नाटककारों से परिचित होता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी में नाटक का विकास भारतेन्दु युग में हुई है। गद्य का कथात्मक रूप है 'नाटक'। नाटक का आस्वादन पुस्तक रूप में पढ़कर और रंगमंच में अभिनय देखकर करता है। 'नाटक' में अभिनय के साथ-साथ संगीत, नृत्य, संवाद आदि भी होते हैं। नाटक दृश्य काव्य के साथ श्रव्य काव्य भी है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- हिन्दी में नाटक के सही विकास उन्नीसवीं सदी में हुआ है।
- नाटक का शाब्दिक अर्थ 'नट' है और नट लोगों की क्रिया हैं।
- आरंभ काल में हिन्दी के नाटककार और उनके नाटक संस्कृत नाट्य कला से खूब प्रभावित था ।
- नाटक के क्षेत्र में भारतेन्दु का योगदान महत्वपूर्ण है।
- नाटक को प्रगति की ओर ले जाने का श्रेय जयशंकर प्रसाद को है।

Discussion / चर्चा

गद्य के अन्य विधाओं के समान हिन्दी में नाटक का आरंभ आधुनिक काल में हुआ है। हिन्दी के आरंभिक नाटक संस्कृत, प्राकृत और बंगला से संबंधित रहा था। तब नाटक मनुष्य के मनोरंजन का सशक्त माध्यम हुआ था। विद्वानों ने नाटक को जीवन की अनुकृति बतायी हैं। उन्होंने रंगमंच को नाटक की आत्मा स्वीकारा हैं। नाटक शब्द का अर्थ नट है, यह लोगों की क्रिया हैं। यह दृश्य काव्य का रूप है। रूपकों में नाटक ही सबसे मुख्य है। नाटक गद्य का कथात्मक रूप है। नाटक में अभिनय के साथ संगीत, नृत्य, संवाद आदि भी होते हैं।

आरंभ काल में हिन्दी नाटक संस्कृत नाटकों की परंपरा के विकसित रूप रही थी। भारतेन्दु से पूर्व ब्रजभाषा में प्राणचंद चौहान ने रामायण महानाटक शीर्षक नाटक लिखा है। इसके बाद बनारसीदास जैन ने समय सार नाटक, विश्वनाथ सिंह ने आनंद रघुनंदन आदि नाटक लिखे हैं। सन् 1610 से लेकर सन् 1850 तक करीब 14 नाटक लिखे हैं। इन्हें उच्चकोटि के नाटक कहना उचित नहीं है। सत्रहवीं तथा अठारहवीं शती में ब्राजभाषा में प्राणचंद चौहान ने रामायण महानाटक, विश्वनाथ सिंह ने आनंद रघुनंदन आदि नाटक लिखे हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मत में विश्वनाथ सिंह सन् 1830 के आसपास लिखा आनंद रघुनंदन हिन्दी के पहला मौलिक नाटक है। इसमें कथोपकथन, अंक विन्यास, रंग संकेत आदि नाटक के तत्वों

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

के अनुसार हुआ है।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र के अनुसार सन् 1873 में बाबू गोपाल चंद्र गिरिधर दास द्वारा रचित 'नहुष' हिन्दी का पहला नाटक है। दूसरा, राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा लिखा 'शकुंतला' है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र नाटकों में 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'चंद्रावली', 'विषस्य विषमौषधम', 'भारत दुर्दशा', 'नील देवी', 'अंधेर नगरी' आदि मौलिक नाटक प्रसिद्ध है। अंबिकादत्त व्यास, देवकीनंदन खत्री, श्री नंदन सहाय, राधा कृष्ण दास, बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन, दुर्गादत्त, गोपालराम गहमरी, प्रताप नारायण मिश्र, किशोरी लाल गोस्वामी, श्रीनिवास दास, बालकृष्ण भट्ट आदि भारतेन्दु युग के प्रमुख नाटककार है। द्विवेदी युग के प्रमुख नाटककारों में पंडित राधेश्याम कथावाचक, नारायण प्रसाद बेताब, हरि कृष्ण जौहर आदि के नाम उल्लेखनीय है।

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के युग प्रवर्तक नाटककार है। प्रसाद ने विशाखदत्त, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ, एक घूंट, कामना, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जैसे अनेक नाटक लिखकर साहित्य में चिर प्रतिष्ठा पायी है। प्रसाद युग के प्रमुख नाटककारों में वियोगी हरि(छदम योगिनी), मैथिलीशरण गुप्त(तिलोत्तमा), विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक (भीम) आदि के नाम उल्लेखनीय है। गोविंद बल्लभ पंत, हरिकृष्ण प्रेमी, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, वृंदावन लाल वर्मा आदि प्रसादोत्तर युग के ख्याति प्राप्त नाटककारों में कुछ है। जगदीशचंद्र माथुर का कोणार्क, मोहन राकेश का लहरों का राजहंस, आधे अधूरे आदि प्रसादोत्तर युग के प्रसिद्ध नाटकों में कुछ है। इसके सिवा कई नाटक और नाटककार है, जिन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा नाटक क्षेत्र की वृद्धि की है। लेकिन आधुनिक हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में हिन्दी नाटक का विकास मंद गति से हुआ है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- हिन्दी में नाटक के सही विकास भारतेन्दु युग में हुआ है।
- आरंभ काल में हिन्दी नाटक संस्कृत नाटकों की परंपरा का विकसित रूप रहा था।

Critical Overview / अवलोकन

- नाटक दृश्य काव्य के साथ श्रव्य काव्य भी है। अतः नाटक को देखकर और सुनकर भी आस्वादन कर सकता है।
- हिन्दी में नाटक का विकास भारतेन्दु युग में हुआ।
- नाटक को प्रगति की ओर ले जाने का श्रेय जयशंकर प्रसाद को दिया जाता है।

Recap / पुनरावृत्ति

- नाटक गद्य साहित्य की एक सशक्त विधा है
- यह दृश्य-श्रव्य काव्य के अंतर्गत आता हैं। लेकिन नाटक को दृश्य काव्य के रूप में बड़ी स्वीकृति मिली है
- हिन्दी में नाटक का विकास भारतेन्दु युग में हुई है
- इससे पहले सामाजिक, पौराणिक, राजनीतिक विषयों को लेकर कुछ रचनाएँ हुईं हैं, किंतु नाटक के रीति-नियम के अनुसार न होने से उसे नाटक की कोटि में स्थान नहीं दिया हैं। अठारहवीं शताब्दी में हृदयराम रचित 'हनुमन्नाटक', बनारसीदास कृत 'समयसार' आदि ऐसी रचना है
- कई साल तक नाटक को संस्कृत और फारसी नाटक से स्वतंत्र अस्तित्व न हुआ था
- उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में पारसी थिएटर कंपनियाँ हिन्दी जगत प्रभाव डाला था । कुछ अंग्रेजी नाटकों के हिन्दी अनुवाद करके रंगमंच पर प्रस्तुत किया था
- जब सिनेमा की इतनी फैलाव एवं स्वीकृति नहीं हुई थी, तब नाटक जन मानस के सबसे बड़ा मनपसंद कला हुई थी

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी में नाटक के विकास कब हुआ है ?
2. हिन्दी में नाटक किस परंपरा का विकसित रूप है ?
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार हिन्दी का पहला नाटक कौन-सा है ?
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिन्दी के पहला मौलिक नाटक कौन-सा है ?
5. विश्वनाथ सिंह द्वारा लिखा गया नाटक कौन-सा है।
6. 'नहुष' नाटक के रचनाकार कौन है ?
7. 'जनमेजय का नागयज्ञ' किसका नाटक है ?
8. 'कोणार्क' नाटक के रचनाकार कौन है ?

Answers उत्तर

1. हिन्दी में नाटक के सही विकास भारतेंदु युग में हुआ है।
2. हिन्दी नाटक संस्कृत नाटकों की परंपरा का विकसित रूप है।
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार सन् 1873 में बाबू गोपाल चंद्र गिरिधर दास द्वारा रचित 'नहुष' हिन्दी का पहला नाटक है।
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मत में विश्वनाथ सिंह सन् 1830 के आसपास लिखा 'आनंद रघुनंदन' हिन्दी के पहला मौलिक नाटक है।
5. 'आनंद रघुनंदन'
6. बाबू गोपाल चंद्र गिरिधर दास
7. जयशंकर प्रसाद
8. जगदीश चंद्र माथुर

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी नाटक का उद्‌भव और विकास पर पर्चा लिखिए।
2. हिन्दी में नाटक का विकास भारतेन्दु युग में हुई है, स्पष्ट कीजिए ।
3. आरंभ में हिन्दी नाटकों की स्थिति और गति ।
4. आरंभकालीन हिन्दी नाटककार और उनकी योगदान।
5. नाटक के विकास में योगदान देनेवाले नाटककारों पर टिप्पणी लिखिए।

इकाई : 2

भारतेंदु युग, प्रसाद युग और प्रसादोत्तर युग के नाटक साहित्य (1942 तक)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- नाटक के क्षेत्र में भारतेन्दु का स्थान और उनके योगदान समझता है।
- नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद का स्थान और उनके योगदान समझता है।
- प्रसाद के समकालीन नाटककार और उनके योगदान समझता है।
- प्रसादोत्तर युग के नाटक और नाटककार के योगदान समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

प्रथम आधुनिक नाटक खड़ीबोली हिन्दी में लिखने का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चंद्र को मिलता है। हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ नाटककार के रूप में जयशंकर प्रसाद का आगमन। फारसी नाटक कंपनियों का प्रभाव। भारतीय समाज में अंग्रेजी साहित्य का प्रचार ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- भारतेन्दु युग से हिन्दी नाटक का आरंभ ।
- भारतेन्दु द्वारा जन सामान्य में आत्मविश्वास पैदा करके राष्ट्र प्रेम जगाने का परिश्रम।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के महान मार्गदर्शी आचार्य रहा है।
- हिन्दी के युग प्रवर्तक महान नाटककार के ऊँचे पद पर जयशंकर प्रसाद का विराजमान होना।
- हिन्दी नाटक का सर्वतोमुखी विकास केलिए प्रसाद का महत्वपूर्ण योगदान।
- प्रसादोत्तर युग में सिनेमा का आगमन।

Discussion / चर्चा

5.2.1.भारतेन्दु युग

भारतेन्दु युग हिन्दी नाटक का पहला चरण है। खड़ी बोली हिन्दी में प्रथम आधुनिक नाटक लिखने का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चंद्र को है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक उथल-पुथल एवं परिवर्तन का युग था।

भारतेन्दु युग में सामाजिक क्षेत्र में पाश्चात्य संस्कृति के समर्थन करनेवाले लोगों के समान विरोध करनेवाले लोग भी थे। तब भारतीय समाज में अंग्रेजी साहित्य का प्रचार था। ऐसे संकीर्ण सामाजिक वातावरण में भारतेन्दु अपने नाटकों को लेकर उपस्थित हुए। उनके नाटकों का मुख्य लक्ष्य लोगों का मनोरंजन था। इसके साथ उन्होंने जन सामान्य में आत्मविश्वास पैदा करके राष्ट्र प्रेम जगाने का परिश्रम किया है। भारतेन्दु युग में उनके मार्गदर्शन में कई नाटककार नाटक लिखे हैं। जिनमें देवकीनंदन खत्री कृत 'सीताहरण', भारतेन्दु कृत 'भारत दुर्दशा', 'अंधेर नगरी', प्रताप नारायण मिश्र कृत 'शिक्षा दान' आदि का महत्वपूर्ण स्थान होती है।

भारतेन्दु युग के अधिकांश नाटक प्रहसन जाने जाते थे। प्रहसन का मूल भाव हास्य-व्यंग्य है। वे तत्कालीन सामाजिक बुराइयों, अंधविश्वास, धार्मिक अनाचार, स्त्रियों पर अत्याचार आदि पर व्यंग्य करते थे। भारतेन्दु कृत 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', राधाचरण गोस्वामी का लिखा हुआ 'बूढ़े मुंह मुहासे' आदि इसका अच्छा नमूना है। भारतेन्दु कृत 'नीलदेवी' पाश्चात्य त्रासदी(ट्रेजडी) की शैली में लिखा दुखांत नाटक हैं। भारतेन्दु युग में अंग्रेज़ी, संस्कृत एवं बंगला से कई नाटकों का अनुवाद हिन्दी में हुआ। राजा लक्ष्मण सिंह ने महाकवि कालिदास का 'अभिज्ञान शाकुंतलम' का अनुवाद हिन्दी में किया। अंग्रेजी से शेक्सपियर के मर्चेंट ऑफ वेनिस, मैकबेथ जैसे नाटकों का अनुवाद भी हुआ। श्रीनिवास दास, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाकृष्णदास, राधाचरण गोस्वामी आदि भारतेन्दु युग के प्रमुख नाटककार है। भारतेन्दु स्वयं नाटक लिखकर युग का नेतृत्व दिया था।

अंबिकादत्त व्यास, देवकीनंदन त्रिपाठी, श्री नंदन सहाय, राधा कृष्ण दास, बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन, दुर्गादत्त, गोपालराम गहमरी, प्रताप नारायण मिश्र, किशोरी लाल गोस्वामी, श्रीनिवास दास, बालकृष्ण भट्ट आदि भारतेन्दु युग के प्रमुख नाटककार है, जिनके नाटक प्रसाद के नाटकों के समान लोगों को प्रभावित नहीं किया है।

5.2.2. द्विवेदी युग

महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के महान मार्गदर्शी आचार्य है। सन् 1900 से 1918 तक उनका प्रभाव काल रहा है। यह काल-सीमा द्विवेदी युग के नाम में जाना जाता है। भारतेन्दु द्वारा संस्थापित नाटक रंगमंच द्विवेदी युग में दुर्बल हो गया। द्विवेदी युग में सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और काल्पनिक प्रहसनों की रचना हुई। द्विवेदी युग के प्रमुख नाटककारों में पंडित राधेश्याम कथावाचक, नारायण प्रसाद बेताब, हरि कृष्ण जौहर आदि के नाम उल्लेखनीय है।

5.2.3. प्रसाद युग

हिन्दी के युग प्रवर्तक महान नाटककार के रूप में जयशंकर प्रसाद जाने जाते हैं। उन्होंने अनेक मौलिक नाटक लिखकर साहित्य में चिर प्रतिष्ठा पाया है। वास्तव में प्रसाद के आगमन से नाटक का सही विकास हुआ। प्रसाद के समय देश में स्वतं-त्रता संग्राम जोरों पर चलते थे। हिन्दी नाटक का सर्वतोमुखी विकास के लिए प्रसाद का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने कल्याणी, करुणालय, चंद्रगुप्त, राजश्री, ध्रुवस्वामिनी, विशाख, स्कंदगुप्त, अजातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ जैसे उच्च श्रेणी के नाटकों की रचना की। नारायण प्रसाद (बेताब, महाभारत, रामायण, कृष्ण सुदामा), आगा हश्र (सूरदास, श्रवणकुमार, सीता, वनवास), सुदर्शन (सिकंदर, धूपछांह) आदि प्रसाद युग के अन्य प्रमुख नाटककार है। इस युग में रौनक बनारसी ने इंसाफे महमूद, हुसैन मियां जरीफ ने लैला मजनू, अलीबाबा आदि रोमांचकारी नाटकों की रचना की है।

प्रसाद युग के पौराणिक नाटककारों में सुदर्शन का नाम विशेष उल्लेखनीय है। बेचैन शर्मा उग्र(चार बेचारे, उजबक), जी.पी.श्रीवास्तव(उलटफेर,विज्ञापन,विवाह),राधेश्याम कथावाचक(काउंसिल की मेम्बरी) आदि इस समय के नाटककार है। प्रेमचन्द द्वारा लिखा गया संग्राम यथार्थवादी नाटक की कोटि में आता है। वियोगी हरि (छदम योगिनी), मैथिलीशरण गुप्त (तिलोत्तमा), विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक (भीम) आदि नाटककार ने नाटक लिखे थे। इस युग में मैथिलीशरण गुप्त ने भास के स्वप्नवासवदत्ता नाटक का अनुवाद हिन्दी में किया है। तब विश्व कवि रवींद्रनाथ ठाकुर और गिरीश घोष के बंगाली नाटकों का अनुवाद भी हिन्दी में हुआ है।

5.2.4. प्रसादोत्तर युग

प्रसादोत्तर युग में भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पहले के जैसी दुखमय रहा था। इस समय की महत्वपूर्ण घटना सिनेमा का आगमन था। सिनेमा धीरे-धीरे नाटक का स्थान अपहरण कर दिये। दिनों दिन सिनेमा का प्रभाव ज्यादा से ज्यादा होता गया। इस समय के राष्ट्रीय चेतनापरक नाटककारों में हरिकृष्ण प्रेमी (रक्षाबंधन, आहुति), सेठ गोविंद दास (कर्तव्य), गोविंद बल्लभ पंत (राजमुकुट), उदयशंकर भट्ट आदि के नाम उल्लेखनीय है। इस समय राष्ट्रीय चेतनापरक आदर्श के समानान्तर यथार्थपरक नाटक की रचना भी हुआ है। ऐसे लेखकों में उपेंद्रनाथ अश्क (अंजोदीदी), पांडेय बेचन शर्मा उग्र (आवारा), लक्ष्मीनारायण मिश्र (सन्यासी, मुक्ति का रहस्य) आदि के नाम महत्वपूर्ण है। जगदीश चंद्र माथुर (कोणार्क), मोहन राकेश (लहरों का राजहंस, आषाढ़ का एक दिन, आधे अधूरे) आदि को प्रसादोत्तर युग के चर्चित नाटककार हैं।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- भारतेन्दु के नाटकों द्वारा जन सामान्य में आत्मविश्वास पैदा करके राष्ट्र प्रेम जगाने का परिश्रम देख सकता है।
- प्रसादोत्तर युग की महत्वपूर्ण घटना सिनेमा का आगमन है।

Critical Overview / अवलोकन

- आरंभकाल से नाटक एवं नाटककार हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का पोषक बना हुआ था।
- प्रसादोत्तर युग में सिनेमा का आगमन।
- नाटक की क्षति का मुख्य कारण सिनेमा का प्रभाव है।

Recap / पुनरावृत्ति

- भारतेन्दु युग हिन्दी नाटक का प्रथम चरण है
- भारतेन्दु युग में उनके मार्गदर्शन में कई नाटककार नाटक लिखे हैं
- भारतेन्दु युग के अधिकांश नाटक प्रहसन जाने जाते थे
- द्विवेदी युग में सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और काल्पनिक प्रहसनों का आविर्भाव
- हिन्दी नाटक की श्री वृद्धि के लिए महाकवि जयशंकर प्रसाद ने अपने महत्वपूर्ण योगदान किया है
- प्रसाद को केंद्र में रखकर हिन्दी नाट्य साहित्य को विभिन्न युगों में बांट सकते हैं
- सिनेमा का आगमन प्रसादोत्तर युग के महत्वपूर्ण घटना रही है
- प्रसादोत्तर युग में राष्ट्रीय चेतनापरक रचनाओं का भारंभार
- प्रसादोत्तर युग में यथार्थपरक नाटक की रचना भी हुआ है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'रामायण' महानाटक के रचयिता कौन है?
2. 'आनंद रघुनंदन' नाटक के रचनाकार कौन है?
3. अंधेर नगरी के रचनाकार कौन है?
4. भारतेन्दु हरिशचन्द्र के नाटकों का मुख्य लक्ष्य क्या था ?
5. भारतेन्दु कृत 'नीलदेवी' कौन-सी शैली में लिखा नाटक हैं।
6. जयशंकर प्रसाद के किन्हीं दो ऐतिहासिक नाटकों का नाम बताइए ।
7. संग्राम नामक यथार्थवादी नाटक के रचनाकार कौन है?
8. रक्षाबंधन किसका नाटक है?
9. भारतेन्दु कृत 'नीलदेवी' नाटक की विशेषता क्या है?
10. धर्मवीर भारती के अंधा युग किस कोटि के नाटक है?
11. मोहन राकेश के किन्हीं दो नाटकों का नाम बताइए ।

Answers उत्तर

1. नारायण प्रसाद
2. नरेश विश्वनाथ सिंह
3. भारतेन्दु हरिशचन्द्र
4. भारतेन्दु हरिशचन्द्र के नाटकों का मुख्य लक्ष्य लोगों का मनोरंजन था ।
5. भारतेन्दु कृत 'नीलदेवी' पाश्चात्य त्रासदी (ट्रेजडी) की शैली में लिखा दुखांत नाटक हैं।
6. चन्द्रगुप्त और स्कन्द गुप्त
7. मुंशी प्रेमचंद
8. हरिकृष्ण 'प्रेमी'
9. भारतेन्दु कृत 'नीलदेवी' पाश्चात्य त्रासदी (ट्रेजडी) की शैली में लिखा दुखांत नाटक हैं।
10. गीतिनाट्य
11. लहरों का राजहंस, आषाढ़ का एक दिन, आधे अधूरे।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी में नाटक का आरंभ और विकास पर निबंध तैयार कीजिए ।
2. समझाइए कि जयशंकर प्रसाद हिन्दी के महान नाटककार है।
3. भारतेन्दु युग के नाटकों का मुख्य लक्ष्य पर आलेख तैयार कीजिए।
4. प्रसादोत्तर युग में सिनेमा का आगमन और नाटकों की स्थिति विषय पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
5. भारतेन्दु युग के अधिकांश नाटक प्रहसन जाने जाते थे, स्पष्ट कीजिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई : 3
एकांकी साहित्य का उद्भव और विकास (1942 तक)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- एकांकी विधा से परिचय प्राप्त करता है।
- हिन्दी साहित्य के एकांकी विधा से परिचय प्राप्त करता है।
- एकांकी साहित्य का उद्भव और विकास का परिचय प्राप्त होता है।
- प्रमुख एकांकी साहित्यकारों से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

नाटक की अपेक्षा एकांकी आकार में छोटा है। हिन्दी के एकांकी साहित्य का उद्भव और विकास। प्रमुख एकांकी लेखक और उनके रचनाओं की परिस्थितियाँ। प्रमुख एकांकी और उसका विषय और समाधान। एकांकियों के प्रकार और विशेषताँ।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- एकांकी अंग्रेज़ी के One act play का हिन्दी अनुवाद है।
- एकांकी आकार में छोटा है।
- विषय के अनुसार एकांकी विस्तृत है।
- कथानकों को लेकर एकांकी लिखे जाते हैं।
- हिन्दी एकांकी को नाटक से अलग अपना स्वतंत्र अस्तित्व है।
- समाज की तत्कालीन अवस्था का चित्रण एकांकियों में मिलता है।

Discussion / चर्चा

एकांकी शब्द का अर्थ है एक अंक वाला (लघु नाटक)। एकांकी को अंग्रेज़ी में One act play कहते हैं। शब्दार्थ के अनुसार एक अंग वाला नाटक है एकांकी। नाटक की अपेक्षा एकांकी आकार में छोटा है। विषय के अनुसार एकांकी को सामाजिक एकांकी, पौराणिक एकांकी, ऐतिहासिक एकांकी, राजनीति से संबंधित एकांकी, चरित्र प्रधान एकांकी, अर्थपूर्ण एकांकी के रूप में विभाजित कर सकते हैं।

- प्रथम चरण - भारतेन्दु - द्विवेदी युग - (1875 से 1928 ई.)- इस युग में भारतेन्दु प्रमुख एकांकीकार के रूप में स्वीकार किए गए। सर्वाधिक एकांकी भारतेन्दु ने प्रस्तुत किए है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र सन् 1875 में कृत 'प्रेमयोगिनी' हिन्दी का पहला एकांकी है। किंतु कुछ विद्वान जयशंकर प्रसाद सन् 1929 में रचित एक घूँट को पहला मौलिक एकांकी मानते हैं। इस युग के एकांकीकारों ने प्रचलित परंपराओं, कुप्रथाओं और सामाजिक समस्याओं को आधार बनाकर एकांकी लिखे इस युग के प्रमुख एकांकीकार हैं- काशीनाथ खत्री, बालकृष्ण भट्ट, राधाकृष्ण दास, राधाचरण गोस्वामी, अंबिका दत्त व्यास, प्रताप नारायण मिश्र, किशोरी लाल गोस्वामी, देवकी नंदन खत्री, अयोध्या

सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' आदि।

- द्वितीय चरण - प्रसाद युग - (1929 से 1937 ई.)- इस युग के एकांकी प्रसाद के 'एक घूंट' से प्रारंभ होते हैं। इस युग में पाश्चात्य शैली का अनुकरण किया गया। समाज की तत्कालीन अवस्था का चित्रण इस युग के एकांकियों में मिलता है। प्रसाद जी द्वारा रचित एकांकी 'सज्जन', 'कल्याणी', 'परिणय', 'प्रायश्चित' आदि हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा के प्रथम एकांकी का प्रकाशन 1930 में हुआ। बदरीनारायण भट्ट, सुदर्शन, राधेश्याम मिश्र, एवं जी.पी. श्रीवास्तव आदि इस युग के प्रमुख एकांकीकार हैं।
- तृतीय चरण - प्रसादोत्तर युग- (1938 से 1947 ई.) - इस समय एकांकी अपने यथार्थ रूप में सामने आई। युद्ध की विभीषिका तथा बंगाल के अकाल ने एकांकीकारों को झकझोर दिया था। एकांकी में संकलन त्रय को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा था। इस युग के प्रमुख एकांकीकार इस प्रकार हैं- सेठ गोविंद-दास, उदयशंकर भट्ट, जगदीश चंद्र माधुर, हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मी नारायण मिश्र, भगवती चरण वर्मा, विष्णु प्रभाकर, डॉ. रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश, वृंदावन लाल वर्मा आदि।
- चतुर्थ चरण - स्वातंत्र्योत्तर युग - (1948 से अब तक)- इस युग के एकांकीकारों का दृष्टिकोण प्रगतिवादी था। पूंजीवाद के विरोध के स्वर मुखर होने लगे थे। इस काल में एकांकियों को राजकीय प्रोत्साहन मिला। संगीत नाटक एकेडेमी सन् 1958 में दिल्ली में स्थापित हुई। 'तरंग', 'रंगयोग', 'बिहार थियेटर', 'रंग भारती' आदि 'नाट्य कला' से संबंधित कई पत्रिकाओं के प्रकाशन द्वारा एकांकी को बल मिला। मोहन राकेश का नाम इस काल के एकांकीकारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस प्रकार हिन्दी एकांकी आज अपने यौवन पर है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- एकांकी हिन्दी साहित्य में अत्यन्त प्रचलित और लोकप्रिय विधा है।

Critical Overview / अवलोकन

- प्रथम चरण के एकांकीकारों ने प्रचलित परंपराओं, कुप्रथाओं और सामाजिक समस्याओं को आधार बनाकर एकांकी लिखते थे।
- द्वितीय चरण के एकांकियों में समाज की तत्कालीन अवस्था का चित्रण मिलते हैं।
- तृतीय चरण के एकांकी अपने यथार्थ रूप में सामने आई।
- चतुर्थ चरण के एकांकियों में पूंजीवाद के विरोध के स्वर मुखर होने लगे थे।
- हिन्दी एकांकी को नाटक से स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार करने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा।

Recap / पुनरावृत्ति

- एकांकी, नाटक से अलग एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा है
- एकांकी में एक अंक होता है
- एकांकी में मुख्यतः एक पात्र के चरित्र का विकास होता है
- नाटक की अपेक्षा एकांकी का विकास तीव्र गति में हुआ है
- नाटक की अपेक्षा एकांकी में कम मुहूर्त और कथापात्र होते हैं
- अभिनय की दृष्टि से एकांकी पांच-पंद्रह मिनट से आधा घंटे के भीतर का होना अच्छा है

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. एकांकी का शाब्दिक अर्थ क्या है ?
2. एकांकी में कितना अंक होता है ?
3. एकांकी को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं ?
4. अभिनय की दृष्टि से एकांकी कितने घंटे के भीतर होना अच्छा है ?
5. हिन्दी का पहला एकांकी कौन-सा है ?
6. नाटक और एकांकी में क्या अंतर है ?
7. 'एक घूँट' एकांकी के रचनाकार कौन है?
8. 'प्रेमयोगिनी' की रचना समय ?

Answers उत्तर

1. एकांकी शब्द का अर्थ है एक अंक वाला ।
2. एकांकी में एक अंक होता है।
3. एकांकी को अंग्रेज़ी में 'One act play' कहते हैं।
4. अभिनय की दृष्टि से एकांकी पांच-पंद्रह मिनट से आधा घंटे के भीतर का होना अच्छा है।
5. भारतेन्दु हरिश्चंद्र के ' प्रेमयोगिनी' हिन्दी का पहला एकांकी है।
6. नाटक की अपेक्षा एकांकी आकार में छोटा है।
7. जयशंकर प्रसाद
8. सन् 1875

Assignments प्रदत्त कार्य

1. एकांकी साहित्य के क्रमिक विकास पर निबंध तैयार कीजिए ।
2. हिन्दी एकांकी को नाटक से अलग अपना स्वतंत्र अस्तित्व है, स्पष्ट कीजिए।
3. एकांकी और नाटक में अंतर क्या है, स्पष्ट कीजिए।
4. नाटक की अपेक्षा एकांकी समझना सरल है, अपना मत व्यक्त कीजिए।

इकाई : 4

हिन्दी रंगमंच का उद्‌भव और विकास 1942 तक

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी रंगमंच से परिचय प्राप्त करता है।
- हिन्दी रंगमंच का उद्‌भव और विकास से अवगत होता है।
- हिन्दी रंगमंच कर्मियों से परिचय प्राप्त करता है।
- हिन्दी के प्रमुख रंगमंचीय रचनाओं से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी रंगमंच रासलीला से आरम्भ होती हैं। हिन्दी रंगमंच पर संस्कृत नाटकों का प्रभाव। भारतेंदु युग में नाट्य लेखन के साथ मंचन भी होने लगा। हिन्दी रंगमंच के विकास में पारसी रंगमंच की ऐतिहासिक भूमिका।

Keywords / मुख्य बिन्दु

रंगमंच, भारतीय रंगमंच, नाट्यशास्त्र, नाटक, पारसी थियटर, हिन्दी सिनेमा, मॉडर्न थिएटर, बनारस थिएटर

Discussion / चर्चा

हिन्दी रंगमंच से अभि प्राय हिन्दी और उसकी बोलियों के रंगमंच से है। हिन्दी रंगमंच की जड़ें रासलीला से आरम्भ होती हैं। हिन्दी रंगमंच पर संस्कृत नाटकों का भी प्रभाव है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिन्दी रंगमंच के पुरोधा हैं। हिन्दी रंगमंच संस्कृत नाटक, लोक रंगमंच एवं पारसी रंगमंच की पृष्ठभूमि का आधार लेकर विकसित हुआ है। ध्यातव्य है कि भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में **'नाट्य'** शब्द का प्रयोग केवल नाटक के रूप में न करके व्यापक अर्थ में किया है जिसके अंतर्गत रंगमंच, अभिनय, नृत्य, संगीत, रस, वेशभूषा, रंगशिल्प, दर्शक आदि सभी पक्ष आ जाते हैं। भारत में संस्कृत रंगमंच के पृष्ठभूमि में चले जाने के बाद भी लोक रंगमंचों की परम्परा रही है। नौटंकी, रासलीला, रामलीला, स्वांग, नकल, खयाल, यात्रा, यक्षगान, नाचा, तमाशा आदि लोकप्रिय लोक-नाट्य रूप रहे हैं। इसी प्रकार पारसी रंगमंच की भी हिन्दी रंगमंच के विकास में ऐतिहासिक भूमिका है।

हिन्दी रंगमंच का प्रारम्भ 1853 ई में नेपाल के माटगांव में अभिनीत **'विद्याविलाप'** नाटक से माना जाता है। किन्तु यह नेपाल तक ही सीमित रह गया। वस्तुतः हिन्दी रंगमंच का नवोत्थान 1871 ईसवी में स्थापित 'अल्फ्रेड नाटक मंडली' से हुआ जिसने भारतेन्दु और राधाकृष्ण दास के नाटकों का मंचन प्रस्तुत किया। राधेश्याम कथावाचक इस मंडली के प्रमुख नाटककार थे। इस मंडली के मंच पर स्त्री चरित्रों की भूमिका पुरुष पात्र ही किया करते थे। इसी बीच कोलकाता के **'मॉर्डन थिएटर'** ने मुंबई की **'पारसी रंगमंच'** की **'इम्पीरियर'** आदि अनेक नाटक कंपनियों को खरीदकर कोलकाता को रंगमंच का केंद्र बना दिया। इन संस्थाओं के एकीकरण के कारण नारायण बेताब, आगा हश्र, तुलसीदत्त शैदा, हरिकृष्ण जौहर आदि अनेक नाटककारों का संगम-स्थल कलकत्ता के 'मॉडर्न थिएटर' हो गया। मुंबई और कोलकाता के इन रंगमंच के एकीकरण में हिन्दी रंगमंच के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया।

हिन्दी में अव्यवसायिक रंगमंच का सूत्रपात 1868 ईस्वी में बनारस थिएटर के साथ हुआ। 1884 में बनारस में 'नेशनल थियेटर' की स्थापना हुई। भारतेन्दु के अंधेर नगरी का प्रथम मंचन नेशनल थियेटर में ही किया था। हिन्दी रंगमंच के विकास में 'भारतेन्दु नाटक मंडली' (1906) की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस मंडली ने लगभग डेढ़ दर्जन नाटकों का मंचन किया जिसमें 'सत्य हरिश्चंद्र', 'सुभद्रा हरण', 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' प्रमुख है। इस नाटक मंडली ने भारतेन्दुयुगीन नाटकों के साथ-साथ प्रसाद के नाटकों को भी सफलतापूर्वक मंचित कर हिन्दी के अपने स्वतंत्र रंगमंच के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। जयशंकर प्रसाद के नाटकों को मंचित कर इस संस्था ने सिद्ध किया कि प्रसाद के नाटक पूर्णतः अभिनेय है। आगे चलकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की 'विक्रम परिषद' की स्थापना 1939 ईस्वी में हुई थी। इसने नाटकों में स्त्री पात्र के लिए स्त्रियों द्वारा ही अभिनय की परम्परा डाली। हिन्दी रंगमंच के विकास में 'बलिया नाट ्य समाज' (1884) की भूमिका दी ऐतिहासिक मानी जाती है। 1884 ईसवी में यही पर भारतेंदु ने नाटक पर एक लंबा व्याख्यान दिया था। उसी समय 'सत्य हरिश्चंद्र' तथा 'नीलदेवी' नाटकों का मंचन किया गया था। उसी समय भारतेंदु ने हरिश्चंद्र की भूमिका निभाई थी। इस नाटक के मंचन को उस क्षेत्र में अपार लोकप्रियता प्राप्त हुई थी।

हिन्दी रंगमंच के विकास में काशी के पश्चात प्रयाग के रंगमंचों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ के महत्वपूर्ण नाट्य मंच 'आर्य नाट्य सभा', 'श्री राम लीला नाटक मंडली' तथा 'हिन्दी नाट्य समिति' थे। कानपुर की संस्थाओं ने भी हिन्दी रंगमंच को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ के प्रमुख नाट्य मंच है - 'भारत नाट्य समिति' और 'भारतीय कला मंदिर'। वर्तमान समय में कानपुर की 'कानपुर अकादमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट्स' तथा 'एंबेसडर 'संस्थाएँ समकालीन नाटकों के मंचन में महत्वपूर्ण' भूमिका निभा रही है। बिहार में 'पटना नाटक मंडली' (1876) तथा 'अमेच्योर ड्रामेटिक एसोसिएशन' उल्लेखनीय नाट्य मंच रहे हैं।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- हिन्दी में अव्यवसायिक रंगमंच का सूत्रपात होना।
- हिन्दी रंगमंच का प्रारम्भ काल।

Critical Overview / अवलोकन

- भारतेंदु युग में हिन्दी नाट्य लेखन के साथ-साथ मंचन का भी आरंभ।
- हिन्दी रंगमंच के विकास में पारसी रंगमंच की ऐतिहासिक भूमिका रही है।
- हिन्दी रंगमंच के विकास में काशी के पश्चात प्रयाग के रंगमंचों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
- भारतेंदु ने हरिश्चंद्र की नाटक के मंचन नाटक के क्षेत्र में अपार लोकप्रियता प्राप्त की थी।

Recap / पुनरावृत्ति

- हिन्दी रंगमंच संस्कृत , लोक एवं पारसी रंगमंच की पृष्ठभूमि का आधार लेकर विकसित हुआ है
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में 'नाट्य' शब्द का प्रयोग केवल नाटक के रूप में न करके व्यापक अर्थ में किया है जिसके अंतर्गत रंगमंच, अभिनय, नृत्य, संगीत, रस, वेशभूषा, रंगशिल्प, दर्शक आदि सभी पक्ष आते हैं
- भारत में संस्कृत रंगमंच के पृष्ठभूमि में चले जाने के बाद भी लोक रंगमंचों की परंपरा अत्यंत सुदृढ़ रही
- नौटंकी, रासलीला, रामलीला, स्वांग, नकल, खयाल, यात्रा, यक्षगान, नाचा, तमाशा आदि लोकप्रिय लोक-नाट्य रूप रहे हैं
- पारसी रंगमंच की भी हिन्दी रंगमंच के विकास में ऐतिहासिक भूमिका है
- हिन्दी रंगमंच का नवोत्थान 1871 ईसवी में स्थापित 'अल्फ्रेड नामक मंडली' से हुआ
- कोलकाता के 'मॉर्डन थिएटर' ने मुंबई की 'पारसी रंगमंच' की 'इम्पीरियर' आदि अनेक नाटक कंपनियों को खरीदकर कोलकाता को रंगमंच का केंद्र बना दिया

- नारायण बेताब, आगा हश्र, तुलसीदत्त शैदा, हरिकृष्ण जौहर आदि अनेक नाटककारों का संगम स्थल कोलकाता का 'मॉडर्न थिएटर' हो गया
- मुंबई और कोलकाता के इन रंगमंच के एकीकरण से हिन्दी रंगमंच में अभूतपूर्वक विकास हुआ
- भारतेंदु के अंधेर नगरी का प्रथम मंचन नेशनल थियेटर में ही किया था
- हिन्दी रंगमंच के विकास में 'भारतेंदु नाटक मंडली' (1906) की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है
- कानपुर की संस्थाओं ने भी हिन्दी रंगमंच को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्दी रंगमंच का नवोत्थान किस मंडली से माने जाते हैं?
2. हिन्दी रंगमंच के पुरोधा कौन हैं?
3. हिन्दी रंगमंच का प्रारम्भ किस नाटक से माना जाता है?
4. हिन्दी में अव्यवसायिक रंगमंच का सूत्रपात कैसे हुआ?
5. हिन्दी रंगमंच के विकास में कौन सी नाटक मंडली की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है?
6. लोकप्रिय लोक-नाट्य रूपों का नाम लिखिए।
7. भारतेन्दु के 'अंधेर नगरी' का प्रथम मंचन कहाँ हुआ था?
8. हिन्दी रंगमंच के विकास में ऐतिहासिक भूमिका निभानेवाली रंगमंच ?

Answers उत्तर

1. हिन्दी रंगमंच का नवोत्थान 1871 ईसवी में स्थापित 'अल्फ्रेड नाटक मंडली' से हुआ है।
2. भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिन्दी रंगमंच के पुरोधा हैं।
3. हिन्दी रंगमंच का प्रारम्भ नेपाल के माटगांव में अभिनीत 'विद्याविलाप' नाटक से माना जाता है।
4. हिन्दी में अव्यवसायिक रंगमंच का सूत्रपात बनारस थिएटर के साथ हुआ।
5. हिन्दी रंगमंच के विकास में 'भारतेन्दु नाटक मंडली' (1906) की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है।
6. नौटंकी, रासलीला, रामलीला, स्वांग, नकल, खयाल, यात्रा, यक्षगान, नाचा, तमाशा आदि।
7. भारतेन्दु के अंधेर नगरी का प्रथम मंचन नेशनल थियेटर में हुआ था।
8. पारसी रंगमंच भी हिन्दी रंगमंच के विकास में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी साहित्य में रंगमंच के विकास पर पर्चा लिखिए।
2. हिन्दी रंगमंच की जड़ें रासलीला से आरम्भ होती हैं, व्यक्त कीजिए।
3. भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिन्दी रंगमंच के पुरोधा हैं, स्प्ष्ट कीजिये ।
4. नाटक के विकास के लिए कार्यरत संस्थाओं पर आलेख लिखिए।
5. रंगमंच के विकास में रासलीला के योगदान पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी नाटक-उद्भव और विकास - दशरथ ओझा ।
2. आधुनिक नाट्य विमर्श - जयदेव तनेजा ।
3. प्रसाद का कथा साहित्य - गिरीश रस्तोगी ।
4. आज की कला - प्रकाश गुप्त ।
5. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच - नेमीचन्द्र जैन ।

SGOU

BLOCK - 06

हिन्दी निबंध तथा अन्य गद्य विधाएँ

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

इकाई : 1

निबंध साहित्य का उद्भव और विकास (1942 के तक)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी गद्य साहित्य में निबंध साहित्य का उद्भव और विकास का परिचय प्राप्त करता है।
- निबंध साहित्य के विविध विधाओं से परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख निबंधकार के स्थान तथा रचनाओं का परिचय प्राप्त करता है।
- निबंध और साहित्य की अन्य विधाओं के अंतर समझता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

हिन्दी में निबंध का उद्भव एक महत्वपूर्ण घटना रही है। हिन्दी निबंध का जनक के रूप में भारतेन्दु का आगमन। युग सृष्टा भारतेंदु ने ललित तथा विनोद पूर्ण भाषा में श्रेष्ठ निबंधों की रचना की है। हिन्दी के प्रमुख निबंधकार और उनकी रचनाएँ निबंध साहित्य को सशक्त बनाया। हिन्दी निबंध साहित्य विविध चरणों से विकसित होकर अपना स्थान निर्धारित किया है। हिन्दी में निबंध साहित्य काल और समय के अनुसार विकसित होकर वर्तमान स्थिति पर आ पहुँचा है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- निबंध को अंग्रेज़ी में Essay कहते हैं।
- निबंध शब्द का अर्थ है सुगठित या अच्छा-सा बंधा हुआ ।
- हिन्दी में निबंध का उद्भव ।
- हिन्दी निबंध साहित्य की विविध चरण।
- भारतेन्दु युग में निबंध।
- द्विवेदी युग में निबंध।
- शुक्लोत्तर युग में निबंध।

Discussion / चर्चा

6.1.1 हिन्दी में निबंध

निबंध को अंग्रेज़ी में Essay कहता है। निबंध शब्द का अर्थ है सुगठित या अच्छा-सा बंधा हुआ। भारतेन्दु को हिन्दी निबंध का जनक माना जाता है। निबंध मुख्यतः वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, विवरणात्मक आदि चार रूपों में विभाजित हैं।

वर्णनात्मक निबंध - निबंध में किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, दृश्य आदि का विवेचना करके रसपूर्ण एवं प्रभाव पूर्ण शैली में लिखने वाले निबंध को वर्णनात्मक निबंध कहते हैं।

विचारात्मक निबंध - किसी विषय का तर्क युक्त विवेचन, अन्वेषण तथा विश्लेषण करके लिखने वाले निबंध को विचारात्मक निबंध कहते हैं।

भावात्मक निबंध - लेखक के मन में पैदा होने वाले भावों और चिंताओं को व्यक्त करने वाले निबंध को भावात्मक निबंध कहते हैं।

विवरणात्मक निबंध - सामाजिक और ऐतिहासिक स्थानों, घटनाओं, दृश्यों आदि के रस पूर्ण विवरण के साथ लिखने वाले निबंध को विवरणात्मक निबंध कहते हैं।

हिन्दी में निबंध का आरंभ भारतेन्दु युग में, पत्र पत्रिकाओं के द्वारा हुआ है। युग सृष्टा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ललित तथा विनोद पूर्ण भाषा में क्षेत्रीय मुहावरों-लोकोक्तियों मिलाकर श्रेष्ठ निबंधों की रचना की है। विचार बीथि और चिंतामणि आचार्य रामचंद्र शुक्ल के महान निबंध संग्रह है। उन्होंने भय, क्रोध, इर्ष्या, उत्साह, श्रद्धा, भक्ति, लोभ, प्रीति आदि मनोविकारों पर आधारित कई उत्तम निबंधों की रचना की है।

भारतेन्दु युग के अन्य निबंधकारों में प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त आदि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जयशंकर प्रसाद विचारात्मक निबंधकार के रूप में उच्च स्थान पर आसीन हैं। महादेवी वर्मा साहित्यिक एवं नारी संबंधी कई निबंधों की रचना की है।

द्विवेदी युग के निबंधकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू श्याम सुन्दर दास, गुलाबराय, चन्द्र धर शर्मा गुलेरी, अध्यापक पूर्ण सिंह, पद्मलाल पुन्नालाल बक्शी, शिवपूजन सहाय, पद्मसिंह शर्मा, रघुवीर सिंह आदि के नाम आदर के साथ लिया जाता हैं। माखनलाल चतुर्वेदी, रायकृष्णदास, रामधारी सिंह दिनकर आदि भावात्मक शैली के निबंधकारो में मुख्य है।

हिन्दी के ललित निबंधकारों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। विचार और वितर्क, कल्पना, अशोक के फूल, कुटज, साहित्य के साथी, कल्पलता, विचार- प्रवाह, आलोक पर्व आदि उनके महत्वपूर्ण निबंध संग्रह है। डॉ. विद्या निवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, श्यामसुन्दर दुबे, रमेशचन्द्र शाह, अमृतराय, निर्मल वर्मा, श्रीराम परिहार आदि निबंधकारों ने भी ललित निबंध शाखा को उत्तेजित किया है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, ज्ञान चतुर्वेदी, रविन्द्र नाथ त्यागी आदि हास्य-व्यंग्य निबंधकारों में प्रमुख है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- हिन्दी में निबंध साहित्य की विकास-यात्रा।

Critical Overview / अवलोकन

- हिन्दी में निबंध का आरंभ भारतेन्दु युग में, पत्र पत्रिकाओं के द्वारा हुआ है।
- हिन्दी निबंध के जनक के रूप मे भारतेन्दु को श्रेय मिलना।
- लेखक के मन में पैदा होने वाले भावों और चिंताओं को व्यक्त करनेवाली प्रक्रिया निबंध है।

Recap / पुनरावृत्ति

- सीमित आकार में किसी एक विषय का वर्णन विशेष संगति या संबंध के साथ करने वाले साहित्य को निबंध कहते हैं
- भारतेन्दु को हिन्दी निबंध का जनक माना जाता है
- हिन्दी में निबंध का आरंभ भारतेंदु युग में, पत्र पत्रिकाओं के द्वारा हुआ है
- युग सृष्टा भारतेंदु ने ललित तथा विनोद पूर्ण भाषा में क्षेत्रीय मुहावरों-लोकोक्तियों मिलाकर श्रेष्ठ निबंधों की रचना की है
- 'विचार बीथि' और 'चिंतामणि' आचार्य रामचंद्र शुक्ल के महान निबंध संग्रह है
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भय, क्रोध, इ्र्ष्या, उत्साह, श्रद्धा, भक्ति, लोभ, प्रीति आदि मनोविकारों पर आधारित कई उत्तम निबंधों की रचना की है
- हिन्दी में निबंध साहित्य काल और समय के अनुसार विकसित होकर वर्तमान स्थिति पर आ पहुँचा है

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'निबंध' किसे कहते है ?
2. निबंध को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं?
3. निबंध शब्द का अर्थ क्या हैं?
4. हिन्दी निबंध का जनक कौन है?
5. चिंतामणि के लेखक कौन है?
6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों की विशेषता क्या - क्या है ?
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के प्रमुख निबंधों का नाम लिखिए ।
8. हिन्दी में निबंध साहित्य वर्तमान स्थिति में किस प्रकार आ पहुँचा है ?

Answers उत्तर

1. सीमित आकार में किसी एक विषय का वर्णन विशेष संगति या संबंध के साथ करने वाले साहित्य को निबंध कहते हैं।
2. निबंध को अंग्रेज़ी में Essay कहते हैं।
3. निबंध शब्द का अर्थ है सुगठित या अच्छा-सा बंधा।
4. भारतेन्दु को हिन्दी निबंध का जनक माना जाता है।
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ।
6. भय, क्रोध, इर्ष्या, उत्साह, श्रद्धा, भक्ति, लोभ, प्रीति आदि मनोविकारों पर आधारित आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कई उत्तम निबंधों की रचना की है।
7. 'विचार बीथि' और 'चिंतामणि'
8. हिन्दी में निबंध साहित्य काल और समय के अनुसार विकसित होकर वर्तमान स्थिति पर आ पहुँचा है।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी निबंध का जनक भारतेन्दु पर पर्चा लिखिए।
2. हिन्दी ललित निबंध पर प्रकाश डालिए ।
3. भारतेन्दु हिन्दी निबंध का जनक है, व्यक्त कीजिए।
4. हिन्दी में निबंध साहित्य विकास पर टिप्पणी लिखिए।
5. निबंध साहित्य के प्रकार पर आलेख तैयार कीजिए।

इकाई : 2
हिन्दी के प्रमुख निबंधकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी गद्य साहित्य के प्रमुख निबंधकार से परिचय प्राप्त करता है ।
- हिन्दी साहित्य में निबंधकार के मुख्य योगदान समझता है।
- हिन्दी साहित्य में निबंध विधा की आवश्यकता को समझता है।
- हिन्दी के प्रमुख निबंधकारों की रचना शैली से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

निबंधकार की प्रधान विशेषता व्यक्तित्व का प्रकाशन है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में भारतेन्दु प्रसिद्ध हो जाता है। देश की गरीबी, पराधीनता, शासकों के अमानवीय शोषण का चित्रण निबंध साहित्य का लक्ष्य। साहित्यिक और विचारात्मक निबंध लिखना इस समय की बड़ी विशेषता है। हिन्दी के ललित निबंधकारों में हजारी प्रसाद द्विवेदी का सर्वश्रेष्ठ स्थान है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की निबंध शैली।
- चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' के निबंध लेखन।
- हज़ारी प्रसाद द्विवेदी और उनके निबंध साहित्य।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की योगदान।
- महादेवी वर्मा की निबंध लेखन की विशेषता।

Discussion / चर्चा

6.2.1 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (9 सितंबर 1850 -6 जनवरी 1885)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह कहा जाता है। इनका मूल नाम 'हरिश्चन्द्र' था, 'भारतेन्दु' उनकी उपाधि थी। उनका कार्यकाल युग की सन्धि पर खड़ा है। उन्होंने रीतिकाल की विकृत सामन्ती संस्कृति की पोषक वृत्तियों को छोड़कर स्वस्थ परम्परा की भूमि अपनाई और नवीनता के बीज बोये। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में प्रसिद्ध भारतेन्दु जी ने देश की गरीबी, पराधीनता, शासकों के अमानवीय शोषण का चित्रण को ही अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की दिशा में उन्होंने अपनी प्रतिभा का उपयोग किया।

भारतेन्दु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिन्दी पत्रकारिता, नाटक, निबंध और काव्य के क्षेत्र में उनका बहुमूल्य योगदान रहा। उन्होंने 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका', 'कविवचनसुधा' और 'बाला बोधिनी' पत्रिकाओं का संपादन भी किया। वे एक उत्कृष्ट कवि, सशक्त व्यंग्यकार, सफल नाटककार, जागरूक पत्रकार तथा ओजस्वी गद्यकार थे। इसके अलावा वे एक कुशाल लेखक, कवि, सम्पादक, निबन्धकार, एवं कुशल वक्ता भी थे। भारतेन्दु जी ने मात्र चौंतीस वर्ष की अल्पायु में ही विशाल

साहित्य की रचना की। उन्होंने मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से इतना लिखा और इतनी दिशाओं में काम किया कि उनका समूचा रचनाकर्म पथदर्शक बन गया।

निबंध संग्रह

- नाटक
- कालचक्र (जर्नल)
- लेवी प्राण लेवी
- भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?
- कश्मीर कुसुम
- जातीय संगीत
- संगीत सार
- हिन्दी भाषा
- स्वर्ग में विचार सभा

6.2.2 प्रतापनारायण मिश्र (24 सितंबर, 1856 - 6 जुलाई, 1894)

प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख लेखक, कवि और पत्रकार थे। वह भारतेंदु निर्मित एवं प्रेरित हिन्दी लेखकों की सेना के महारथी, उनके आदर्शो के अनुगामी और आधुनिक हिन्दी भाषा तथा साहित्य के निर्माणक्रम में उनके सहयोगी थे। भारतेंदु पर उनकी अनन्य श्रद्धा थी, वह अपने आप को उनका शिष्य कहते थे तथा देवता की भाँति उनका स्मरण करते थे। भारतेंदु जैसी रचनाशैली, विषयवस्तु और भाषागत विशेषताओं के कारण मिश्र जी 'प्रति-भारतेंद' और 'द्वितीय हरिश्चंद्र' कहे जाने लगे थे। मिश्र जी उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के अंतर्गत बैजे गाँव बेथर के निवासी संकठा प्रसाद मिश्र के पुत्र थे।

उन्होंने प्रतिभा और स्वाध्याय के बल से अपनी योग्यता पर्याप्त बढ़ा ली थी।अच्छी जानते ही थे, फारसी, अँगरेजी और संस्कृत में भी उनकी अच्छी गति थी। मिश्र जी छात्रावस्था से ही 'कविवचनसुधा' के गद्य-पद्य-मय लेखों का नियमित पाठ करते थे, जिससे हिन्दी के प्रति उनका अनुराग उत्पन्न हुआ। लावनी गायकों की टोली में आशु रचना करने तथा ललितजी की रामलीला में अभिनय करते हुए उनसे काव्यरचना की शिक्षा ग्रहण करने से वह स्वयं मौलिक रचना का अभ्यास करने लगे। इसी बीच वह भारतेंदु के संपर्क में आए। उनका आशीर्वाद तथा प्रोत्साहन पाकर वह हिन्दी गद्य तथा पद्य रचना करने लगे। 1882 के आसपास 'प्रेमपुष्पावली' प्रकाशित हुई और भारतेन्दु जी ने उसकी प्रशंसा की तो उनका उत्साह बहुत बढ़ गया।

15 मार्च 1883 को, होली के दिन, अपने कई मित्रों के सहयोग से मिश्रजी ने 'ब्राह्मण' नामक मासिक पत्र निकाला। यह अपने रूप-रंग में ही नहीं, विषय और भाषाशैली की दृष्टि से भी भारतेंदु युग का विलक्षण पत्र था। सजीवता, सादगी, बाँकपन और फक्कड़पन के कारण भारतेंदुकालीन साहित्यकारों में जो स्थान मिश्रजी का था, वही तत्कालीन हिन्दी पत्रकारिता में इस पत्र का था, किंतु यह कभी नियत समय पर नहीं निकलता था। दो-तीन बार तो इसके बंद होने तक की नौबत आ गई थी। इसका कारण मिश्रजी का व्याधिमंदिर शरीर और अर्थाभाव था। रामदीन सिंह आदि की सहायता से यह येनकेन प्रकारेण सम्पादक के जीवनकाल तक निकलता रहा। उनकी मृत्यु के बाद भी रामदीन सिंह के संपादकत्व में कई वर्षों तक निकला, परन्तु पहले जैसा आकर्षण उसमें न रहा।

1889 में मिश्र जी 25 रू. मासिक पर 'हिंदोस्थान' के सहायक संपादक होकर कालाकाँकर आए। उन दिनों पं.मदनमोहन मालवीय उसके संपादक थे। यहाँ बालमुकुंद गुप्त ने मिश्रजी से हिन्दी सीखी। मालवीय जी के हटने पर मिश्रजी अपनी स्वच्छन्द प्रवृत्ति के कारण वहाँ न टिक सके। कालाकाँकर से लौटने के बाद वह प्रायः रूग्ण रहने लगे।

मिश्रजी जितने परिहासप्रिय और जिंदादिल व्यक्ति थे उतने ही अनियमित, अनियंत्रित, लापरवाह और काहिल थे। रोग के कारण उनका शरीर युवावस्था में ही जर्जर हो गया था। तो भी स्वास्थ्यरक्षा के नियमों का वह सदा उल्लंघन करते रहे। इससे उनका स्वास्थ्य दिनों-दिन गिरता गया। 1892 के अंत में वह गंभीर रूप से बीमार पड़े और लगातार डेढ़ वर्षो तक बीमार ही रहे। अंत में 38 वर्ष की आयु में 6 जुलाई 1894 को दस बजे रात में भारतेंदु मंडल के इस नक्षत्र का अवसान हो गया।

निबंध संग्रहः-

- निबंध नवनीत
- प्रताप पीयूष
- प्रताप समीक्षा

6.2.3 बालकृष्ण भट्ट (23 जून 1844 - 20 जुलाई 1914)

बालकृष्ण भट्ट हिन्दी के सफल पत्रकार, उपन्यासकार, नाटककार और निबंधकार थे। उन्हें आज की गद्य प्रधान कविता का जनक माना जा सकता है। हिन्दी गद्य साहित्य के निर्माताओं में उनका प्रमुख स्थान है। पंडित बालकृष्ण भट्ट के पिता का नाम पं.वेणी प्रसाद था। स्कूल में दसवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद भट्ट जी ने घर पर ही संस्कृत का अध्ययन किया। संस्कृत के अतिरिक्त उन्हें हिन्दी, अंग्रेज़ी,

उर्दू, फारसी भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान हो गया। भट्ट जी स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति थे। उन्होंने व्यापार का कार्य किया तथा वे कुछ समय तक कायस्थ पाठशाला प्रयाग में संस्कृत के अध्यापक भी रहे किन्तु उनका मन किसी में नहीं रमा। भारतेंदु जी से प्रभावित होकर उन्होंने हिन्दी-साहित्य सेवा का व्रत ले लिया। भट्ट जी ने हिन्दी प्रदीप नामक मासिक पत्र निकाला। इस पत्र के वे स्वयं संपादक थे। उन्होंने इस पत्र के द्वारा नि-रंतर 32 वर्ष तक हिन्दी की सेवा की। काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित हिन्दी शब्दसागर के संपादन में भी उन्होंने बाबू श्याम सुंदर दास तथा शुक्ल जी के साथ कार्य किया।

उनका जन्म प्रयाग के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। भट्ट जी की माता अपने पति की अपेक्षा अधिक पढ़ी-लिखी और विदुषी थीं। उनका प्रभाव बालकृष्ण भट्ट जी पर अधिक पड़ा। भट्ट जी मिशन स्कूल में पढ़ते थे। वहाँ के प्रधानाचार्य एक ईसाई पादरी थे। उनसे वाद-विवाद हो जाने के कारण इन्होंने मिशन स्कूल जाना बंद कर दिया। इस प्रकार वह घर पर रह कर ही संस्कृत का अध्ययन करने लगे। वे अपने सिद्धान्तों एवं जीवन-मूल्यों के इतने दृढ़ प्रतिपादक थे कि कालान्तर में इन्हें अपनी धार्मिक मान्यताओं के कारण मिशन स्कूल तथा कायस्थ पाठशाला के संस्कृत अध्यापक के पद से त्याग-पत्र देना पड़ा था। जीविकोपार्जन के लिए उन्होंने कुछ समय तक व्यापार भी किया परन्तु उसमें इनकी अधिक रुचि न होने के कारण सफलता नहीं मिल सकी। आपकी अभिरुचि आरंभ से ही साहित्य सेवा में थी। अतः सेवा-वृत्ति को तिलांजलि देकर वे यावज्जीवन हिन्दी साहित्य की सेवा ही करते रहे।

निबन्ध संग्रह :

- साहित्य सुमन
- भट्ट निबंधमाला
- आत्मनिर्भरता (1893)

6.2.4 बालमुकुन्द गुप्त (14 नवंबर 1865 - 18 सितंबर 1907)

बालमुकुन्द गुप्त हिन्दी के निबंधकार और पत्रकार थे। उनका जन्म गुड़ियानी गाँव, जिला रिवाड़ी, हरियाणा में हुआ। उर्दू और फारसी की प्रारंभिक शिक्षा के बाद 1886 ई में पंजाब विश्वविद्यालय से मिडिल परीक्षा प्राइवेट परीक्षार्थी के रूप में उत्तीर्ण की। विद्यार्थी जीवन से ही उर्दू पत्रों में लेख लिखने लगे। उर्दू के नामी लेखकों में आपकी गणना होने लगी।

1889 ई में महामना मालवीय जी के अनुरोध पर कालाकाँकर (अवध) के हिन्दी दैनिक 'हिंदोस्थान' के सहकारी संपादक हुए जहाँ तीन वर्ष रहे। यहाँ पं. प्रतापनारायण मिश्र के संपर्क से हिन्दी के पुराने साहित्य का अध्ययन किया और उन्हें अपना काव्यगुरू स्वीकार किया। सरकार के विरूद्ध लिखने पर वहाँ से हटा दिए गए। अपने घर गुड़ियानी में रहकर मुरादाबाद के 'भारत प्रताप' उर्दू मासिक का संपादन किया और कुछ हिन्दी तथा बाँग्ला पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद किया। अंग्रेजी का इसी बीच अध्ययन करते रहे। 1893 ई में 'हिन्दी बंगवासी' के सहायक संपादक होकर कलकत्ता गए और छह वर्ष तक काम करके नीति संबंधी मतभेद के कारण इस्तीफा दे दिया। 1899 ई में 'भारतमित्र' कलकत्ता के वे संपादक हुए।

18 सितम्बर 1907 को दिल्ली में लाला लक्ष्मीनारायण की धर्मशाला में गुप्तजी का देहान्त हुआ। उस समय वह बयालीस वर्ष के भी न हुए थे। यह उनकी अकाल-मृत्यु थी। 'भारतमित्र' में आपके प्रौढ़ संपादकीय जीवन का निखार हुआ। भाषा, साहित्य और राजनीति के सजग प्रहरी रहे। देशभक्ति की भावना इनमें सर्वोपरि थी।

पत्रकार होने के साथ ही वे एक सफल अनुवादक और कवि भी थे। अनूदित ग्रंथों में बाँग्ला उपन्यास मडेल भगिनी और हर्षकृत नाटिका रत्नावली उल्लेखनीय हैं। स्फुट कविता के रूप में आपकी कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ था। इनके अतिरिक्त आपके निबंधों और लेखों के संग्रह हैं।

6.2.5 सरदार पूर्णसिंह (सरदार पूर्णसिंह; 1881 - 1931 ई.)

सरदार पूर्ण सिंह भारत के देशभक्त, शिक्षाविद, अध्यापक, वैज्ञानिक एवं लेखक थे। वे पंजाबी कवि थे और आधुनिक पंजाबी काव्य के संस्थापकों में उनकी गणना होती है। द्विवेदी युग के श्रेष्ठ निबंधकार सरदार पूर्ण सिंह का जन्म सीमा प्रांत जो अब पाकिस्तान में है के एबटाबाद इटावा जिले सलहद गांव में 17 फरवरी सन् 1881 ईसवी में हुआ था। लाहौर के एक कॉलेज में इन्होंने एम. ए की परीक्षा उत्तीर्ण की इसके बाद विशेष छात्रवृत्ति प्राप्त कर सन् 1900 ईसवी में रसायन शास्त्र के विशेष अध्ययन के लिए जापान गए और वहाँ इंपीरियल यूनिवर्सिटी में अध्ययन करने लगे जब जापान में होने वाले विश्व धर्म सभा में भाग लेने के लिए स्वामी रामतीर्थ वहाँ पहुँचे तो उन्होंने वहाँ अध्ययन करें भारतीय विद्यार्थी से भी भेंट की इसी क्रम में सरदार पूर्ण सिंह से स्वामी रामतीर्थ की भेंट हुई स्वामी रामतीर्थ से प्रभावित होकर इन्होंने वही सन्यास ले लिया और स्वामी जी के साथ बाद भारत लौटाएँ स्वामी जी

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

की मृत्यु के बाद उनके विचारों में परिवर्तन हुआ और इन्होंने विवाह करके गृहस्थ जीवन व्यतीत करना प्रारंभ कर दिया। इनको देहरादून के एक बहुत अच्छी यूनिवर्सिटी में अध्यापक पद पर सात सौ रूपए महीने की तनख्वाह मिलने लगी। यहीं से इनके नाम के आगे अध्यापक सब जुड़ गया यह स्वतंत्र प्रवृति के व्यक्ति थे इसलिए नौकरी को निभा नहीं सके और त्याग पत्र दे दिया। इसके बाद यह ग्वालियर चले गए। वहाँ उन्होंने सिखों के 10 गुरु और स्वामी रामतीर्थ की जीवनी अंग्रेजी में लिखी। ग्वालियर में इनका मन ना लगा तब यह पंजाब के एक गांव में खेती करने लगे खेती में हानि हुई और अर्थ संकट में पड़ कर नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटकने लगे। उनका संबंध क्रांतिकारियों से भी था अपने भारत के लिए इन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किए।

हिन्दी साहित्य की एक बड़ी प्रतिभा पूरी शक्ति से हिन्दी की सेवा नहीं कर सकी। सन् 25 मार्च 1931 इसी में उनकी मृत्यु हो गई। सरदारपुर के हिन्दी में कुछ है निबंध उपलब्ध है। 1 सच्ची वीरता 2 आचरण की सभ्यता 3मजदूरी और प्रेम 4 अमेरिका का मस्त योगी वॉल्ट हिटमैन 5 कन्यादान 6 पवित्रता इन्हीं निबंध के बल पर इन्होंने हिन्दी गध साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थाई स्थान बना लिया है।

हिन्दी में लिखे पूर्णसिंह के केवल छह निबंध ही मिलते हैं। वे हैं: सच्ची वीरता, कन्यादान, पवित्रता, आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम और अमरीका का मस्ताना योगी वाल्ट व्हिटमैन। ये निबंध सरस्वती में प्रकाशित हुए थे और इनके कारण ही सरदार पूर्णसिंह ने हिन्दी के निबंधकारों में अपना विशेष स्थान बना लिया है।

6.2.6 आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864–1938)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के महान साहित्यकार, पत्रकार एवं युग प्रवर्तक थे। उन्होंने हिन्दी साहित्य की अविस्मरणीय सेवा की और अपने युग की साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को दिशा और दृष्टि प्रदान की। उनके इस अतुलनीय योगदान के कारण आधुनिक हिन्दी साहित्य का दूसरा युग 'द्विवेदी युग' (1900–1920) के नाम से जाना जाता है। उन्होंने सत्रह वर्ष तक हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका सरस्वती का सम्पादन किया। हिन्दी नवजागरण में उनकी महान भूमिका रही। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन को गति व दिशा देने में भी उनका उल्लेखनीय योगदान रहा।

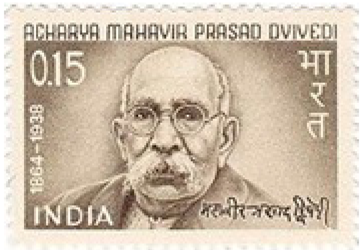

महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के (बैसवारा) रायबरेली जिले के दौलतपुर गाँव में 15 मई 1864 को हुआ था। इनके पिता का नाम पं. रामसहाय दुबे था। धनाभाव के कारण इनकी शिक्षा का क्रम अधिक समय तक न चल सका। इन्हें जी आई पी रेलवे में नौकरी मिल गई। 25 वर्ष की आयु में रेल विभाग अजमेर में 1 वर्ष का प्रवास। नौकरी छोड़कर पिता के पास मुंबई प्रस्थान एवं टेलीग्राफ का काम सीखकर इंडियन मिडलैंड रेलवे में तार बाबू के रूप में नियुक्ति। अपने उच्चाधिकारी से न पटने और स्वाभिमानी स्वभाव के कारण 1904 में झाँसी में रेल विभाग की 200 रुपये मासिक वेतन की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। नौकरी के साथ-साथ द्विवेदी अध्ययन में भी जुटे रहे और हिन्दी के अतिरिक्त मराठी, गुजराती, संस्कृत आदि का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया।

सन् 1903 में द्विवेदी जी ने सरस्वती मासिक पत्रिका के संपादन का कार्यभार सँभाला और उसे सत्रह वर्ष तक कुशलतापूर्वक निभाया। 1904 में नौकरी से त्यागपत्र देने के पश्चात स्थायी रूप से 'सरस्वती'के संपादन कार्य में लग गये। 200 रूपये मासिक की नौकरी को त्यागकर मात्र 20 रूपये प्रतिमास पर सरस्वती के सम्पादक के रूप में कार्य करना उनके त्याग का परिचायक है। संपादन-कार्य से अवकाश प्राप्त कर द्विवेदी जी अपने गाँव चले आए। अत्यधिक रुग्ण होने से 21 दिसम्बर 1938 को रायबरेली में इनका स्वर्गवास हो गया।

6.2.7 चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' (8 जुलाई 1883 - 12 सितम्बर 1922)

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' हिन्दी के कथाकार, व्यंगकार तथा निबन्धकार थे। अपने अध्ययन काल में ही उन्होंने सन् 1900 में जयपुर में नागरी मंच की स्थापना में योग दिया और सन् 1902 से मासिक पत्र 'समालोचक' के सम्पादन का भार भी सँभाला। प्रसंगवश कुछ वर्ष काशी की नागरी प्रचारिणी सभा के सम्पादक मंडल में भी उन्हें सम्मिलित किया गया। उन्होंने देवी प्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला और सूर्य कुमारी पुस्तकमाला का सम्पादन किया और नागरी प्रचारिणी पुस्तकमाला और सूर्य

कुमारी पुस्तकमाला का सम्पादन किया और नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति भी रहे।

जयपुर के राजपण्डित के कुल में जन्म लेनेवाले गुलेरी जी का राजवंशों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। वे पहले खेतड़ी नरेश जयसिंह के और फिर जयपुर राज्य के सामन्त-पुत्रों के अजमेर के मेयो कॉलेज में अध्ययन के दौरान उनके अभिभावक रहे। सन् 1916 में उन्होंने मेयो कॉलेज में ही संस्कृत विभाग के अध्यक्ष का पद सँभाला। सन् 1920 में पं. मदन मोहन मालवीय के प्रबंध आग्रह के कारण उन्होंने बनारस आकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राच्यविद्या विभाग के प्राचार्य और फिर 1922 में प्राचीन इतिहास और धर्म से सम्बद्ध मनीन्द्र चन्द्र नन्दी पीठ के प्रोफेसर का कार्यभार भी ग्रहण किया। सन् 1922 में 12 सितम्बर को पीलिया के बाद तेज ज्वर से मात्र 39 वर्ष की अल्पायु में उनका देहावसान हो गया।

निबंध-

- मारेसि मोहिं कुठाँव
- कछुआ-धरम

6.2.8 आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी (19 अगस्त 1907 - 19 मई 1979)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी निबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार थे। वे हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और बाङ्ला भाषाओं के विद्वान थे। भक्तिकालीन साहित्य का उन्हें अच्छा ज्ञान था। सन् 1957 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म श्रावण शुक्ल एकादशी संवत 1964 तदनुसार 19 अगस्त 1907 ई को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के आरत दुबे का छपरा, ओझवलिया नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता पं. अनमोल द्विवेदी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। द्विवेदी जी के बचपन का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी था।

द्विवेदी जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में ही हुई। उन्होंने 1920 में बसरिकापुर के मिडिल स्कूल से प्रथम श्रेणी में मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने गाँव के निकट ही पराशर ब्रह्मचर्य आश्रम में संस्कृत का अध्ययन आरम्भ किया। सन् 1923 में वे विद्याध्ययन के लिए काशी आये। 1929 में उन्होंने इंटरमीडिएट और संस्कृत साहित्य में शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1930 में ज्योतिष विषय में आचार्य की उपाधि प्राप्त की। शास्त्री तथा आचार्य दोनों ही परीक्षाओं में उन्हें प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई।

8 नवम्बर 1930 से द्विवेदीजी ने शांति निकेतन में हिन्दी का अध्यापन प्रारम्भ किया। वहाँ गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर तथा आचार्य क्षितिमोहन सेन के प्रभाव से साहित्य का गहन अध्ययन किया तथा अपना स्वतंत्र लेखन भी व्यवस्थित रूप से आरंभ किया। बीस वर्षों तक शांतिनिकेतन में अध्यापन के उपरान्त द्विवेदीजी ने जुलाई 1950 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर और अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। 1957 में राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किये गये।

प्रतिद्वन्द्वियों के विरोध के चलते मई 1960 में द्विवेदीजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिये गये। जुलाई 1960 से पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर और अध्यक्ष रहे। अक्टूबर 1967 में पुनः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष होकर लौटे। मार्च 1968 में विश्वविद्यालय के रेक्टर पद पर उनकी नियुक्ति हुई और 25 फरवरी 1970 को इस पद से मुक्त हुए। कुछ समय के लिए 'हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण' योजना के निदेशक भी बने। कालान्तर में उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के अध्यक्ष तथा 1972 से आजीवन उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के उपाध्यक्ष पद पर रहे। 1973 में 'आलोक पर्व' निबन्ध संग्रह के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

निबन्ध संग्रह

- अशोक के फूल (1948)
- कल्पलता (1951)
- मध्यकालीन धर्मसाधना (1952)
- विचार और वितर्क (1957)
- विचार- प्रवाह (1959)
- कुटज (1964)
- आलोक पर्व (1972)

6.2.9 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (11 अक्टूबर, 1884ईस्वी- 2 फरवरी, 1941ईस्वी)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी आलोचक, निबन्धकार, साहित्येतिहासकार, कोशकार, अनुवादक, कथाकार और कवि थे। उनके द्वारा लिखी गई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है 'हिन्दी

साहित्य का इतिहास', जिसके द्वारा आज भी काल निर्धारण एवं पाठ्यक्रम निर्माण में सहायता ली जाती है। हिन्दी में पाठ आधारित वैज्ञानिक आलोचना का सूत्रपात भी उन्हीं के द्वारा हुआ। हिन्दी निबन्ध के क्षेत्र में भी शुक्ल जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। भाव, मनोविकार सम्बंधित मनोविश्लेषणात्मक निबन्ध उनके प्रमुख हस्ताक्षर हैं। शुक्ल जी ने इतिहास लेखन में रचनाकार के जीवन और पाठ को समान महत्त्व दिया। उन्होंने प्रासंगिकता के दृष्टिकोण से साहित्यिक प्रत्ययों एवं रस आदि की पुर्नव्याख्या की।

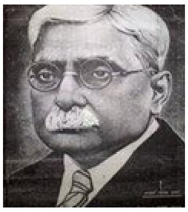

1903 से 1908 तक 'आनन्द कादम्बिनी' के सहायक संपादक का कार्य किया। 1904 से 1908 तक लंदन मिशन स्कूल में ड्राइंग के अध्यापक रहे। इसी समय से उनके लेख पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगे और धीरे-धीरे उनकी विद्वता का यश चारों ओर फैल गया। उनकी योग्यता से प्रभावित होकर 1908 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने उन्हें हिन्दी शब्दसागर के सहायक संपादक का कार्य-भार सौंपा जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक पूरा किया। श्यामसुन्दरदास के शब्दों में 'शब्दसागर की उपयोगिता और सर्वांगपूर्णता का अधिकांश श्रेय पं. रामचंद्र शुक्ल को प्राप्त है। वे नागरी प्रचारिणी पत्रिका के भी संपादक रहे। 1919 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुए जहाँ बाबू श्याम सुंदर दास की मृत्यु के बाद 1937 से जीवन के अंतिम काल (1941) तक विभागाध्यक्ष का पद सुशोभित किया। 2फरवरी, सन् 1941 का हृदय की गति रुक जाने से शुक्ल जी का देहांत हो गया।

शुक्ल जी के मनोविकार सम्बंधी निबन्ध परिणत प्रज्ञा की उपज हैं। इनमें भावों का मनोवैज्ञानिक रूप स्पष्ट किया गया है तथा मानव जीवन में उनकी आवश्यकता, मूल्य और महत्व का निर्धारण हुआ है। भावों के अनुरूप ही मनुष्य का आचरण ढलता है- इस दृष्टि से शुक्ल जी ने उनकी सामाजिक अर्थवत्ता का मनोयोगपूर्वक अनुसंधान किया। उन्होंने मनोविकारों के निषेध का उपदेश देनेवालों पर जबर्दस्त आक्रमण किया और मनोवेगों के परिष्कार पर जोर दिया। ये निबंध व्या वहाँरिक दृष्टि से पाठकों को अपने आपको और दूसरों को सही ढंग से समझने में मदद देते हैं तथा उन्हें सामाजिक दायित्व और मर्यादा का बोध कराते हैं। समाज का संगठन और उन्नयन करनेवाले आदर्शों में आस्था इन रचनाओं का मूल स्वर है। भावों को जीवन की परिचित स्थितियों से संबद्ध करके काव्य की दृष्टि से भी उनका प्रामाणिक निरूपण हुआ है।

6.2.10 महादेवी वर्मा (26 मार्च 1907 - 11 सितम्बर 1987)

महादेवी वर्मा छायावादी काव्य के प्रमुख कवयित्री थीं। वे छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं। उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें 'हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' भी कहा है। महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। उनकी काव्य रचनाँ सामाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे।

महादेवी वर्मा ने भारत की गुलामी और आज़ादी दोनों को ही देखा है तथा आजादी के पश्चात समाज सुधारक के रूप में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उन्होंने समाज में रहते हुये समाज में कष्टों से हाहाकार और रुदन को देखा है तथा उस भयंकर दुख तथा परिस्थितियों को अपने निबंध में अलंकृत किया है महादेवी वर्मा हिन्दी भाषा की एक महान निबंधकार के रूप में हमेशा जानी जाती रहेंगी। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।

निबंध:

- शृंखला की कड़ियाँ (1942),
- विवेचनात्मक गद्य (1942),
- साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962),
- संकल्पिता (1969)
- ललित निबंध:
- क्षणदा (1956)

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- हिन्दी के अधिकांश निबंधकार स्वतंत्र विचारों के थे।
- भारतीयों की दीन-दुखी दशा की और निबंधकारों का बहुत ध्यान था।

Critical Overview / अवलोकन

- हिन्दी साहित्य के निबंधकार नवजागरण के प्रेरक थे।
- सारे के सारे निबंधकार भारतीय समाज की विभिन्न

समस्याओं पर प्रकाश डाला। निबंध है।

- साहित्यिक आलोचना में सर्वाधिक प्रचलित शब्द

Recap / पुनरावृत्ति

- निबन्ध (Essay) गद्य लेखन की एक विधा है
- निबंध के पर्याय रूप में सन्दर्भ, रचना और प्रस्ताव का भी उल्लेख किया जाता है
- इसे अंग्रेजी के कम्पोज़ीशन और एस्से के अर्थ में ग्रहण किया जाता है
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार संस्कृत में भी निबंध का साहित्य है
- प्राचीन संस्कृत साहित्य के उन निबंधों में धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की तार्किक व्याख्या की जाती थी। उनमें व्यक्तित्व की विशेषता नहीं होती थी
- वर्तमान काल के निबंध संस्कृत के निबंधों से बिलकुल भिन्न है
- निबंध में व्यक्तित्व या वैयक्तिकता का गुण सर्व प्रधान है
- निबंध की विधा का संबंध इतिहास-बोध से है
- निबंध की प्रधान विशेषता व्यक्तित्व का प्रकाशन है
- निबंध, लेखक के व्यक्तित्व को प्रकाशित करने वाली ललित गद्य-रचना है
- निबंध का रूप साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा इतना स्वतंत्र है कि उसकी सटीक परिभाषा करना अत्यंत कठिन है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निबंध के अग्रेज़ी शब्द क्या है ?
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के दो निबंध संग्रहों का नाम लिखिए ।
3. प्रतापनारायण मिश्र के किसी दो निबंध संग्रहों का नाम लिखिए ।
4. 'साहित्य सुमन' किसका निबंध संग्रह का नाम है?
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित निबंध कौन-सा है?
6. 'शृंखला की कड़ियाँ' किसका निबंध है ?
7. महादेवी वर्मा के ललित निबंध का नाम क्या है?
8. 'मारेसि मोहिं कुठाँव' किसका निबंध है?

Answers उत्तर

1. इसे अंग्रेजी के कम्पोज़ीशन और एस्से के अर्थ में ग्रहण किया जाता है।
2. विचार बीथि और चिंतामणि आचार्य रामचंद्र शुक्ल के दो महान निबंध संग्रह है।
3. निबंध नवनीत, प्रताप पीयूष, प्रताप समीक्षा ।
4. बालकृष्ण भट्ट
5. 'आलोक पर्व'

6. महादेवी वर्मा
7. क्षणदा
8. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

Assignments प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी साहित्य के निबंधकार नवजागरण-कर्ता थे, स्पष्ट कीजिये।
2. निबंधकार अपने निबंधों में सन्दर्भ, रचना और प्रस्ताव का भी उल्लेख किया जाता है।
3. निबंधकार का संबंध इतिहास-बोध से है, स्पष्ट कीजिए।
4. निबंध में व्यक्तित्व या वैयक्तिकता का गुण सर्व प्रधान है, समझाईए।
5. साहित्यिक आलोचना में सर्वाधिक प्रचलित शब्द निबंध है, व्यक्त कीजिए।

इकाई : 3

अन्य गद्य विधाओं का उद्भव और विकास(1942 तक)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाओं के आविर्भाव के बारे में परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य की विविध विधाओं के विकास से परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य की विविध विधाओं में निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, एकांकी, व्यंग्य आदि से परिचय प्राप्त करता है।
- गद्य साहित्य के प्रमुख निबंधकार, संस्मरण लेखक, रेखाचित्रकार, एकांकीकार और व्यंग्यकार आदि के स्थान तथा रचनाओं से परिचय प्राप्त करता है।

Prerequisites / पूर्वापेक्षा

गद्य साहित्य की विविध विधाओं में निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, एकांकी व्यंग्य आदि प्रमुख है। गद्य साहित्य के प्रमुख निबंधकार, संस्मरण लेखक, रेखाचित्रकार, एकांकीकार और व्यंग्यकार अपनी रचनाओं से इन सभी गद्य विधाओं को जीवन प्रधान किया है। महादेवी वर्मा विख्यात रेखा चित्रकार है। हरिशंकर परसाई परसाई, शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, विष्णु नागर आदि प्रमुख व्यंग्याकार हैं। राजेन्द्र यादव, शिवदान सिंह चौहान, पद्मसिंह शर्मा कमलेश आदि हिन्दी भेंटवार्ता लेखकों में प्रमुख हैं। धर्मवीर भारती, विष्णु प्रभाकर, निर्मल वर्मा आदि हिन्दी के प्रमुख रिपोर्ताजकार है।

Key Themes / मुख्य प्रसंग

- अंग्रेज़ी के Memoirs को हिन्दी में संस्मरण कहते हैं।
- अंग्रेजी के Sketch को हिन्दी में रेखाचित्र कहते हैं।
- हिन्दी के पहला रेखाचित्र पद्मसिंह शर्मा 1929 में रचित पद्मपराग है।
- व्यंग्य आधुनिक साहित्य की एक मुख्य विधा है।
- जीवनी को अंग्रेज़ी में Biography कहते हैं।
- किसी व्यक्ति के जीवन वृत्तांत को जीवनी कहते हैं।
- 'आवारा मसीहा' विष्णु प्रभाकर रचित विख्यात जीवनी है।
- आत्मकथा को अंग्रेज़ी में Autobiography कहते हैं।
- आत्मकथा का सबसे बड़ा गुण ईमानदारी है।
- यात्रावृत्त या यात्रा वृत्तांत को अंग्रेजी में Travelogue कहते हैं।
- किसी यात्रा के पश्चात आकर्षक भाषा-शैली में लिखे जाने वाले प्रामाणिक रचना को यात्रा वृत्त कहते हैं।
- रिपोर्ताज को अंग्रेजी में Report कहते हैं।
- रिपोर्ताज गद्य की आधुनिक विधा है।
- भेंटवार्ता या साक्षात्कार को अंग्रेज़ी में इण्टरव्यू कहते हैं।
- भेंटवार्ता पत्रकारिता से संबंधित साहित्य विधा है।

- प्रतिदिन की घटनाएँ तिथि के अनुसार लिखने को डायरी लेखन कहते हैं।
- गाँधीजी की डायरी हिन्दी की सर्व प्रथम प्रौढ़-गंभीर डायरी है।
- पत्र को अंग्रेजी में Letter कहते हैं।
- पत्र लेखन दो व्यक्तियों के बीच चलते हैं।
- किसी साहित्यिक रचना को पढ़कर उसका मूल्यांकन करना साहित्य में आलोचना कहते हैं।
- आचार्य शुक्ल का चिंतामणि हिन्दी के श्रेष्ठ आलोचना ग्रंथों में एक है।

Discussion / चर्चा

6.3.1. संस्मरण

संस्मरण को अंग्रेज़ी में Memoirs कहते हैं। संस्मरण सम् अ स्मरण, दो शब्दों के योग से बनने वाला शब्द है, जिसका अर्थ होता है - सम्यक स्मरण। इसमें व्यक्ति का महत्व गौण होता है वस्तु की घटना का महत्व मुख्य होता है। तात्पर्य यह है कि संस्मरण में लेखक की कल्पना का कोई महत्व नहीं है।

परिभाषा

किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना का स्मृति के आधार पर कलात्मक साहित्यिक वर्णन को संस्मरण कहते हैं। संस्मरण एक विशेष प्रकार की स्मृति होती है। जिस स्मृति का आविष्कार करता है उसकी तीव्रता के अनुसार संस्मरण अच्छा या बुरा बन सकता है। संस्मरणकार भूतकाल काल एवं वर्तमान काल के बीच के पुल जैसे रहते हैं। अथवा लेखक वर्तमान काल में बैठकर भूतकाल के बारे में लिखते हैं। हम मनुष्य के ऐसे कुछ बीते क्षण, घंटे, दिन होते थे जिसके अनुभव वर्तमान काल के जीवन में हमारे साथ जीवित हैं।

हिन्दी के सर्व प्रथम संस्मरण

संस्मरणकार बीते समय के कुछ आत्मीय क्षणों को अपनी भाषा एवं शैली में साहित्यिक ढाँचा प्रदान कर देता है। जिसमें कभी कुछ व्यक्ति होते हैं, कभी कुछ घटना या संदर्भ। हिन्दी के सर्व प्रथम संस्मरण सन् 1929 में पद्मसिंह शर्मा के पद्मराग माना जाता हैं।

संस्मरण और रेखाचित्र, दोनों में कम अंतर होता है। संस्मरण एक विवरणात्मक साहित्य विधा है तो रेखाचित्र रेखा मात्र या विवरण रहित साहित्य विधा है। संस्मरण और रेखाचित्र के बारे में पद्मसिंह शर्मा का मत उल्लेखनीय है – प्रायः प्रत्येक संस्मरण लेखक रेखाचित्र लेखक भी है और प्रत्येक रेखाचित्र लेखक संस्मरण लेखक भी है।

संस्मरण की विशेषताएँ

संस्मरणकार जीवन के विशेष प्रसंगों और अनुभवों का उल्लेख करता है। संस्मरण अवास्तविक या काल्पनिक न होकर यथार्थ पर अधिष्ठित होना आवश्यक है। संस्मरण मर्मस्पर्शी स्मृति पर अधिष्ठित होना चाहिए। इसकी भाषा ह्मदय को छूने वाली हो जाय। लेखक का स्मरण क्रमबद्ध होना अनिवार्य है। संस्मरणकार की याद सीधे-सादे, भली-भाँति का न होता तो रचना निरर्थक बन जाता है। इस प्रकार हिन्दी में संस्मरण साहित्य सजीव है।

6.3.2 रेखाचित्र

अंग्रेजी के Sketch को हिन्दी में रेखाचित्र कहते हैं। रेखाचित्र, रेखा और चित्र, दो शब्दों के मेल से बना शब्द है। जिसका अर्थ है रेखाएँ द्वारा बनाने वाला चित्र। इसमें लेखक शब्दों द्वारा आकर्षक रचना करते हैं। रेखाचित्र शब्दों द्वारा बनाने वाला होने से इसे शब्द चित्र भी कहते हैं। चित्रकला में रेखा का जो महत्व होता है, वही महत्व शब्द चित्र (रेखाचित्र) में शब्द को होता है।

परिभाषा और विशेषता

रेखाचित्र आधुनिक गद्य विधा है। किसी सत्य पर आधारित घटना की वस्तु अथवा व्यक्ति का चित्रात्मक भाषा में करने वाले वर्णन को रेखाचित्र कहते हैं। हिन्दी साहित्य कोश ग्रंथ में रेखाचित्र की परिभाषा इस प्रकार दिया है- रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है। चित्रकला में रेखाओं द्वारा रेखाचित्र बनाते है तो साहित्य में शब्दों-वाक्यों द्वारा चित्र जैसा खींच देता है।

विख्यात रेखा चित्रकार महादेवी वर्मा व्यक्त करते है कि चित्रकार अपने सामने रखी वस्तु या व्यक्ति या रंगहीन चित्र जब कुछ रेखाओं में इस प्रकार आंक देता है कि उसकी विशेष मुद्रा पहचानी जा सके, तब उसे हम रेखाचित्र की संज्ञा देते हैं।

रेखाचित्र संस्मरण के सबसे नज़दीक रहने वाला साहित्य विधा है। साहित्य में रेखा चित्रकार शब्दों के माध्यम से व्यक्ति का पूर्ण चित्र उद्घाटित करता है। रेखाचित्र कथात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, सम्बोधनात्मक शैली, संवादात्मक शैली के होते हैं। रेखाचित्र में लेखक की प्रतिभा और उनके सूक्ष्म निरीक्षण का चित्रण होता है। रेखाचित्र में लेखक शब्दों को रेखाएँ मानकर चित्र रचना करता है। अध्ययन के समय पाठक अपनी इच्छा के अनुरूप उसमें रंग डाल देता हैं।

हिन्दी का पहला रेखाचित्र पद्मसिंह शर्मा कृत पद्मपराग (1929) माना जाता है। इसके पश्चात कई लेखक हिन्दी रेखाचित्र को उत्तरोत्तर विकसित किया है। श्रीराम शर्मा (सन् 1937) में कृत बोलती प्रतिमा, प्रकाशचंद्र गुप्त (1940 में) कृत शब्दचित्र एवं रेखाचित्र, महादेवी वर्मा (1941 में) कृत अतीत के चलचित्र (1947 में) कृत स्मृति की रेखाएँ, रामवृक्ष बेनीपुरी (1946 में कृत) माटी की मूरतें (1950 में) कृत गेहूँ और गुलाब के फूल, देवेंद्र सत्यार्थी (1949) कृत रेखाएँ बोल उठी, बनारसीदास चतुर्वेदी (1952) कृत रेखाचित्र, उपेंद्रनाथ अश्क (1955) कृत रेखाएँ और चित्र, सेठ गोविंददास (1959) कृत स्मृति कण, जगदीश चन्द्र माथुर (1963) कृत दस तस्वीरें, शिवपूजन सहाय (1965) कृत वे दिन वे लोग, विष्णु प्रभाकर (1965) कृत कुछ शब्द-कुछ रेखाएँ, कृष्णा सोबती (1977) कृत हम हशमत, रामविलास शर्मा (1985) कृत विराम चिह्न आदि उल्लेखनीय रेखाचित्र है।

6.3.3 हिन्दी में व्यंग्य

व्यंग्य आधुनिक साहित्य की एक मुख्य विधा है। गद्य साहित्य के आरंभ से करीब भारतीय आज़ादी काल तक व्यंग्य को एक स्वतंत्र साहित्य विधा के रूप में न माना था। स्वातंन्त्र्योत्तर काल में हिन्दी में व्यंग्य साहित्य को स्वतंत्र अस्तित्व मिला है।

व्यंग्य की परिभाषा

विद्वानों ने व्यंग्य की परिभाषा अलग-अलग रूप में किया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने व्यंग्य की परिभाषा देते हुए कहा है कि - व्यंग्य वह है, जहाँ अधरोष्ठों में हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो और फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बनाना हो जाता है।

सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को जीवन का साक्षात्कार माना है। नरेन्द्र कोहली ने विसंगति से उत्पन्न आक्रोश को व्यंग्य कहा है। श्रीलाल शुक्ल ने व्यंग्य को आधुनिक जीवन और आधुनिक लेखन के एक अभिन्न अस्त्र और एक अनिवार्य शर्त के रूप में देखा है। आलोचक डॉ. रामकुमार वर्मा ने व्यंग्य की परिभाषा इस प्रकार दिया है - आक्रमण करने की दृष्टि से वस्तुस्थिति को विकृत कर, उससे हास्य उत्पन्न करना ही व्यंग्य है।

विशेषताएँ

व्यंग्यकार का मुख्य विषय समाज के अलग-अलग विसंगतियाँ एवं कमजोरियाँ हैं। विसंगतियों एवं कमजोरियों के बिना व्यंग्य की कल्पना करना संभव नहीं है। विसंगति को व्यंग्य की आत्मा कह सकते हैं। व्यंग्यकार नकारात्मक बात को सकारात्मक सोचकर प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। व्यंग्यकार का दृष्टिकोण हर वक्त प्रगतिशील रहता है। समाज के हरेक बात पर व्यंग्यकार दृष्टि डालता है, कोई भी उनसे छूट ता नहीं है। व्यंग्यकार का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों की रक्षा करना हो है। गहन चिंतन से व्यंग्य जन्म लेता है। व्यंग्यकार की चिंतन सीमित होती है तो रचना सफल नहीं बन पाती। अर्थात गंभीर सोच-विचार द्वारा उत्तम व्यंग्य की सृष्टि होती।

व्यंग्य की भाषा साधारण नहीं होता है। उसकी अपार प्रहार क्षमता होती है। व्यंग्य की भाषा एक समय दो काम के निर्वाह करती हैं। पहला यह है कि पाठक को रस प्रदान करता है, दूसरा विसंगति व बुराई के विरुद्ध जबरदस्त आक्रोश। व्यंग्य का अस्तित्व बुराइयों की आलोचना पर अधिष्ठित है। आलोचना जितना तीव्र होता, व्यंग्य का उद्देश्य उतना निकट आता है।

आरंभिक काल में हिन्दी में भारतेंदु हरिश्चंद्र व्यंग्य लेखन का नेतृत्व दे दिया था। स्वतंत्र रूप में न होकर भी उनके अंधेर नगरी में व्यंग्य का अच्छा पुट मिलता है। द्विवेदी युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, ठाकुर प्रसाद सिंह, निराला आदि के नाम उल्लेखनीय है। हरिशंकर परसाई परसाई, शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, विष्णु नागर, प्रेम जन्मेजय, ज्ञान चतुर्वेदी, सूर्यकांत व्यास, शरद जोशी, आलोक पुराणिक, सुरेश आचार्य, ज्ञान चतुर्वेदी, विवेक रंजन श्रीवास्तव आदि हिन्दी के उल्लेखनीय व्यंग्यकार है।

6.3.4 जीवनी

जीवनी गद्य की एक सशक्त विधा है। कुछ लोगों की गलत धारणा है कि जीवनी और आत्मकथा एक है। सच में जीवनी और आत्मकथा में अंतर है। जीवनी को अंग्रेज़ी में Biography

कहते हैं। जीवनी एक व्यक्ति के बार में दूसरा लिखता तो आत्मकथा लेखक अपने आप लिखते हैं। आत्मकथा संस्मरण (memoir) से मिलती जुलती होकर भी एक स्वतंत्र साहित्य विधा है।

परिभाषा

किसी भी व्यक्ति द्वारा लिखने वाले जीवन वृत्तांत को जीवनी कहते हैं। जीवनी किसी व्यक्ति के बारे में लिखी जाती हैं। उदाहरणार्थ सत्य के प्रयोग गाँधीजी की आत्मकथा है। क्योंकि उन्होंने अपने आप लिखी है। लेकिन गाँधीजी के जीवन से संबंधित कई ग्रंथ हुए हैं, यह जीवनी के कोटि में आती हैं। गुलाबराय के मत में जीवनी एक मनुष्य के अंतर और बाहर स्वरूप का कलात्मक निरूपण है।

सन् 1588 में नाभादास कृत भक्तमाल को हिन्दी की प्रथम जीवनी मानी जाती है। इसके बाद समय-समय पर अनेक महत्वपूर्ण जीवनियों की रचना हुई, जिनमें महात्मा गाँधी, नेहरु, सुभाषचंद्र बोस आदि के जीवन से संबंधित उल्लेखनीय है। साहित्यिक चरित्रों पर आधारित जीवनी में प्रेमचन्द के पुत्र अमृतराय, प्रेमचन्द के बारे में लिखी गयी कलम का सिपाही, विष्णु प्रभाकर बंगला लेखक शरद चन्द्र चटर्जी के बारे में लिखी गयी आवारा मसीहा, विख्यात लेखक कमलेश्वर के बारे में उनकी पत्नी गायत्री कमलेश्वर सन् 2005 में लिखी गयी मेरे हम सफर आदि विशेष उल्लेखनीय जीवनी है।

6.3.5 आत्मकथा

आत्मकथा हिन्दी की नव विकसित साहित्य विधा है। हिन्दी की आत्मकथा को अंग्रेज़ी में Autobiography कहते हैं। आत्मकथा वास्तविक जीवन पर अधिष्ठित साहित्य है। आत्मकथा का सबसे बड़ा गुण ईमानदारी है। सत्यता उसका मूलाधार है। आत्मकथाकार का मुख्य उद्देश्य अपने मन-मस्तिष्क पर संचित अपने विशेष बातों को समाज को परिचय कराना होता है। पहले कह चुका है कि आत्मकथा व्यक्ति अपने आप लिखने वाला साहित्य विधा है। एक आदमी आत्मकथा लिखते समय वह बीती हुई जीवन को दोबारा जीता है। आत्मकथा व्यक्ति अधिष्ठित साहित्य सृष्टि है। इसके लेखक ही उसके कर्ता, भोक्ता और व्याख्याता होता है।

हिन्दी साहित्य कोश में आत्मकथा की परिभाषा इस प्रकार दिया है - आत्मकथा लेखक के अपने जीवन का संबंध वर्णन है। इसमें लेखक के जीवन के महत्वपूर्ण संदर्भों का चित्रण होता है। आत्मकथा विशिष्ट प्रकार का आत्मावलोकन है।

विशेषता

आत्मकथा वर्णन प्रधान है। यह पूर्णतः सच पर आधारित होना चाहिए। विषय असत्य व अर्ध सत्य होता है तो रचना का उद्देश्य व्यर्थ हो जाता है। दूसरी विशेषता यह है कि आत्मकथा सुनी-सुनाई बातों के अनुसार न लिख जाये। तीसरी, आत्मकथा में स्मृति सुदृढ़ होनी चाहिए। चौथा, आत्मकथा वैयक्तिक होने के समान सौ प्रतिशत मौलिक भी होनी चाहिए। पाँचवाँ, आत्मकथा में चित्रित बातें स्वाभाविक होनी चाहिए। छठा, आत्मकथा, पाठक के मन में कौतूहल और जिज्ञासा पैदा करें। सातवाँ, रचना शैली रोचक एवं प्रभावपूर्ण होनी चाहिए। आठवाँ, आत्मकथा में घटनाएँ एकसूत्र पर ले जानी चाहिए।

आत्मकथा विविध उद्देश्य का निर्वाह करती हैं। इसमें मुख्य है- लेखक का आत्म प्रकाशन, अनुभवों की अभिव्यक्ति, आत्मदोष निकालना, प्रायश्चित, आत्मविश्लेषण, पाठकों में विचारों और भावनाओं को पैदा करना, लोकोपकार भावना पैदा करना आदि इसका उद्देश्य है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार हिन्दी की प्रथम आत्मकथा बनारसीदास जैन सन् 1641 कृत अद्धर्कथानक मानी जाता है। इसके बाद गाँधीजी के सत्य के प्रयोग (1923), सुभाषचंद्र बोस (सन् 1935 में) कृत तरुण के स्वप्न, श्याम सुंदर दास (1941) कृत मेरी आत्म कहानी, हरिभाऊ उपाध्याय (1946) कृत साधना के पथ पर, राहुल सांकृत्यायन (1946) कृत मेरी जीवन यात्रा, राजेन्द्र प्रसाद(1947) कृत आत्मकथा, यशपाल (1951) कृत सिंहावलोकन, चतुर्सेन शास्त्री (1956) कृत यादों की परछाइयाँ, उग्र (1960) कृत अपनी खबर, सुमित्रानंदन पंत (1963) कृत साठ वर्ष एक रेखांकन, हरिवंश राय बच्चन (1969) कृत क्या भूलूँ क्या याद करूँ, रामविलास शर्मा (1983) कृत घर की बात, नगेन्द्र (1988) कृत अर्ध कथा, कमलेश्वर (1992) कृत जो मैंने जिया, रवीन्द्र कालिया (2000) कृत गालिब छुटी शराब, भीष्म साहनी (2003) कृत आज के अतीत, नरेन्द्र मोहन (2013) कृत करबद्ध निन्दर आदि हिन्दी की उल्लेखनीय आत्मकथाएँ है। हिन्दी की आत्मकथा विधा अजस्र प्रवहमान है।

6.3.6 यात्रा वृत्तांत

यात्रा वृत्तांत समकालीन साहित्य की नवीन विधा है। यात्रावृत्त या वृत्तांत को अंग्रेजी में Travelogue कहते हैं। इसका प्रारम्भ आधुनिक काल में हुआ है। किसी यात्रा के पश्चात लेखक आकर्षक भाषा और शैली में लिखी जाने वाली प्रामाणिक रचना को यात्रावृत्त कहते हैं। यात्रा करना मानव की

मूल प्रवृत्ति हैं। मनुष्य निरंतर घूम फिरकर रहना चाहते हैं। यात्रावृत्त में यायावर अपने अनुभवों, सौंदर्यबोधों का प्रकाशन करते हैं।

हिन्दी गद्य के आरंभ काल में भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने कविवचन सुधा पत्रिका में कई यात्रा विवरण लिखे है। जिनमें सरयू पार की यात्रा, लखनऊ की यात्रा और हरिद्वार की यात्रा आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

बालकृष्ण भट्ट, श्रीमती हरदेवी, भगवानदास वर्मा, स्वामी मंगलानन्द,श्रीधर पाठक, उमा नेहरु, लोचन प्रसाद पाण्डेय, देवी प्रसाद खत्री, गोपालराम गहमरी, गदाधर सिंह, स्वामी सत्यदेव, राहुल सांकृत्यायन, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, रामधारीसिंह दिनकर, अज्ञेय, देवेन्द्र सत्यार्थी, नगेन्द्र, यशपाल, विनय मोहन शर्मा आदि हिन्दी के प्रमुख यात्रा वृत्तांतकार है। अज्ञेय का एक बूँद सहसा उछली, निर्मल वर्मा कृत चीड़ों पर चाँदनी जैसे उच्च कोटि के यात्रावृत्तांत हिन्दी में उपलब्ध है।

6.3.7 रिपोर्ताज

रिपोर्ताज शब्द का अर्थ होता है सरस और भावात्मक अंकन। रिपोर्ताज को अंग्रेज़ी में Report कहते है।

परिभाषा

किसी परिपाटी, घटना, संस्था आदि की कलात्मक रीति में तैयार करने वाले विवरण को रिपोर्ताज कहते हैं। रिपोर्ताज गद्य की आधुनिक विधा है। हिन्दी में कई महान रिपोर्ताजकार है।

धर्मवीर भारती, प्रकाशचन्द्र गुप्त, उपेन्द्रनाथ अश्क, रामनारायण उपाध्याय, विष्णुकान्त शास्त्री, उदयन शर्मा, लक्ष्मीकान्त वर्मा, अमृतराय, निर्मल वर्मा, जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, विष्णु प्रभाकर, कुबेरनाथ राय, प्रभाकर माचवे, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, अमृतराय, रांगेय राघव, प्रकाश चन्द्र गुप्त आदि रिपोर्ताजकार के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

6.3.8 भेंटवार्ता

भेंटवार्ता को साक्षात्कार भी कहते हैं। अंग्रेज़ी में यह इण्टरव्यू नाम से जाने जाते हैं। यह मुख्य रूप में पत्रकारिता से संबंधित विधा है। हिन्दी में भेंटवार्ता का विकास आधुनिक काल में हुआ है। किसी महान व्यक्ति के पास रहकर प्रश्नों के द्वारा उनके जीवन, आदर्श, दृष्टिकोण, व्य वहाँर आदि समझकर भेंटवार्ता तैयार की जाती है। हम जिस व्यक्ति को नजदीक से जानना चाहते हैं, उनके निकट की बातें समझने के लिए भेंटवार्ता सहायक हो जाती हैं। आजकल भेंटवार्ता सबसे से ज्यादा ट ेलीविज़न में देखने को मिलती हैं। भेंटवार्ता आजकल परिचर्चा के माध्यम से विकास- प्राप्त हैं। राजेन्द्र यादव, शिवदान सिंह चौहान, पद्मसिंह शर्मा कमलेश आदि हिन्दी भेंटवार्ता लेखकों में प्रमुख है।

6.3.9 डायरी

डायरी लेखन गद्य साहित्य की एक विशेष विधा है। प्रतिदिन की घटनाएँ तिथि के अनुसार लिखने को डायरी लेखन कहते हैं। प्रतिदिन जीवन में घटित घटनाएँ डायरी की विषय-वस्तु बन जाती हैं। लेखक उसका क्रमिक वर्णन करता है। डायरी लेखन में कल्पना का कोई स्थान नहीं है। दैनिक जीवन में जो घटि त हो, उसे वैसे लिख सकते हैं। तात्पर्य यह है कि अवास्तविक बातों को डायरी में तनिक भी स्थान न दें। गाँधीजी द्वारा लिखी गयी डायरी हिन्दी की सर्व प्रथम प्रौढ़-गंभीर डायरी मानी जाती है। हिन्दी की डायरी लेखन में रामधारी सिंह दिनकर, धीरेन्द्र वर्मा, शमशेर बहादुर सिंह, मोहन राकेश आदि के नाम उल्लेखनीय है।

6.3.10 पत्र साहित्य

पत्र को अंग्रेजी में Letter कहते हैं। पत्र-लेखन पूर्ण रूप में वैयक्तिक है। सहजता एवं सरलता पत्र लेखन का सबसे बड़ा गुण होना चाहिए। पत्र के हर शब्दों में उसके लेखक का व्यक्तित्व देखने को मिलता है। पत्र आत्म प्रकाशन का महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है। पत्र लेखन दो व्यक्तियों के बीच चलते हैं। इसलिए पत्र-लेखक अपने पत्र पढ़ने वाले को ध्यान में रखकर पत्र लिखना चाहिए। कुछ पत्र समाज एवं व्यक्ति के लिए अत्यंत लाभदायक होता है। गांधीजी समय-समय पर लिखे गए पत्र, नेहरु अपनी बेटी इंदिरा गांधी को लिखा गया पत्र (पिता के पत्र पुत्री के नाम) आदि साहित्यिक एवं सामाजिक दृष्टि में उच्च स्थान पर विराजते हैं।

बालमुकुन्द गुप्त के भारत मित्र पत्रिका में प्रकाशित शिव शम्भु के चिठे, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक चाँद पत्रिका में प्रकाशित दुबे जी की चिट्ठी, महावीर प्रसाद द्विवेदी का पत्रावली, प्रेमचन्द का चिट्ठी-पत्री, निराला के निराला की साहित्य साधना, बनारसीदास चतुर्वेदी संपादित पद्मसिंह शर्मा के पत्र आदि हिन्दी के उल्लेखनीय पत्रों में कुछ है।

6.3.11 आलोचना

आलोचना या समीक्षा आधुनिक साहित्य विधा है। किसी साहित्यिक कृति या रचना को भली-भाँति पढ़कर उसका मूल्यांकन करने को साहित्य में आलोचना कहती हैं। साहित्य

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

जीवन की व्याख्या है। आलोचना साहित्य की व्याख्या है। आलोचना वास्तव में साहित्य कृति और पाठक के बीच का पुल है। आलोचना करने वाले को आलोचक कहते हैं। आलोचक का कर्तव्य किसी पक्षपात के बिना रचना का मूल्यांकन करना होता है। जिससे रचना की अच्छाई-बुराई से पाठक को सही जानकारी प्राप्त होती हैं।

हिन्दी में आलोचना का विकास भारतेन्दु युग में हुआ है। किन्तु इसकी पूरी अभिवृद्धि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा हुई है। रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ आलोचक है। उनके चिंतामणि के समकक्ष रचना दुर्लभ है। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, गुलाबराय, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, नन्ददुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र, ज्ञानचन्द्र गुप्त, शिवकुमार मिश्र, श्रीराम त्रिपाठी जैसे अनेक महान आलोचकों की रचनाओं द्वारा आज आलोचना-क्षेत्र संपन्न है।

चर्चा के मुख्य बिन्दु

- हिन्दी में आलोचना, संस्मरण, रेखाचित्र, व्यंग्य आदि के विकास ।
- हिन्दी में यात्रा वृत्तांत, भेंटवार्ता, पत्र साहित्य, डायरी, जीवनी आदि के विकास ।

Critical Overview / अवलोकन

- हिन्दी साहित्य में कई प्रकार की साहित्यिक विधाएँ हैं जो जीवन की व्याख्या करने में हमेशा तत्पर रहती है।
- उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध, आलोचना आदि आरंभ काल की गद्य विधाएँ है।
- आत्मकथा का सबसे बड़ा गुण ईमानदारी है।
- शुक्लोत्तर युग में भेंटवार्ता, विद्रूप लेखन जैसी गद्य विधा विकसित हो गयी ।

Recap / पुनरावृत्ति

- गद्य कई प्रकार के होते हैं। जिनमें कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, आलोचना, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, व्यंग्य, यात्रा वृत्तांत, डायरी, आलोचना, भेंटवार्ता आदि मुख्य है
- साहित्य के विकास के साथ समय-समय पर संस्मरण, रेखाचित्र, व्यंग्य, यात्रा वृत्तांत, डायरी, भेंटवार्ता, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज, गद्य काव्य, भेंट, पत्र साहित्य आदि विधा गद्य क्षेत्र में शामिल हो गये
- व्यंग्य, आत्मकथा, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र साहित्य, भेंट वार्ता आदि के विकास द्विवेदी युग एवं शुक्ल युग में हुआ शुक्लोत्तर युग में भेंटवार्ता, विद्रूप लेखन जैसी गद्य विधा विकसित हो गयी
- उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध और आलोचना जैसी आरंभिक गद्य विधाएँ अपने आप में एक-दूसरे से स्वतंत्र अस्तित्व रखती हैं
- हिन्दी के पहला संस्मरण 1929 में पद्मसिंह शर्मा लिखा गया पद्मराग माना जाता हैं
- संस्मरण और रेखाचित्र, दोनों में बड़ा अंतर नहीं है
- रेखाचित्र का अर्थ होता है - रेखाएँ द्वारा बनाने वाला चित्र
- रामवृक्ष बेनीपुरी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ रेखा चित्रकार हैं
- सन् 1588 में नाभादास कृत भक्तमाल हिन्दी की पहली जीवनी है
- अमृतराय अपने पिता प्रेमचन्द के बारे में कृत 'कलम का सिपाही' प्रसिद्ध जीवनी है
- कमलेश्वर के बारे में उनकी पत्नी गायत्री कमलेश्वर लिखी 'मेरे हम सफर' उल्लेखनीय जीवनी है
- सत्यता आत्मकथा का मूलाधार है

Objective questions वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अंग्रेज़ी के Memoirs को हिन्दी में क्या कहते हैं?
2. रेखाचित्र को अंग्रेजी में क्या कहते है?
3. हरिशंकर परसाई मुख्य रूप में किस विधा के लेखक है?
4. हिन्दी के दो प्रमुख व्यंग्यकारों के नाम बताइए ।
5. अंग्रेज़ी के Biography को हिन्दी में क्या कहते हैं?
6. कलम का सिपाही किनके बारे में लिखी जीवनी है, लेखक कौन है?
7. आवारा मसीहा का रचनाकार कौन है?
8. आत्मकथा को अंग्रेज़ी में क्या कहते हैं?
9. हिन्दी के रिपोर्ताज को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?
10. अंग्रेज़ी की इण्टरव्यू का हिन्दी शब्द क्या है?

Answers उत्तर

1. संस्मरण को अंग्रेज़ी में Memoirs कहते हैं।
2. अंग्रेजी के Sketch को हिन्दी में रेखाचित्र कहते हैं।
3. हरिशंकर परसाई मुख्य रूप में व्यंग्य विधा के लेखक है।
4. हरिशंकर परसाई परसाई, शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, विष्णु नागर, प्रेम जन्मेजय, ज्ञान चतुर्वेदी, सूर्यकांत व्यास, शरद जोशी, आलोक पुराणिक, सुरेश आचार्य, ज्ञान चतुर्वेदी, विवेक रंजन श्रीवास्तव आदि हिन्दी के उल्लेखनीय व्यंग्यकार है।
5. अंग्रेज़ी के Biography को हिन्दी में जीवनी कहता है।
6. प्रेमचन्द के पुत्र अमृतराय, प्रेमचन्द के बारे में लिखी गयी जीवनी है 'कलम का सिपाही'।
7. विष्णु प्रभाकर
8. Autobiography
9. रिपोर्ताज को अंग्रेज़ी में Report कहते है।
10. अंग्रेज़ी की इण्टरव्यू को हिन्दी में भेंटवार्ता या साक्षात्कार कहते हैं।

Assignments प्रदत्त कार्य

1. व्यंग्य, रेखाचित्र, जीवनी, संस्मरण पर टिप्पणी लिखिए।
2. अपने विश्वविद्यालय के उपकुलपति के साथ एक भेंटवार्ता तैयार कीजिए ।
3. हिन्दी में आलोचना का विकास भारतेन्दु युग में हुआ है, स्पष्ट कीजिए ।
4. डायरी लेखन गद्य साहित्य की एक विशेष विधा है , आपका मत व्यक्त कीजिए।
5. आत्मकथा विविध उद्देश्य का निर्वाह करती हैं, समझाईए ।

Reference सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास -डॉ. नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास - हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.कपूर टंडन ।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ.नगेन्द्र ।
6. हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास - डॉ.रमेशचंद्र शर्मा ।
7. हिन्दी का हास्य - ज्ञान प्रकाश शर्मा ।
8. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य - हरिशंकर दुबे ।

SGOU

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

SGOU

हिन्दी साहित्य का इतिहास 1942 तक

COURSE CODE: B21HD02DC

SGOU

YouTube

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841

ISBN 978-81-962656-3-2